राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

RNI.No. UPHIN/2019/79073

स्वतंत्र प्रभात

जो लिखेगा, वही टिकेगा

स्वतंत्र प्रभात दैनिक अख़बार तथा ऑनलाइन चैनल से सीधा जुड़ने के लिए संपर्क करे
9511151254

@swatantraprabhatmedia | @swatantramedia | 9511151254 | epaper.swatantraprabhat.com | @SwatantraPrabhatonline | news@swatantraprabhat.com

लखनऊ से प्रकाशित एंव अयोध्या ,प्रयागराज ,मिर्जापर ,गोरखपुर , बरेली ,बुंदेलखंड , उत्तराखंड , देहरादून

लखनऊ, रविवार, 02 मार्च 2025

वर्ष 06, अंक 153, पृष्ट 12, मूल्यः 03 रुपया

www.swatantraprabhat.com

गाज़ियाबाद , दिल्ली , हरियाणा , चंडीगढ़ , झारखण्ड , बिहार , मध्य प्रदेश ,असम, तेलंगाना आदि जनपदो में प्रसारित

शिवनगर शिव मन्दिर में आम सभा सम्पन्न.....12

प्रयागराज के अतीक अहमद के कार्यालय में लगी आग...11

महाराष्ट्र चुनाव धांधली के खिलाफ कांग्रेस ने खोला मोर्चा

ब्यूरो प्रयागराज। महाराष्ट्र प्रदेश कांग्रेस कमेटी (एमपीसीसी) ने मतदाता सूची में हेराफेरी के खिलाफ आंदोलन छेड़ने की घोषणा की है। उसका कहना है कि चुनाव आयोग जानबूझकर इस मुद्दे की अनदेखी कर रहा है। क्योंकि बीजेपी ने राज्य विधानसभा चुनावों में जीत हासिल करने के लिए उसके साथ मिलकर इस खेल को खेला है। महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव 2024 में गिने गए वोट और डाले गए वोट के बीच काफी अंतर है। इस पर अभी भी विवाद हो रहा है। केंद्रीय चुनाव आयोग के अनुसार,विधानसभा में अंतिम मतदान 66.05% था यानी कुल 64,088,195 वोट। हालाँकि, गिने गए कुल वोटों का जोड़ 64,592,508 है, जो कुल पड़े वोटों से 504,313 अधिक है। हालाँकि आठ विधानसभा क्षेत्रों में गिने गए वोटों की संख्या डाले गए वोटों से कम थी, शेष 280 निर्वाचन क्षेत्रों में, गिने गए वोट डाले गए वोटों से अधिक थे। महाराष्ट्र कांग्रेस ने मतदाता सूची में धोखाधड़ी के आरोपों को लेकर एक बैठक शुक्रवार 28 फरवरी की। महाराष्ट्र कांग्रेस प्रमुख हर्षवर्धन सपकाल ने कहा, ÷हमारे नेता राहुल गांधी ने लोकसभा में यह उठाया था। उन्होंने इलेक्ट्रॉनिक रूप में संकलित अंतिम मतदाता सूची मांगी थी। भारत का चुनाव आयोग डर रहा है और देरी करने की रणनीति अपना रहा है। इसलिए, हमने इस लड़ाई को जनता की अदालत में ले जाने का फैसला किया है। हम हाल ही में हुए विधानसभा चुनावों में की गई %धोखाधड़ी% के खिलाफ एक जनसंपर्क अभियान शुरू करेंगे और तथ्यों को जनता के सामने लाएंगे।÷

एआईसीसी सदस्य गुरदीप सप्पल ने कहा, पार्टी ने जब दिल्ली हाईकोर्ट में अपनी मांग रखी, तो चुनाव आयोग ने तीन और महीनों की मांग की। एक तरफ वो दावा करता है कि चुनाव व्यवस्था पूरी तरह से सुरक्षित है, वहीं दूसरी तरफ जानकारी साझा करने से इनकार करता है। सोलापुर जिले में मरकडवाडी गांव के लोगों ने चुनाव नतीजों को स्वीकार नहीं किया। इसकी वजह यह थी कि उन्होंने जिसे वोट दिया था, वो प्रत्याशी नहीं जीता। वहां आश्चर्यजनक रूप से बीजेपी प्रत्याशी को सबसे ज्यादा वोट मिले। इसीलिए मरकडवाडी के लोगों ने वहां मॉक मतदान आयोजित किया। ग्रामीणों ने खुद के खर्चे से बैलट पेपर से वोटिंग की व्यवस्था की। ग्रामीणों ने तय किया है कि मतपत्र से वोटिंग 3 दिसंबर को सुबह 7 बजे से शाम 4 बजे तक होगी। इसके तुरंत बाद वोटों की गिनती होगी और परिणाम आएगा। यह गांव मालशिरस विधानसभा क्षेत्र में आता है। यहां से शरद पवार की एनसीपी के प्रत्याशी उत्तम जानकर और बीजेपी उम्मीदवार राम सातपुते के बीच कड़ी टक्कर थी। इसमें उत्तम जानकर ने जीत हासिल की। लेकिन मार्कडवाडी गांव में सातपुते को ज़्यादा वोट मिले। सातपुते को 1003 वोट मिले, जबकि जानकर को गांव से मात्र 843 वोट मिले। ग्रामीणों में इसी को लेकर नाराज़गी थी। इसलिए उन्होंने मॉक वोटिंग का फैसला किया। लेकिन इससे पहले वोटिंग होती जिला प्रशासन ने मरकडवाडी में धारा 144 लगा दी। यह इशारा था कि मॉक वोटिंग नहीं होने दी जायेगी। चुनाव आयोग इस मॉक वोटिंग से कुछ ज्यादा ही डर गया था। सूत्रों का कहना है कि उसकी सलाह पर ही वहां धारा 144 लगाकर मॉक वोटिंग रोकी गई। बाद में गांव वालों को सबक सिखाने के लिए 200 लोगों पर एफआईआर भी दर्ज की गई। इसके बाद अकोला जिले के बालापुर क्षेत्र के तुलजापुर गांव और पातुर तहसील के बेलतला गाँव में मॉक पोल आयोजित करने की घोषणा की गईकहा जा रहा है कि भले ही यह वोटिंग नहीं हो पाई, लेकिन इसने कई जगहों पर लोगों को मॉक पोल के ज़रिए प्रतिकात्मक विरोध-प्रदर्शन की एक राह दिखाई है। कांग्रेस ने इसी संदेश को पकड़ा है और आंदोलन की घोषणा की है। दरअसल लोकसभा चुनाव 2024 के पांच महीने बाद विधानसभा चुनाव हुए थे। जिसमें महाराष्ट्र में कुल मतदाताओं की संख्या में 47 लाख की वृद्धि हो गई ! जबकि, 2019 के लोकसभा चुनाव से लेकर 2024 के लोकसभा चुनाव तक पांच साल में महाराष्ट्र में सिर्फ 37 लाख मतदाताओं की वृद्धि हुई थी। जबकि इस बार पांच महीने में 47 लाख मतदाता बढ़ गये। डेटा विश्लेषण से पता चलता है कि नए मतदाताओं की संख्या कुछ विधानसभा क्षेत्रों में विशेष रूप से अधिक थी। सिर्फ 78 विधानसभा सीटों में 18 लाख से अधिक नए मतदाता जोड़े गए, जहां बीजेपी ने 68 सीटें जीतीं। नेता विपक्ष राहुल गांधी ने इस मुद्दे को संसद के अंदर और बाहर उठाया। उन्होंने कहा कि अकेले शिरडी क्षेत्र की एक बिल्डिंग में ही सात हजार नये मतदाता बढ़ गये। ऐसा नहीं है कि सिर्फ कांग्रेस ने ही चुनाव धांधली के मुद्दे को उठाया। वंचित बहुजन आघाडी (वीबीए) ने महाराष्ट्र चुनाव परिणामों में शाम 6 बजे के बाद डाले गये 76 लाख वोटों का विवरण मांगने के लिए याचिका दायर की। मतगणना के दिन मतदान एजेंटों ने 99त्न बैटरी होने की कई शिकायतें दर्ज कराईं। लेकिन उनका कोई संज्ञान नहीं लिया गया। दिल्ली हाईकोर्ट को मंगलवार 25 फरवरी को चुनाव आयोग को बताया कि वो तीन महीने में फैसला लेगा कि कांग्रेस सांसद रणदीप सुरजेवाला को मतदाता सूची देना है या नहीं। सुरजेवाला ने आयोग से 2009 से 2024 के बीच हरियाणा और महाराष्ट्र में हुए चुनावों की मतदाता सूची मांगी है। हरियाणा और महाराष्ट्र की मतदाता सूचियों में गड़बड़ी की काफी शिकायतें चुनाव के दौरान आई थीं। उसी वजह से कांग्रेस सांसद ने ईसीआई से मतदाता सूची मांगी। लेकिन इस मामले में ईसीआई हीलाहवाली कर रहा है। यानी वो मतदाता सूची नहीं देना चाहता। कांग्रेस की ओर से पेश वकील अभिषेक मनु सिंघवी ने कहा, ÷जवाब देने में दो महीने लग गए। दो महीने में उन्होंने कहा है कि अब हमें जवाब देने के लिए और समय चाहिए।

हाईकोर्ट के आदेश के बावजूद निर्माण कार्य रोकने पहुंचे लखनऊ के डीएम

जमीन मालिक के साथ अभद्रता, गाली गलौज और मारपीट का संगीन आरोप

स्वतंत्र प्रभात

सीनियर पत्रकार - विपिन शुक्ला

लखनऊ। राजधानी लखनऊ में प्रशासनिक अफसरों की कार्यशैली एक बार फिर सवालों के घेरे में है। ताजा मामला रानी लक्ष्मीबाई मार्ग स्थित एक भूखंड का है, जहां हाईकोर्ट के आदेश के बावजूद निर्माण कार्य को जबरन रुकवाने का आरोप एसडीएम अर्जुन शशि भूषण पाठक और लखनऊ के जिलाधिकारी पर लगा है। पीड़ित राजेश कुमार रस्तोगी पुत्र श्री प्रताप चंद्र रस्तोगी, निवासी पीली कोठी, ड्योढ़ी आगामीर, लखनऊ ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को पत्र लिखकर पूरे प्रकरण की शिकायत की है। राजेश रस्तोगी ने पत्र में बताया है कि वह भूखंड संख्या-12, रानी लक्ष्मीबाई मार्ग के विधिक स्वामी हैं। उक्त संपत्ति को लेकर चले मुकदमे में माननीय उच्च न्यायालय, लखनऊ खंडपीठ ने 14 फरवरी 2025 को अंतिम निर्णय उनके पक्ष में सुनाया था, जिसके बाद वह अपनी जमीन पर निर्माण कार्य करा रहे थे। राजेश के अनुसार, 25 फरवरी 2025 को सुबह करीब 11:30 बजे एसडीएम अर्जुन शशि भूषण पाठक मौके पर पहुंचे और बिना किसी वैध कारण के निर्माण कार्य को रुकवा दिया। इस दौरान उन्होंने अभद्र भाषा का प्रयोग किया और धमकी भी दी। कुछ देर बाद स्वयं जिलाधिकारी लखनऊ भी मौके पर पहुंचे और उन्होंने न केवल निर्माण कार्य रुकवाया, बल्कि मौके पर मौजूद लोगों के साथ गाली-गलौज और अभद्रता की। राजेश रस्तोगी का आरोप है कि इस अफरा -तफ़री के दौरान वह सीढ़ियों से गिरकर चोटिल हो गए। राजेश ने यह भी बताया कि जब उन्होंने कोर्ट के आदेश की कॉपी दिखाकर वैध निर्माण कार्य की जानकारी दी, तब जिलाधिकारी आगबबूला हो गए और उन्हें गंभीर परिणाम भुगतने की धमकी देकर मौके से चले गए। पीड़ित राजेश कुमार रस्तोगी ने मुख्यमंत्री से मामले में हस्तक्षेप कर दोषी अधिकारियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर कड़ी कानूनी कार्रवाई की मांग की है। ख़बर लिखे जाने तक पूरे मामले की जानकारी लेने के लिए हमारे संवाददाता विपिन शुक्ला ने जिलाधिकारी लखनऊ से उनका पक्ष जानने के लिए उनके सीयूजी नंबर पर बात करने की कोशिश की लेकिन डीएम साहब की मीटिंग में व्यस्तता की वजह से उनका पक्ष नहीं रखा जा सका।

संक्षिप्त ख़बरें

जिलाधिकारी ने परीक्षा केंद्र रतनसेन इंटर कॉलेज बांसी का किया निरीक्षण

सिद्धार्थनगर । माध्यमिक शिक्षा परिषद उत्तर प्रदेश प्रयागराज द्वारा संचालित हाई स्कूल एवं मीडिएट की परीक्षा में शनिवार को प्रथम पाली की परीक्षा का रतनसेन इन्टर कालेज बांसी का जिलाधिकारी राजा गणपति आर0 ने निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी डा0 राजा गणपति आर0 द्वारा सी.सी.टी.वी. कैमरा कक्ष को देखा गया।सभी परीक्षा कक्षों के सीसीटीवी कैमरा क्रियाशील पाए गए। इसके साथ ही प्रधानाचार्य को निर्देश दिया कि परीक्षा शान्तिपूर्ण, नकल विहीन एवं सुचितापूर्ण ढंग से सम्पन्न कराए। जिलाधिकारी ने प्रधानाचार्य को निर्देश दिया कि परीक्षा की समाप्ति के बाद विद्यालय भवन की पेन्टिंग कराए। मेरे द्वारा विद्यालय का पुनः निरीक्षण किया जायेगा।

बीडीओ ने दिलाई पद एवं गोपनीयता की शपथ

महराजगंज। नौतनवां ब्लॉक क्षेत्र के ग्राम पंचायत बगहा के नव निर्वाचित ग्राम प्रधान सलाहुद्दीन उर्फ भोला ने शनिवार को रतनपुर स्थित ब्लॉक मुख्यालय में पद एवं गोपनीयता की शपथ ग्रहण की। नौतनवा ब्लाक बीडीओ अमित कुमार मिश्रा ने नव निर्वाचित ग्राम प्रधान को शपथ दिलाई और उनके सफल कार्यकाल की शुभकामनाएं दीं। इस दौरान प्रभारी एडीओ पंचायत योगेश मद्धेशिया, ग्राम पंचायत सचिव देवेंद्र यादव समेत कई अधिकारी और स्थानीय लोग उपस्थित रहे।

शराब के ठेके के सामने से युवक की बाइक चोरी

कछौना, हरदोई। कोतवाली क्षेत्र कछौना के अंतर्गत शुक्रवार को अपराह्न शराब के ठेके के सामने व घर के पड़ोस में खड़ी स्पेलेण्डर मोटरसाइकिल यू0पी030बी0बी03013 बाइक चोरी हो गई। पीड़ित ने मामले की शिकायत कोतवाली कछौना पुलिस से की है। बतातें चलें कुंदन गुप्ता पुत्र स्व0 राजबहादुर गुप्ता निवासी मोहल्ला पूर्वी चौराहा कछौना ने कोतवाली कछौना पुलिस से शिकायत की है कि शुक्रवार को अपराह्न शराब के ठेके के सामने व घर के पड़ोस में आवश्यक कार्य से स्पेलेण्डर मोटरसाइकिल यू0 पी0 30 बी0 बी0 3013 खड़ी कर टैक्टर में डीजल डालने हेतु लगभग 50 मीटर पर स्थित अपनी दुकान तक चलें गए, कुछ मिनटों बाद कार्य समाप्त कर जब वह वापस आये, ठेके के सामने खड़ी बाइक गायब मिली।

स्टाफ डैम में गुणवत्ता हीन कार्य को सफल बनाने में लगे हैं अधिकारी

स्वतंत्र प्रभात

शहडोल । जिले के ग्राम पंचायत करकटी भ्रष्टाचार की भारी रिकॉर्ड तोड़ चुका है। जी बात करे तो हाल ही में ग्रामीण यंत्री सेवा के मद से 34 लाख 21 हजार रुपए की लागत से बन रहे स्टाप डैम का कार्य घटिया सामग्री के साथ 12 एमएम की छड़ के साथ कार्य को किया जा रहा है जिसमें लोकल सीमेंट का भी उपयोग में लाया जा रहा है। स्टीमेट के विरुद्ध जाकर निर्माण एजेंसी अपने मनमानी तरीके से कार्य को संपूर्ण करने में जुटा हुआ है। जबकि नियम व प्रावधानों को दरकिनार करते हुए कार्य की गुणवत्ता भी एकदम से घटिया कार्यों को किया जा रहा है। जिसकी शिकायत भी इंजीनियर के पास कई बार गया और पेपर के माध्यम से भी पत्राचार हुआ, पर आज तक आज दिनांक तक कोई कार्यवाही नहीं हुई। और ना ही इसकी गुणवत्ता की जांच की गई है ।

नगर पालिका में बहे एक करोड रुपए की पुलिया इसकी संकेत तो नहीं दे रहा ग्राम पंचायत करकटी

अभी हाल ही में धनपुरी नगर पालिका के द्वारा एक करोड रुपए की लागत से स्टॉप डैम निर्माण कार्य किया जा रहा था। जिससे कि लोगों की ज़रूरतें वह पानी की समस्याएं को दूर किया जा सके पर ठेकेदार की मनमानी और इंजीनियर की मिली भगत के एक करोड रुपए तो बह गया क्योंकि इसकी शिकायतें बार बार हो रही थी, और पत्राचार के माध्यम से भी कई बार गुणवत्ताहीन कार्य को लेकर पत्राचार हुआ था। पर इसकी जांच ना करके ठेकेदार के साथ घटिया निर्माण कर को पूर्ण किया जा रहा था , तभी बारिश हुई और एक करोड रुपए डह गया। जिसकी शिकायत पर आज दिनांक तक कार्यवाही के नाम पर केवल आश्वासन ही मिल रहा है और कुछ नहीं , ठीक इसी प्रकार ग्राम पंचायत करकटी में बना रहे 34 लाख रुपए की लागत से स्टाफ डेम को भी घटिया सामग्री के साथ गुणवत्ताहीन कार्य किया जा रहा है, जिसकी शिकायत सीएम हेल्पलाइन में भी दर्ज हैं। गुणवत्ता की जांच ना की जाए और निर्माण कर एजेंसी अपने मन मुताबिक कार्य को पूर्ण करने में जुट जाए ऐसा पुलिया कब तक टिके रहेगा। यह एक जांच का विषय है-

सेफ्टी के नाम पर जीरो फिर भी निर्माण एजेंसी हीरो

ग्राम पंचायत करकटी में बन रहे 34 लाख 21 हजार रुपये की लागत से बन रहे स्टाप डैम में किसी भी प्रकार का कोई सेफ्टी नहीं दी जा रही हैं। जिससे कि एक बड़ी दुर्घटना का बुलावा दिया जा रहा हैं। जबकि मजदूरों के लिए छाया का व्यवस्था और फर्स्ट एंड किट ,पीने का पानी तक का व्यवस्था निर्माण कार्य एजेंसी को किया जाना चाहिए।

निरीक्षण गुडवत्ता नियंत्रण एवं मॉनिटरिंग किसकी

निर्माण कार्य एजेंसी अपने मन मुताबिक कार्य को किया जा रहा हैं जिससे ग्रामीणों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ रहा हैं। जिसकी शिकायत तहसील से लेकर जिले तक हुआ पर आज दिनाँक तक कोई भी कार्य का निरीक्षण गुडवत्ता और मोनिटरिंग के नाम पर कोई भी अधिकारी इस ग्राम पंचायत में आने से कतरा रहे हैं। क्या अधिकारी की मिलीभगत से इस घटिया कार्य को किया जा रहा हैं।

कोतवाली प्रभारी व होमगार्ड जिला कमांडेंट ने प्रशस्ति पत्र देकर इन्द्रमणि सिंह को किया सम्मानित

स्वतंत्र प्रभात

महराजगंज /रायबरेली। विगत माह की भांति इस माह भी 1 मार्च 2025 को होमगार्ड कंपनी का औचक निरीक्षण जिला कमांडेंट संजय कुमार शर्मा द्वारा किया गया तो लोगों के प्रति अच्छा कार्य व्यवहार अच्छी ड्यूटी एवं साफ सुथरा वर्दी से प्रभावित होकर जिला कमांडेड होमगार्ड रायबरेली संजय कुमार शर्मा व कोतवाली प्रभारी जगदीश यादव के द्वारा होमगार्ड प्लाटूंन कमांडर इन्द्रमणि सिंह को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया आपको बता दें कि महीने के 1 तारीख को एक महीने के बेहतर कार्य व्यवहार साफ सुथरा वर्दी तथा समय से ड्यूटी करने के मामले में कोतवाली प्रभारी जगदीश यादव द्वारा हर महीने एक व्यक्ति को सम्मानित किया जाता है इसी क्रम में आज 1 मार्च को कोतवाली परिसर महाराजगंज में होमगार्ड प्लाटून कमांडर चंद्रमणि सिंह को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया इस मौके पर सी.सी जसबीर सिंह, बुद्धसेन शर्मा, एस आई दिनेश गोस्वामी, हेड मुहारिर रविकांत पाण्डेय ,दीवान अजय चौधरी, हिमांशु ,कुंदन, बी ओ राजेश कुमार राय ,पी.सी रमेश मौर्य, रमापति बाजपेयी , राजेश कुमार सिंह ,रामदास यादव, सतीश प्रताप सिंह ,राम प्रताप यादव, मुकेश कुमार यादव, रामराज यादव ,लाल मोहम्मद , दिनेश सिंह, रामकुमार सिंह, जगदेव मिश्रा ,राम भुवन सिंह, धर्मदास, छेदीलाल ,रामकुमार यादव, रामजस मौर्य, ईशा मोहम्मद, धर्मेंद्र पांडे, शिवकरण यादव आदि मौजूद रहे।

येदियुरप्पा केस येदियुरप्पा की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता सिद्धार्थ लूथरा ने संक्षेप में पृष्ठभूमि का उल्लेख किया

अगर कोर्ट ने धारा 156(3) के तहत जांच का आदेश दिया है तो पीसी एक्ट मंजूरी की जरूरत नहीं : सुप्रीम कोर्ट

स्वतंत्र प्रभात

सुप्रीम कोर्ट ने सुनवाई के दौरान कहा कर्नाटक के पूर्व मुख्यमंत्री बीएस येदियुरप्पा से संबंधित मामलों की सुनवाई करते हुए सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार (28 फरवरी) को भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम में 2018 के संशोधन के आवेदन पर विचार किया, जिसमें जांच के लिए भी पूर्व मंजूरी अनिवार्य करने का प्रावधान जोड़ा गया था। न्यायालय ने मौखिक रूप से टिप्पणी की कि एक बार न्यायालय ने धारा 156(3) सीआरपीसी के तहत जांच के लिए आदेश पारित कर दिया है, तो पीसी अधिनियम की धारा 17ए के तहत पूर्व मंजूरी की आवश्यकता नहीं होगी। न्यायालय ने पूछा कि क्या न्यायालय द्वारा जांच के लिए आदेश पारित किए जाने के बाद, जांच अधिकारी यह कहते हुए जांच को स्थगित कर सकता है कि सरकार से मंजूरी की आवश्यकता है? न्यायमूर्ति जे.बी. पारदीवाला और न्यायमूर्ति मनोज मिश्रा की पीठ वर्तमान में भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम, 1988 के तहत पूर्व मंत्री बी.एस. येदियुरप्पा के खिलाफ दर्ज विभिन्न तथ्यात्मक पृष्ठभूमियों से उत्पन्न पांच मामलों की सुनवाई कर रही है।इन मामलों में एक सामान्य मुद्दा यह उठता है कि क्या पूर्व मुख्यमंत्री के

खिलाफ संज्ञान लेने के लिए पूर्व मंजूरी की आवश्यकता थी, और क्या 2018 के संशोधन के बाद कानून की स्थिति में कोई अंतर आता है। येदियुरप्पा की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता सिद्धार्थ लूथरा ने संक्षेप में पृष्ठभूमि का उल्लेख किया। सबसे पहले, पूर्व सीएम के खिलाफ एक निजी शिकायत, जब वे अभी भी पद पर थे, को मंजूरी की कमी के कारण खारिज कर दिया गया था। दूसरा, चूंकि पहली शिकायत खारिज कर दी गई थी, इसलिए दूसरी शिकायत को बनाए रखने योग्य नहीं माना जा सकता क्योंकि आरोप एक जैसे थे। उन्होंने कहा कि पहला आदेश अंतिम रूप ले चुका था और इसे कभी चुनौती नहीं दी गई। इसके अलावा, दूसरी शिकायत भी बनाए रखने योग्य नहीं थी क्योंकि पूर्व सीएम अब लोक सेवक नहीं थे। उन्होंने कहा÷ अब आप झूठा दावा कर रहे हैं। पहली शिकायत में आप मुझे पूर्व मुख्यमंत्री बता रहे हैं। मान लीजिए, मैं पद पर था। दूसरी शिकायत में आप यह आरोप लगाते हुए शिकायत दर्ज कराते हैं कि उस समय मैं पद पर नहीं था...वह वही बात दोहराता है [पहली शिकायत की तरह] सिवाय इसके कि इस बार विशेष न्यायाधीश उसे पकड़ लेते हैं और उच्च न्यायालय उसे पलट देता है। विशेष न्यायाधीश कहते हैं, यही बात आपने पहले दौर में कही थी, दोनों ही दावे अलग नहीं थे...आपने पहला दावा किया, आप तब मुख्यमंत्री नहीं थे और अब भी मुख्यमंत्री नहीं हैं। आप हार गए और आप नई शिकायत दर्ज करके उच्च न्यायालय के पिछले फैसले को पलटने की कोशिश कर रहे हैं, मैं आपको ऐसा नहीं करने दूंगा। यहां, दूसरी शिकायत को 2016 में ट्रायल कोर्ट ने खारिज कर दिया था। हालांकि, 2021 में कर्नाटक उच्च न्यायालय ने ट्रायल कोर्ट के आदेश को खारिज कर दिया और दूसरी शिकायत को पुनर्जीवित कर दिया। लूथरा ने कहा कि उच्च न्यायालय ने न केवल शिकायत को बहाल करके गलती की, बल्कि 2018 के बाद कानून की स्थिति में हुए बदलाव के प्रति भी अनभिज्ञता दिखाई। 2018 के बाद, किसी लोक सेवक के कार्यालय छोड़ने के बाद, पीसी अधिनियम के तहत पूर्व मंजूरी की आवश्यकता होती है। इस पर, न्यायमूर्ति पारदीवाला ने पूछा÷ यह सब एक निजी शिकायत से शुरू हुआ और धारा 156 (3) सीआरपीसी के तहत एक आदेश था। आपकी पहली दलील यह थी कि धारा 156 (3) का यह आदेश अपने आप में संज्ञान लेने के बराबर है। इसलिए, बिना मंजूरी के, यह आदेश पारित नहीं किया जा सकता था... धारा 156 (3) के तहत आदेश, जैसा कि हम 1960 से जानते हैं, एक अंतरिम आदेश है। लेकिन एक आरोप पत्र दायर किया गया था, इसलिए कम से कम उस समय मंजूरी की आवश्यकता है या नहीं?... हम इस मुद्दे पर चर्चा क्यों कर रहे हैं? आरोप पत्र गायब हो गया है, इसलिए उन्हें इस आधार पर नहीं जाना चाहिए कि जांच खराब है। उन्हें इस आधार पर जाना चाहिए कि जिस तारीख को आरोप पत्र पर संज्ञान लिया गया था, उस दिन कोई मंजूरी नहीं थी। समस्या यह है कि जिस तारीख को संज्ञान लिया गया था, वे सार्वजनिक पद पर नहीं थे। मंजूरी के बारे में न्यायमूर्ति पारदीवाला ने कहा, मंजूरी के आधार पर शिकायत के लिए सामान्यतः न्यायालय कहेगा कि मंजूरी प्राप्त करें। इसलिए, यदि आप मंजूरी प्राप्त करने में सक्षम हैं, तो आप आगे की कार्यवाही कर सकते हैं और इसलिए, दूसरी शिकायत स्वीकार्य हो सकती है। यह तकनीकी बिंदु पर है, गुण-दोष पर नहीं। लूथरा ने उत्तर दिया कि अब ऐसे अनेक निर्णय हैं, जिनमें कहा गया है कि कोई भी व्यक्ति मंजूरी से बच नहीं सकता और न ही लोक सेवक के पद छोड़ने तक इंतजार कर सकता है।

संक्षिप्त ख़बरें

फंदे से लटका मिला 11वीं के छात्र का शव

बस्ती। बस्ती जिले के दुबौलिया थाना क्षेत्र के गोकुलपुर गांव के पूरब बबूल के बाग में संदिग्ध परिस्थितियों में फंदे से लटका 11वीं की छात्र का शव मिलने से हड़कंप मच गया। मौके पर पुलिस व फोरेंसिक टीम जांच-पड़ताल में जुटी हुई है। शुक्रवार कि शाम करीब छह बजे गोकुलपुर गांव के पूरब बाग में चिलबिल के पेड़ में मफलर से लटका हुआ शव गांव के लोगों ने देखा। लोगों ने पुलिस को सूचना दी। छात्र की पहचान थाना क्षेत्र के ही बरसांव गांव निवासी 16 वर्षीय सचिन यादव पुत्र कृपाशंकर के रूप में हुई। उसकी मां रामलली ने बताया कि सचिन 11वीं में पढ़ता था। स्कूल से पढ़ कर शाम को घर आया था। कहा कि अभी थोड़ी देर में आ रहा हूं। इस के बाद उसके मृत्यु की सूचना मिली। तीन भाइयों में मझला था। उसके पिता निजी गाड़ी चलाते हैं। थानाध्यक्ष जितेन्द्र सिंह ने बताया कि शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है। मृत्यु के कारणों की जांच की जा रही है। स्वजन ने बताया कि उसकी दवा चल रही थी।

प्राथमिक शिक्षा जितना मजबूत होगी, राष्ट्र उतना ही मजबूत होगा

बस्ती। बस्ती जिले में सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी पिछड़ा मोर्चा के जिलाध्यक्ष प्रमोद चौधरी की अगुवाई में मॉड प्राथमिक विद्यालय रमवापुर में अखिल भारतीय सहायता समूह ट्रस्ट द्वारा राष्ट्रीय ग्रामीण साक्षरता मिशन के तहत बच्चों को निःशुल्क जूता, मोजा और स्कूल बैग का वितरण किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पूर्व प्रधानाचार्य एवं राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित शोभा प्रसाद चौहान ने कहा कि प्राथमिक शिक्षा जितना मजबूत होगी, राष्ट्र उतना ही प्रगति करेगा और बच्चों का भविष्य उज्ज्वल होगा।प्रधानाचार्य रामभरत वर्मा ने शिक्षा जगत को प्रोत्साहित करने की जरूरत है। ऐसे प्रयास बच्चों को उत्साहित करते हैं और वे पूरी ऊर्जा से अपने कार्य में लग जाते हैं। उन्होने सभी अतिथियों को धन्यवाद दिया। प्रमोद चौधरी ने कहा एक रोटी कम खाकर शिक्षा को प्रथम स्थान पर रखना चाहिये। उन्होने कहा नौनिहाल ही देश का भविष्य है उनका मानसिक शारीरिक विकास देश के विकास का पैमाना तय करता है। इस अवसर पर अनिरूद्ध चौधरी, विनोद कुमार चौहान, रमेश चन्द वर्मा, सूरज गौतम, अरमान हाशमी, तेजेन्द्र निषाद, संदीप चौहान एवं अध्यापक तथा अभिभावक मौजूद रहे।

सोनभद्र में युवाओं के लिए निःशुल्क कार्यालय प्रबंधन प्रशिक्षण का सुनहरा अवसर

सोनभद्र । जिला सेवायोजन अधिकारी, सोनभद्र ने अवगत कराया है कि जिला सेवायोजन कार्यालय, सोनभद्र द्वारा जनपद के बेरोजगार अभ्यर्थियों को रोजगार देने के लिए 03 मार्च,2025 को प्रातः 10:00 बजे से जिला सेवायोजन कार्यालय, खुशबू बाग नर्सरी रोड (जिला अस्पताल के सामने), लोढ़ी, राबर्ट्सगंज, सोनभद्र के परिसर में रोजगार मेला का आयोजन किया गया है, जिसमें निजी क्षेत्र की लगभग 13 कम्पनियां प्रतिभाग करेंगी जिसमें उ0प्र0 राज्य सड़क परिवहन निगम (सोनभद्र डिपो) में संविदा पर चालक की भर्ती, प्लेटिनम एच0 आर0 सोल्यूशन, सूरत, गुजरात, क्रेडिट एक्सेस ग्रामीण लि0, सोनभद्र, जी0एम0आर0 स्मार्ट इलेक्ट्रीकल डिस्ट्रीव्यूशन प्रा0 लि0, नोएडा, डीसेट्स, फरीदाबाद, ग्रीनटास इंडस्ट्रीज प्रा0 लि0, वाराणसी, एस0बी0आई0 कार्ड, वाराणसी, मीडलैण्ड माइक्रोफीन, सोनभद्र, कामाख्या टी0वी0एस0, राबर्ट्सगंज, एल0आई0सी0, राबर्ट्सगंज, वज्र इण्डस्ट्रीज, राबर्ट्सगंज, सोलेरा इण्डस्ट्रीज प्रा0लि0, मधुपुर, सोनभद्र एवं जोमैटो, वाराणसी इत्यादि कम्पनियों द्वारा विभिन्न पदों पर भर्तियां की जाएगी। समस्त इच्छुक एवं योग्य बेरोजगार अभ्यर्थियों का साक्षात्कार नियोजकों द्वारा जिला सेवायोजन कार्यालय, खुशबू बाग नर्सरी रोड (जिला अस्पताल के सामने), लोढ़ी, राबर्ट्सगंज, सोनभद्र के परिसर में लिया जायेगा। यह रोजगार मेला पूर्णतः निःशुल्क है। इस हेतु कोई यात्रा व्यय देय नहीं होगा।

आमरण पर बैठे आरके आरतियन की तबियत बिगड़ी, अफसरों के हाथ पांव फूले

● जब तक जिम्मेदार अधिकारी अपने कर्मचारियो पर शिकंजा नहीं कसेंगे तो जिले में इसी तरह भ्रष्टाचार बढ़ता जाएगा जनता को न्याय नहीं मिल पाएंगी

स्वतंत्र प्रभात

बस्ती। बस्ती जिले में भ्रष्टाचार इस कदर जकड़ लिया है अपने पांव पसार रहा है चाहे पुलिस विभाग हो या राजस्व विभाग हो या विकास विभाग हो भ्रष्टाचार की गंगा बह रही है और जिम्मेदार अधिकारी कुंभकरण नीद में सो रहे हैं जिले में राजस्व विभाग शिकायतों को फर्जी रिपोर्ट लगाकर अपना पल्ला झाड़ लेता है इस तरह पुलिस विभाग फर्जी रिपोर्ट लगाकर आईजीआरएस बिना शिकायतकर्ता से मिले ही रिपोर्ट लगाकर भेज देता है ऐसी स्थिति में जनता को न्याय पाना मुश्किल है जब तक जिले के अधिकारी जिम्मेदारी से अपना फर्ज निभाएंगे नहीं तो जिले में भ्रष्टाचार चरम पर बढ़ता जाएगा गौर विकास क्षेत्र के ग्राम पंचायत पतिला के बुजुर्ग की पेंशन रोके जाने के विरोध में आमरण अनशन पर बैठे भारत मुक्ति मोर्चा के जिलाध्यक्ष आरके आरतियन की तबियत दूसरे दिन बिगड़ गई। आनन फानन में एम्बुलेंस से जिला अस्पताल ले जाया गया, जहां उनका इलाज चल रहा है। आरके आरतियन मंगलवार से विकास भवन परिसर में आमरण अनशन कर रहे थे।आरोप है कि ग्राम सचिव ने एक बुजुर्ग को कागजों में मृत दिखाकर उनकी पेंशन रोक दी है। इस मामले में शिकायत की, तब से ग्राम सचिव उन्हें प्रताड़ित कर रहे हैं। उन्होंने कई बार उच्च अधिकारियों से शिकायत की, लेकिन किसी ने कोई कार्यवाही नही की। आरतियन लगातार उपरोक्त मामले में दोषी अधिकारियों के खिलाफ कार्यवाही की मांग कर रहे थे। जिला पंचायत राज अधिकारी ने आरतियन को समझाते हुये मामले में कार्यवाही के लिये तीन दिन का वक्त मांगा था, किन्तु आरतियन अपनी मांग पर अड़े रहे। आज अचानक तबयित खराब होने पर अधिकारियों के हाथ पांव फूल गये। हालांकि अस्पताल में इलाज के दौरान भी आरतियन इस बात पर अड़े रहे कि ठीक होने के बाद फिर अनशन करेंगे और जब तक दोषियों के खिलाफ कार्यवाही नही होगी उनका अनशन जारी रहेगा।

शाहगंज विधायक रमेश सिंह पूर्व सांसद हरिवंश सिंह और दुर्गेश सिंह समेत 3 के खिलाफ एनबीडब्ल्यू जारी

जौनपुर- अपर मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट एमपी/एमएलए कोर्ट अनुज कुमार जौहर ने पूर्व सांसद हरिवंश सिंह उनके पुत्र शाहगंज विधायक रमेश सिंह और दुर्गेश सिंह के खिलाफ गैर जमानती वारंट जारी किया है। अदालत ने सुनवाई के लिए छह मार्च की डेट तय की है। इस मामले में अधिवक्ता विनय कुमार सिंह ने परिवाद दाखिल किया था। ओलंदगंज मोहल्ले के निवासी अधिवक्ता विनय कुमार सिंह ने परिवाद में आरोप लगाया कि हरिवंश सिंह ने अपने अधिवक्ता राजेंद्र प्रसाद सिंह के जारिए मोहिनी श्रीवास्तव से 14 अगस्त 2006 को ओलंदगंज में मकान खरीदा। आरोपियों ने मकान के आसपास की करीब 2100 वर्गफीट जमीन भी कूटरचित दस्तावेज तैयार कर खरीद ली। परिवाद के मुताबिक 29 मई 2021 को विनय सिंह अपने भाई दयाशंकर के साथ ओलंदगंज में कांप्लेक्स पर मौजूद थे। इसी समय हरिवंश सिंह, उनके बेटे रमेश, दुर्गेश कांप्लेक्स के बगल में मौजूद उनका मकान गिरा दिया।

11 बजे तक बंद रहा पीएचसी कुदरहा, भटकते रहे मरीज

स्वतंत्र प्रभात

बस्ती – जिले में ग्रामीण क्षेत्र में स्वास्थ्य सुविधाएं सुचारू से चलने में असमर्थ हैं चिकित्साक द्वारा पी एच सी कुदरहा में कभी समय से नहीं अस्पताल चला कभी 11:00 बजे डॉक्टर आते हैं कभी 12:00 बजे आते हैं इनका समय निर्धारण नहीं है शिकायत होने के बावजूद महिला चिकित्सक मौके पर पहुंचकर मरीज के ऊपर आग बबूला हो गई ऐसे में स्वास्थ्य विभाग द्वारा जनता को कैसे बीमारियों से निजात दिला पाएगा ताजा मामला कुद रहा के प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में स्वास्थ्य सुविधा मुहैया कराने का सरकार लाख दावा करे लेकिन स्वास्थ्य कर्मियों के लापरवाही के चलते गरीब व असहायों को सुविधा नहीं मिला पा रहा है। ऐसा नजारा शुक्रवार को बस्ती जिले के प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र कुदरहा पर देखने को मिला। 10:30 बजे प्राइवेट दाई स्वास्थ्य केंद्र का चैनल खोल रही थी और परिसर में मरीज डॉक्टर का इंतजार कर रहे थे। दाई ने बताया कि अभी तक कोई नहीं आया है, कब तक लोग आएगें हमें जानकारी नहीं है। इसके पश्चात अप्रेंटिस कर रहे आदित्य विक्रम पाल पहुंचे और पर्ची कांउटर पर बैठकर पंजिका बनाने लगे। 11:20 बजे डॉ रजनी यादव पहुंची और रोगियों के उपचार में जुट गयी।

नहर किनारे मिला अज्ञात व्यक्ति का शव पहचान नहीं हो पाई

स्वतंत्र प्रभात

बस्ती। बस्ती जिले में लाश मिलने का सिलसिला जारी है नहीं रहा पुलिस का खूब बदमाशों में लूट और चोरी की घटनाओं की बाढ़ आ गई है ताजा मामला लगातार मिल रहे हैं जिले में खेत में लाश तो कहीं नहर के पास मिल रही है लाश पुलिस खुलासा करने में नाक कम साबित हो रहा है ताजा मामलासोनहा थानाक्षेत्र के नरखोरिया गांव के पश्चिम सरयू नहर के पूरब पटरी पर शुक्रवार की सुबह करीब सात बजे लगभग 45 वर्षीय व्यक्ति का शव देख ग्रामीणों ने शोर मचाया । मौके पर तमाम लोग जुट गए। घटना की सूचना पुलिस को दी। पुलिस ने शव को कब्जे में ले लिया और लोगों से शिनाख्त कराने के प्रयास में जुट गई। फोरेंसिक टीम ने भी घटनास्थल पर पहुंचकर आवश्यक साक्ष्य जुटाया। दिवंगत गले में माला व शरीर पर लाल रंग की चढ्ढी पहना हुआ है।बगल में पानी का पुराना बोतल पड़ा मिला है। प्रभारी निरीक्षक मोतीचंद राजभर ने बताया कि ग्रामीणों से पूछताछ में पता चला है कि उक्त व्यक्ति को दो तीन पहले इसी पहनावे में इधर उधर घूमते हुए देखा गया था। उसकी शिनाख्त का प्रयास किया जा रहा है। शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा जा रहा है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने पर ही मौत का कारण स्पष्ट होगा।

निर्माणाधीन भवन के पिलर सरिया काट ले गए चोर

चित्रकूट- निर्माणाधीन भवन के पिलर की सरिया काटकर अज्ञात चोर चुरा ले गए। पीड़ित ने घटना की सूचना पुलिस को दी है। बरगढ़ थाना क्षेत्र के बरगढ़ मोड़ निवासी पत्रकार ज्ञानचन्द्र शुक्ल ने बताया कि वह अपना घर बनवा रहे है। बीती रात अज्ञात चोर उनके घर के पीछे अर्द्धनिर्मित मकान के पिलर से सरिया काट ले गए। चोर उनकी आठ सरिया काटकर ले गए है। जबकि अभी उनके घर के पीछे सैकड़ों पिलर है। ऐसे में यदि इसी तरह बेखौफ होकर चोर आने लगे तो पूरी सरिया काट ले जाएंगे। पीड़ित ने मामले की सूचना बरगढ़ थाने में देते हुए चोरी का खुलासा कर चोरों को गिरफ्तार किए जाने की मांग की है।

कागजों में निर्माण, जेब में सरकारी धन, कार्यवाही की मांग कागजों में विकास दिखाकर शासन का बजट डकार रहे जिम्मेदार

स्वतंत्र प्रभात

बस्ती। बस्ती जिले के दुबौलिया विकास क्षेत्र के महुलानी खुर्द गांव में विकास कार्य कागजों में हो रहा है। शासन से मिले बजट से ग्राम प्रधान, सचिव और उच्चाधिकारियों की जेब भरी जा रही है। गांव के कृष्ण चन्द्र यादव तथा हेमन्त कुमार ने जिलाधिकारी को शिकायती पत्र देकर अविलम्ब कार्यवाही की मांग किया है। शिकायती पत्र में कहा गया है कि महुलानी ग्राम पंचायत में ग्राम प्रधान, सचिव तथा खण्ड विकास अधिकारी की मिलीभगत से रामबहाल के चक से रामचरित्तर के घर तक करीब 200 मी. खड़न्जा 20 साल पहले लगा था।आज भी वहां खड़न्जा दिख रहा है लेकिन इसके ऊपर मिट्टी पटाई दिखाकर 1,54,998 रू. सरकारी धन का बंदरबांट कर लिया गया। इस बावत की गई शिकायत भी बेअसर है। गांव में विन्दू देवी पत्नी पूर्णमासी के नाम से आवास का आवंटन कराया गया। लेकिन धनराशि 1,20,000 विन्दू देवी के स्थान पर मंजू मौर्या के खाते (भारतीय स्टेट बैंक 11684149076 में भेजी गई। इस प्रकार पीएम आवास का पैसा भी हड़प लिया गया। शिकायतकर्ताओं की मांग है कि मामले की जांच कराकर दोषियों के खिलाफ अविलम्ब कार्यवाही सुनिश्चित की जाये।

संपूर्ण समाधान दिवस हरैया तहसील में जिला अधिकारी के नेतृत्वमें67 मामले में 6 शिकायतों का हुआ निस्तारण

स्वतंत्र प्रभात

बस्ती। जिलाधिकारी रवीश गुप्ता ने प्राप्त शिकायतों को निर्धारित समय सीमा में गुणवत्तापूर्ण निस्तारण के लिए सभी विभागीय अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि सम्पूर्ण समाधान दिवस में प्राप्त शिकायत से सम्बंधित अधिकारी मौके पर जा कर निस्तारण करवाना सुनिश्चित करें। उन्होने तहसील हरैया में सम्पूर्ण समाधान दिवस की अध्यक्षता करते हुए उक्त निर्देश दिया। उन्होने सभी अधिकारियों को निर्देशित किया कि जन शिकायतों का निस्तारण प्रत्येक दशा में निष्पक्षता, समयबद्धता, पारदर्शिता एवं गुणवत्ता के साथ सुनिश्चित करें। उन्होने कहा कि शिकायतकर्ताओं से अधिकारी सहजता से बात करें, उनकी समस्याओं को गंभीरता से सुने और स्थलीय मौका देखकर गुणवत्तापूर्ण व ससमय समस्याओं का निस्तारण करें। समस्याओं के निस्तारण करते समय अधिकारी शिकायतकर्ताओं से उनके मोबाइल नम्बर पर सम्पर्क करके इस बात को भी सुनिश्चित कर ले कि शिकायतकर्ता को संतुष्टि मिली है या नहीं। उप जिलाधिकारी विनोद पाण्डेय ने बताया कि कुल 67 प्रार्थना पत्र प्राप्त हुआ, जिसमें से 6 का मौके पर निस्तारण किया गया। इसमें राजस्व के 23, पुलिस के 14, विकास के 12, विद्युत के 05, गन्ना के 03 तथा अन्य विभागों से 10 प्रार्थना पत्र प्राप्त हुये। सम्पूर्ण समाधान दिवस में उप जिलाधिकारी मनोज प्रकाश, जिला विकास अधिकारी अजय सिंह, उप निदेशक कृषि अशोक कुमार गौतम, डीपीआरओ रतन कुमार, मत्स्य कार्यकारी अधिकारी संदीप वर्मा, पिछड़ा वर्ग कल्याण अधिकारी रेखा गुप्ता, क्षेत्राधिकारी पुलिस, तहसीलदार सहित अन्य संबंधित विभागीय अधिकारीगण उपस्थित रहें।

रामचरितमानस के बाद हुआ भंडारे एवं जागरण का आयोजन

शाहगंज, जौनपुर। नगर के सर्राफा गली स्थित कानपुर धर्मशाला में भगवान् भोलेनाथ के मंदिर पर अखंड रामचरितमानस पाठ के पश्चात् जागरण एवं भंडारे का आयोजन किया गया जिसमें दूर दराज़ के लोगों ने सिरकत करके भक्ती संगीत एवं भंडारे का आनंद उठाया। मशहूर राष्ट्रीय स्तर के कथावाचक विनोद गौरव एवं नवोदित गायक करन पार्थ ने अपनी आवाज से शमा बाध दिया। लोगों ने इस आयोजन की मुक्त कंठ से सराहना करते हुए कहा कि इस मंदिर पर शिवरात्रि के बाद भंडारे का आयोजन हर साल किया जाता है जिससे सभी भक्तों को प्रसाद ग्रहण करने का अवसर मिल जाता है वर्ना शिवरात्रि के दिन बहुत से लोग व्रत रहते हैं। बनारसी सेठ ने बताया कि भगवान् भोले तथा माता पार्वती के विवाह के उपलक्ष्य में यह भंडारा प्रति वर्ष किया जाता है। यह भोलेनाथ की कृपा हैं जो इतना बड़ा आयोजन हर साल बिना किसी रूकावट के होता आ रहा है। आयोजन में मुख्य रूप से स्वर्णकार समाज के अध्यक्ष राहुल सोनी, उपाध्यक्ष मनोराम सेठ, जवाहिर सेठ, मुन्नू सेठ, रामू सचिन वर्मा, संदीप कुमार सोनी, सूरज सेठ, राम मूरत यादव, आशीष कुमार, चंदन कुमार, शेखर साहू आदि गणमान्य लोग उपस्थित रहें।

युवक ने अवैध पिस्टल से गोली मारकर की आत्महत्या

घटना का कारण स्पष्ट नहीं, पुलिस जांच में जुटी

स्वतंत्र प्रभात

जौनपुर – चंदवक स्थानीय क्षेत्र के डीहा (भीमपुर) गांव में शुक्रवार रात 10 बजे कोइलारी बाजार से घर पहुंचे युवक ने कमरें में जाते ही अवैध पिस्टल से सिर में गोली मारकर आत्महत्या कर ली। गोली चलने की आवाज सुनकर घर में कोहराम मच गया। परिजन आनन-फानन में बिना पुलिस को सूचना दिए घायल को ट्रॉमा सेंटर वाराणसी ले गए, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। पुलिस को घटना की जानकारी सुबह मिली, जिसके बाद मौके पर पहुंचकर अवैध पिस्टल और एक जिंदा कारतूस बरामद किया गया।आत्महत्या का कारण बना रहस्य मृतक राकेश सरोज (38), पुत्र दसरथ सरोज, खेती के साथ-साथ व्यवसाय भी करता था। रोज की तरह शुक्रवार शाम को बाइक से कोइलारी बाजार गया और खाने-पीने के बाद देर रात घर लौटा। पत्नी सरिता घर के बाहर किचन में काम कर रही थी, तभी वह कमरे में गया और खुद को गोली मार ली। आवाज सुनकर पत्नी जब कमरे में पहुंची तो खून से लथपथ राकेश को देखकर चीख पड़ी। शोर सुनकर आसपास के लोग भी मौके पर पहुंचे। परिजनों ने आनन-फानन में उसे ट्रॉमा सेंटर पहुंचाया, लेकिन डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया। पुलिस को सुबह इसकी जानकारी मिली और जब टीम घर पहुंची, तो अवैध पिस्टल और कारतूस बरामद किया गया।

परिवार में शोक, आत्महत्या का कारण अज्ञात

मृतक का परिवार आर्थिक रूप से संपन्न है। उसके चार भाई नौकरी और व्यवसाय में लगे हैं। पुलिस को कोई पारिवारिक विवाद भी नहीं मिला, जिससे आत्महत्या के कारणों पर संदेह बना हुआ है। मृतक के तीन बच्चे–गरिमा, आर.एस., अहन हैं। पत्नी सरिता और मां का रो-रोकर बुरा हाल है। पुलिस आत्महत्या के पीछे के कारणों की गहराई से जांच कर रही है।

युवक ने अवैध पिस्टल से सिर में गोली मारकर की आत्महत्या

घटना का कारण स्पष्ट नहीं, पुलिस जांच में जुटी

स्वतंत्र प्रभात

चंदवक। क्षेत्र के डीहा (भीमपुर) गांव में शुक्रवार रात 10 बजे कोइलारी बाजार से घर पहुंचे युवक ने कमरें में जाते ही अवैध पिस्टल से सिर में गोली मारकर आत्महत्या कर ली। गोली चलने की आवाज सुनकर घर में कोहराम मच गया। परिजन आनन-फानन में बिना पुलिस को सूचना दिए घायल को ट्रॉमा सेंटर वाराणसी ले गए, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। पुलिस को घटना की जानकारी सुबह मिली, जिसके बाद मौके पर पहुंचकर अवैध पिस्टल और एक जिंदा कारतूस बरामद किया गया।

आत्महत्या का कारण बना रहस्य

मृतक राकेश सरोज (38), पुत्र दसरथ सरोज, खेती के साथ-साथ व्यवसाय भी करता था। रोज की तरह शुक्रवार शाम को बाइक से कोइलारी बाजार गया और खाने-पीने के बाद देर रात घर लौटा। पत्नी सरिता घर के बाहर किचन में काम कर रही थी, तभी वह कमरे में गया और खुद को गोली मार ली। आवाज सुनकर पत्नी जब कमरे में पहुंची तो खून से लथपथ राजेश को देखकर चीख पड़ी। शोर सुनकर आसपास के लोग भी मौके पर पहुंचे। परिजनों ने आनन-फानन में उसे ट्रॉमा सेंटर पहुंचाया, लेकिन डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया। पुलिस को सुबह इसकी जानकारी मिली और जब टीम घर पहुंची, तो अवैध पिस्टल और कारतूस बरामद किया गया।

परिवार में शोक, आत्महत्या का कारण अज्ञात

मृतक का परिवार आर्थिक रूप से संपन्न है। उसके चार भाई नौकरी और व्यवसाय में लगे हैं। पुलिस को कोई पारिवारिक विवाद भी नहीं मिला, जिससे आत्महत्या के कारणों पर संदेह बना हुआ है। मृतक के तीन बच्चे–गरिमा, आर.एस., अहन हैं। पत्नी सरिता और मां का रो-रोकर बुरा हाल है। पुलिस आत्महत्या के पीछे के कारणों की गहराई से जांच कर रही है।

अमुवि में झगड़े के दौरान छात्र को मारी गोली

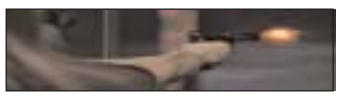

अलीगढ़। थाना सिविल लाइन क्षेत्र के एबीके यूनियन हाई स्कूल के पास छात्रों के दो पक्षों में झगड़ा हो गया। झगड़ा इतना तूल पकड़ गया कि एक छात्र ने दूसरे छात्र को गोली मार दी। जिससे छात्र की मौत हो गई।

एबीके यूनियन हाई स्कूल के पास छात्रों के दो पक्षों में झगड़े के दौरान एक छात्र ने दूसरे पर गोली चला दी। गोली लगने से छात्र घायल हो गया। छात्र को मेडिकल कालेज ले जाया गया। वहां पर छात्र को मृत घोषित कर दिया गया। सूचना पर पुलिस व प्रॉक्टर टीम मौके पर पहुंच गई।

इनका कहना है..

सीओ नगर तृतीय अभय पाण्डेय का कहना है कि थाना सिविल लाइन अंतर्गत छात्रों के दो पक्षों में हुए झगड़े की सूचना पर स्थानीय पुलिस द्वारा तत्काल मौके पर पहुंचकर घायल छात्र को उपचार हेतु जेएन मेडिकल कॉलेज भेजा गया, जहां पर उपचार के दौरान उसकी मृत्यु हो गई है। प्राप्त तहरीर के आधार पर अभियोग पंजीकृत कर आरोपियों की गिरफ्तारी हेतु टीम गठित की गई है। शीघ्र ही आरोपियों की गिरफ्तारी करते हुए कार्रवाई की जाएगी।

मधुमक्खी पालन प्रशिक्षण कार्यक्रम का हुआ समापन

स्वतंत्र प्रभात

जरवा/बलरामपुर – 9वीं वाहिनीं सशस्त्र सीमा बल बलरामपुर के द्वारा सीमा चौकी गुरुंगनाका के अंतर्गत आने वाले बघेलखंड एवं चौहत्तर कला गांव में नागरिक कल्याण कार्यक्रम के तहत 15 दिवसीय मधुमक्खी पालन प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया था 01 मार्च 2025, शनिवार को प्रशिक्षण समापन समारोह कार्यवाहक कमांडेंट कुमुद रंजन के नेतृत्व में किया गया। इस कार्यक्रम में उप कमांडेंट डॉ.भरत चौधरी, सहायक कमांडेंट प्रिंस कुमार,दीपक यादव, ग्राम प्रधान चौहत्तर कला एवं मो.नसीम ग्राम प्रधान बघेलखंड, उपस्थित रहे। साथ ही सीमा चौकी सह समवाय मुख्यालय, गुरुंगनाका / वाहिनी के अन्य कार्मिक भी इस अवसर पर मौजूद रहे। कार्यवाहक कमांडेंट कुमुद रंजन ने प्रशिक्षणार्थियों को सर्टिफिकेट दे कर उनके उज्जल भविष्य की कामना की एवं आगामी दिनों में एसएसबी द्वारा संचालित अन्य कौशल विकास प्रशिक्षण एवं जन कल्याण कार्यक्रमों जैसे 1.नशा मुक्त भारत अभियान, 2.स्वच्छ भारत अभियान, 3.प्लास्टिक का उपयोग न करें, 4.CAPF ज्वाइन करने के बारे मे जानकारी दी गई साथ ही आगामी दिनों में आयोजित होने वाले कार्यक्रम जैसे कि मानव एवं पशु चिकित्सा शिविर के रूप रेखा के बारे में अवगत कराया द्य इस प्रशिक्षण से ग्रामीणों को स्वरोजगार का अवसर अवश्य प्राप्त होगा तथा उन्हें आर्थिक उन्नति करने में सहायता प्राप्त होगी। इसी के साथ इस कार्यक्रम की विधिवत समापन की घोषणा कार्यवाहक कमांडेंट के द्वारा की गई।

संक्षिप्त ख़बरें

बोर्ड परीक्षा में दूसरे के स्थान पर परीक्षा दे रहे 2 नकलची गिरफ्तार

देवरिया। जनपद के थाना खुखुन्दू क्षेत्रान्तर्गत श्री बलदेव स्वामी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बैरौना में प्रथम पाली के हाई स्कूल गणित परीक्षा कक्ष संख्या 4 में संचालित हो रही थी जिसमें जांच के दौरान 2 छात्रों के स्थान पर अवनीश यादव पुत्र परिखन यादव निवासी रानीघाट तथा दूसरे परीक्षार्थी के स्थान पर एक नाबालिग को अवैध रुप से परीक्षा कक्ष से परीक्षा देते हुए कुटरचित आधार कार्ड के साथ गिरफ्तार किया गया है। केन्द्र व्यवस्थापक श्री बलदेव स्वामी उ0म0 विद्यालय बैरौना देवरिया के तहरीर के आधार पर केस दर्ज किया गया है।

श्रीमद् भागवत कथा में सती और ध्रुव प्रसंग का वर्णन सुन भाव भाव विहोर हुए श्रोता

सिद्धार्थनगर। भनवापुर क्षेत्र के गालापुर ग्राम पंचायत में शुक्रवार की रात श्रीमद् भागवत कथा के तीसरे दिन अवध धाम से पधारे स्वामी उत्तम कृष्ण शास्त्री ने सती चरित्र ध्रुव चरित्र की कथा सुनाई कथा सुन दर्शन भाव विभोर हो गए। कथा के दौरान आचार्य

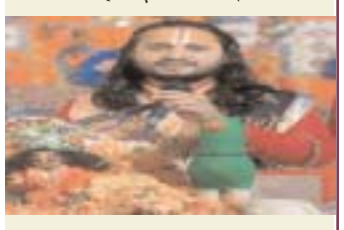

उत्तम कृष्ण शास्त्री ने बताया कि भगवान विष्णु ने पांचवा अवतार कपिल मुनि के रूप में लिया। इनके पिता का नाम महर्षि कर्दम व माता का नाम देवहूति था। शरशय्या पर पड़े हुए भीष्म पितामह के शरीर त्याग के समय वेदज्ञ व्यास आदि ऋषियों के साथ भगवान श्री कपिल मुनि जी भी वहां उपस्थित थे। भगवान कपिल मुनि जी सांख्य दर्शन के प्रवर्तक हैं। श्री गुरू भगवान कपिल महामुनि जी भागवत धर्म के प्रमुख बारह आचार्यों में से एक हैं। उन्होंने बताया कि भगवान शिव की अनुमति लिए बिना उमा अपने पिता दक्ष द्वारा आयोजित यज्ञ में भाग लेने पहुंच गईं। यज्ञ में भगवान शिव का आमंत्रण और उनका भाग न दिए जाने पर कुपित होकर सती ने यज्ञ कुंड में आहुति देकर शरीर त्याग दिया। इस दौरान अनिरुद्ध शास्त्री इंद्रजीत शास्त्री शिव शंकर पांडे कमलेश पांडे दोस्त शास्त्री अंबरीश हरिशंकर बृजेंद्र उमाशंकर पांडे दुर्गेश बृजेश आदि मौजूद रहे।

15 मार्च से चलेगा ऑपरेशन कब्जा मुक्ति

देवरिया। जिले में सार्वजनिक उपयोगिता की भूमि और ग्राम समाज की भूमि पर अतिक्रमण करने वालों की अब खैर नहीं है। जिला प्रशासन ने समस्त प्रकार की सार्वजनिक भूमि को अवैध कब्जे से मुक्त कराने के लिए कमर कस ली है। जिलाधिकारी दिव्या मित्तल के निर्देशन में 15 मार्च से सार्वजनिक भूमि को कब्जामुक्त कराने के लिए ऑपरेशन कब्जा मुक्ति अभियान चलेगा। अभियान के अंतर्गत कुल 800 चिन्हित सार्वजनिक उपयोगिता की भूमि एवं ग्राम समाज की भूमि को अतिक्रमण मुक्त कराया जाएगा। जिलाधिकारी ने बताया कि शासन की मंशानुरूप इस विशेष अभियान की कार्ययोजना बनायी गई है। अभियान के प्रथम चरण में व्यापक जनसुविधा के दृष्टिगत सार्वजनिक उपयोगिता की भूमि रास्ता, चकरोड, खेल का मैदान, चारागाह, पोखरी, खाद का गड्ढा आदि से अतिक्रमण हटाया जाएगा। द्वितीय चरण में ग्राम समाज की भूमि जैसे नवीन परती, बंजर पर से अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई की जाएगी। जिलाधिकारी ने बताया कि अतिक्रमण हटाने से पूर्व अतिक्रमणी को तहसील प्रशासन द्वारा डुग्गी-मुनादी एवं नोटिस आदि के माध्यम से सूचित किया जाएगा। जिलाधिकारी ने अवैध अतिक्रमणकारियों को चेताया भी कि वे स्वयं अपने अवैध कब्जे को हटा लें, अन्यथा की स्थिति में सख्त विधिक कार्रवाई की जाएगी। भाटपाररानी में सर्वाधिक 226, सलेमपुर में 202 रुद्रपुर में 116, बरहज में 105 तथा देवरिया सदर तहसील में 151 प्रकरण चिन्हित किये गए हैं। जिलाधिकारी ने कहा कि जनपद की सार्वजनिक भूमि पर अवैध कब्जा किसी भी दशा में बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। उन्होंने जनपदवासियों से अनुरोध किया है कि वे प्रशासन के इस प्रयास में सहयोग करें और सार्वजनिक भूमि को अतिक्रमण मुक्त बनाने में अपनी भूमिका निभाएं।

दहेज हत्या प्रकरण में 3 वांछित अभियुक्त गिरफ्तार

देवरिया। जनपद की खुखूंदू पुलिस ने दहेज हत्या प्रकरण में 3 वांछित अभियुक्तों को किया गिरफ्तार किया है। वादी विनोद चौरसिया की तहरीर पर 23.11.2024 को थाना खुखुन्दू में मु0अ0सं0- 356/24

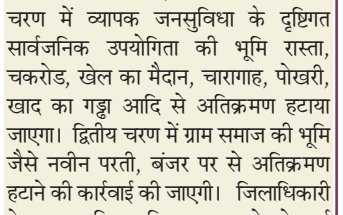

धारा- 85,80 बी0एन0एस0 एवं ड डीपी एक्ट के तहत केस दर्ज था और क्षेत्राधिकारी सलेमपुर दीपक कुमार शुक्ल द्वारा विवेचना की जा रही है। थाना खुखुन्दू पुलिस ने मुखबिर की सूचना पर असना मोड़ के पास से आरोपी सुरज पुत्र रामईश्वर, विमला देवी पत्नी रामईश्वर व रामईश्वर पुत्र रामराज चौरसिया निवासीगण ग्राम सिसई को गिरफ्तार कर लिया है।

मण्डलायुक्त, एसपी व सीडीओ ने तहसील गोण्डा सदर में आयोजित सम्पूर्ण समाधान दिवस में फरियादियों की सुनी समस्याए

सम्पूर्ण समाधान दिवस में आये हुये शिकायती पत्रों का गुणवत्तापूर्ण एवं समय से करें निस्तारित अधिकारी-सीडीओ

स्वतंत्र प्रभात

ब्यूरो गोण्डा । शासन की मंशानुरूप जनसामान्य की शिकायतों एवं समस्याओं का एक ही स्थल पर निस्तारण कराने के उद्देश्य से आज जनपद के समस्त तहसीलों में सम्पूर्ण समाधान दिवस का आयोजन किया गया। जिसमें तहसील गोण्डा सदर में मण्डलायुक्त, एसपी व सीडीओ ने आये हुये फरियादियों की समस्याओं को सुना तथा शिकायतों का त्वरित एवं गुणवत्तापूर्ण निस्तारण करने हेतु सम्बन्धित विभाग के अधिकारियों को प्रेषित किया गया। जनसुनवाई के दौरान तहसील गोण्डा सदर में कुल 122 प्रार्थना पत्र प्राप्त हुये जिसमें 06 प्रार्थना पत्रों का मौके पर ही निस्तारित कर दिया गया है शेष को निर्धारित समय सीमा के अन्तर्गत प्रकरण का गुणवत्तापूर्ण निस्तारण करते हुये आख्या तहसील में उपलब्ध कराने के निर्देश दिये गये।संपूर्ण समाधान दिवस के दौरान गोण्डा सदर में सीडीओ ने निर्देश दिए हैं कि समाधान दिवस में प्राप्त होने वाले शिकायतों के निस्तारण हेतु टीम गठित किया जाय, तथा टीम के द्वारा शिकायत का मौके पर स्थलीय जांचकर गुणवत्ता के साथ निस्तारण करना सुनिश्चित किया जाय। संपूर्ण समाधान दिवस के दौरान उन्होंने कहा कि अवैध अतिक्रमण के मामले में संयुक्त रूप से राजस्व एवं पुलिस फोर्स के साथ मौके पर जाकर निस्तारित कराना सुनिश्चित करें। साथ ही उन्होंने निर्देशित करते हुए कहा कि तालाब जमीन की पैमाइश, अवैध कब्जा, चकरोड, नाली, अवैध अतिक्रमण आदि को पुलिस फोर्स के साथ हटवाने का कार्य करें। शिकायतकर्ताओं को मौके पर बुलाएं। उसके आने पर लिखित रूप से उल्लेख करें और निस्तारण के प्रकरण का फोटोग्राफी/ वीडियोग्राफी भी करना सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा कि संपूर्ण समाधान दिवस में प्राप्त शिकायतों का निस्तारण मौके पर जाकर पूरी गुणवत्ता के साथ करें अन्यथा संबंधित विभाग के अधिकारी के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी। संपूर्ण समाधान दिवस के अंत में मुख्य विकास अधिकारी ने वहां पर उपस्थित सभी संबंधित विभाग के जनपद स्तरीय अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा है कि संपूर्ण समाधान दिवस में प्राप्त शिकायतों का समयबद्ध व गुणवत्तापूर्ण तरीके से निस्तारण करना सुनिश्चित करें।इस अवसर पर प्रभागीय वनाधिकारी पंकज कुमार शुक्ल, उपजिलाधिकारी गोण्डा सदर अशोक कुमार गुप्ता, पुलिस क्षेत्राधिकारी गोण्डा सिटी आनंद राय, सदर शिल्पा वर्मा, तहसीलदार गोण्डा मनीष कुमार, नायब तहसीलदार देवेंद्र कुमार, रंजन वर्मा, जिला विकास अधिकारी सुशील कुमार श्रीवास्तव, परियोजना निदेशक डीआरडीए चंद्रशेखर, जिला पिछड़ा वर्ग कल्याण अधिकारी गौरव स्वर्णकार, जिला प्रोवेशन अधिकारी संतोष कुमार सोनी, लघु सिंचाई विभाग के अधिकारीगण, एसएचओ कोतवाली नगर, देहात, इटियाथोक, कौड़िया बाजार तथा धानेपुर सहित अन्य सभी जनपद स्तरीय अधिकारीगण उपस्थित रहे।

बिसवां में मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह कार्यक्रम में 166 जोड़े वैवाहिक बंधन में बंधे

स्वतंत्र प्रभात

बिसवां(सीतापुर)। मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह समारोह का आयोजन दशहरा मेला मैदान बिसवां में आयोजित हुआ। इस भव्य समारोह के मुख्य अतिथि क्षेत्रीय विधायक निर्मल वर्मा रहे। उन्होंने सभी नवविवाहित जोड़ों को मंगलमय जीवन की शुभकामनाए दी। समारोह में सीतापुर जिले की विभिन्न नगर पालिकाओं और ब्लाकों से कुल 166 जोड़ों का विवाह संपन्न हुआ। बिसवां ब्लाक से 51 जोड़ें,सकरन ब्लाक से 47,खैराबाद ब्लाक से 34,लहरपुर नगर से 6,बिसवां नगर से 3,सीतापुर नगर से 7,महमूदाबाद नगर से 12 और पैंतेपुर नगर पंचायत से 4 जोड़े इस सामूहिक विवाह समारोह का हिस्सा बने। एक ही स्थान पर इतनी बड़ी संख्या में विवाह संपन्न होना एक महत्वपूर्ण सामाजिक पहल है।समारोह में ग्राम पंचायत अधिकारी,नगर पालिका के अधिशासी अधिकारी और अन्य कर्मचारी भी मौजूद रहे,जिन्होंने इस समारोह को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस मौके पर मुख्य अतिथि बिसवां विधायक निर्मल वर्मा ने कहा ऐसे आयोजन न केवल दांपत्य जीवन की शुरुआत के लिए एक अवसर है। बल्कि ऐसे आयोजनों से समाज में समरसता और सहयोग की भावना को भी बढ़ावा मिलता है। मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह समारोह की सफलता इस बात का प्रमाण है कि जब समाज एकजुट होकर कार्य करता है तो प्रत्येक कठिनाइयों को आसानी से पीछे छोड़ देता है। इस प्रकार के समारोहों से सामाजिक सौहार्द बढ़ता है और नई पीढ़ी को एक सकारात्मक संदेश मिलता है कि विवाह एक पवित्र बंधन है,जो न केवल दो व्यक्तियों का बल्कि दो परिवारों और दो समुदायों का मिलन भी होता है। श्री वर्मा ने आगे कहा कि भाजपा सरकार बेटी पढ़ाओ बेटी बचाओ का नारा ही नही देती बल्कि उसे धरातल पर उतारने का काम करती है। जो आज इस समारोह में देखने को मिल रहा है। इस मौके पर खंड विकास अधिकारी सुमित सिंह, सकरन व खैराबाद के खंड विकास अधिकारी,अधिशाषी अधिकारी बिसवां नीलम चौधरी,आशीष यादव,सौरभ शुक्ला,जेई समरा सईद,आशीष सिंह, महेन्द्र सिंह आदि के साथ सैकड़ो की संख्या में लोग मौजूद रहे।

सौ वर्ष की महिला में कूल्हे का सफल प्रत्यरोपण ऑपरेशन

स्वतंत्र प्रभात

ब्यूरो प्रयागराज। केंद्रीय चिकित्सालय, उत्तर मध्य रेलवे, प्रयागराज में 100 वर्षीय समय राजकुमारी कलिंदीपुरम राजरूपपुर प्रयागराज निवासी कासफल कूल्हा प्रत्यारोपण किया गया। ज्ञात हो कि, श्रीमती राजकुमारी का एक दुर्घटना में बाये कुल्हे में फ्रैक्चर हो गया था । उनकी इस समस्या के समाधान के क्रम में केंद्रीय चिकित्सालय, उत्तर मध्य रेलवे, प्रयागराज में ऑपरेशन कर कूल्हे का सफल प्रत्यरोपण दिनांक 27-02-2025 को किया गया। यह ऑपरेशन डॉ. एस एस नायक , वरिष्ठ सर्जन द्वारा किया गया, जो भारतीय रेलवे के एक प्रतिष्ठित और सम्मानित सर्जन हैं। इस ऑपरेशन की सफलता से श्रीमती समय राजकुमारी के परिवार को बहुत राहत मिली है। डॉ. एस एस नायक और उनकी टीम को इस सफल ऑपरेशन के लिए चिकित्सा निदेशक डॉ संजीव कुमार हन्डू ने बधाई दी ढ्ढ इस ऑपरेशन में वरिष्ठ निश्चेतना विशेषज्ञ डॉ अलोक यादव, डॉ अशरा , और मंजू देवी सोनकर मुख्य नर्सिंग अधीक्षक , नर्सिंग अधीक्षक प्रीती , नर्सिंग अधीक्षक हरीश कुमार शर्मा,ड्रेसर अमित , हॉस्पिटल असिस्टेंट रेखा सिंह, मूल चन्द , राजेंद्र कुमार तिवारी व रोमेश कुमार आदि ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

बीएल वर्मा छात्रवृत्ति योजना से छात्रों के ख्वाबों में लगेंगे पंख

प्रो सुधाकर वर्मा के पिताजी की स्मृति कार्यक्रम में बोले विधायक

स्वतंत्र प्रभात

सिधौली सीतापुर। बीएल वर्मा छात्रवृत्ति योजना गरीब बच्चों के लिए उच्च शिक्षा हेतु द्वार खोलेगी। इस योजना से छात्रों के ख्वाबों में पंख लगेंगे। जो देश की प्रगति में वरदान साबित होगी। यह बात बी एल वर्मा छात्रवृत्ति योजना के विमोचन के अवसर पर सिधौली के न्यू वे पब्लिक स्कूल में बतौर मुख्य अतिथि क्षेत्रीय विधायक मनीष रावत ने लोगों को सम्बोधित करते हुए कही। उन्होंने आगे कहा कि यह योजना लखनऊ विश्वविद्यालय महाविद्यालय विकास परिषद में असिस्टेंट डीन प्रो. सुधाकर वर्मा द्वारा अपने पूज्य पिताजी श्री बी.एल. वर्मा की स्मृति में प्रारंभ की गई है। इस योजना का मुख्य उद्देश्य आर्थिक रूप से कमजोर लेकिन मेधावी विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए आर्थिक सहायता प्रदान करना है। हमारे क्षेत्र में कई ऐसे प्रतिभावान छात्र हैं, जो 90त्न से अधिक अंक प्राप्त करने के बावजूद आर्थिक कठिनाइयों के कारण उच्च शिक्षा ग्रहण नहीं कर पाते। इस छात्रवृत्ति योजना से उन्हें संजीवनी मिलेगी। मैंने भी व्यक्तिगत रूप से कई विद्यार्थियों की आर्थिक सहायता की है, और मुझे खुशी है कि सुधाकर वर्मा जी ने इस दिशा में एक ऐतिहासिक पहल की है। यह योजना निश्चित रूप से जरूरतमंद छात्रों के लिए वरदान साबित होगी। विशिष्ट अतिथि शिक्षाविद आर.डी. वर्मा ने कहा जब कोई व्यक्ति अपने पिता की स्मृति में समाज और विद्यार्थियों के हित में ऐसा कार्य करता है, तो वह अत्यंत अभिनंदनीय होता है। यह योजना निश्चित रूप से जनपद के विद्यार्थियों के लिए लाभदायक सिद्ध होगी और उन्हें उच्च शिक्षा ग्रहण करने का अवसर प्रदान करेगी। छात्रवृत्ति योजना के संस्थापक प्रो. सुधाकर वर्मा ने कहा कि इस योजना का मुख्य उद्देश्य जनपद सीतापुर के विद्यार्थियों को धन के अभाव में शिक्षा से वंचित न होने देना है। उन्होंने कहा हमारी कोशिश है कि किसी भी प्रतिभाशाली विद्यार्थी की शिक्षा आर्थिक कारणों से बाधित न हो। इस छात्रवृत्ति योजना के तहत छात्रों का चयन पूरी तरह से योग्यता आधारित होगा। इसके लिए एक टेस्ट आयोजित किया जाएगा, जिसमें विद्यार्थियों को ऑनलाइन या ऑफलाइन आवेदन करना होगा। टेस्ट के आधार पर मेरिट सूची तैयार की जाएगी और उसी के अनुसार छात्रवृत्ति प्रदान की जाएगी। शिक्षा जगत से जुड़े अन्य गणमान्य व्यक्तियों की प्रतिक्रिया नंद किशोर कैलाश चंद्र महाविद्यालय के संस्थापक राकेश कुमार ने कहा कि इस योजना के माध्यम से मेधावी विद्यार्थियों को आगे बढ़ने का सुनहरा अवसर मिलेगा। महाविद्यालय के निदेशक श्री संतोष कुमार ने कहा कि ÷इस योजना का जितना अधिक प्रचार-प्रसार किया जाएगा, उतने ही अधिक विद्यार्थी इसका लाभ प्राप्त कर सकेंगे। कार्यक्रम का संचालन करते हुए प्रवक्ता चंद्रशेखर प्रजापति ने कहा कि प्रो. सुधाकर वर्मा विद्यार्थियों के हित में सदैव नए-नए नवाचार करते रहते हैं, और यह योजना निश्चित रूप से जनपद सीतापुर के लिए एक ऐतिहासिक उपलब्धि है।आवेदन प्रक्रिया और परीक्षा विवरण इच्छुक विद्यार्थी ऑनलाइन/ऑफलाइन माध्यम से आवेदन कर सकते हैं। एक योग्यता परीक्षा आयोजित की जाएगी। परीक्षा के आधार पर मेरिट सूची तैयार की जाएगी। चयनित विद्यार्थियों को बी.एल. वर्मा छात्रवृत्ति योजना के अंतर्गत प्रति माह छात्रवृत्ति प्रदान की जाएगी। बी.एल. वर्मा छात्रवृत्ति योजना एक ऐतिहासिक कदम है, जो न केवल विद्यार्थियों के भविष्य को उज्ज्वल बनाएगी, बल्कि समाज में शिक्षा के महत्व को भी बढ़ावा देगी। इस योजना से जुड़ी विस्तृत जानकारी प्राप्त करने एवं आवेदन करने के लिए इच्छुक विद्यार्थी संबंधित महाविद्यालयों या आयोजकों से संपर्क कर सकते हैं। इस अवसर? पर पुष्पेंद्र सिंह, प्रबंधक सज्जाक हुसैन, विमल राजपूत, मोहम्मद सलमान, पूजा सिंह वर्मा, अशफाक, सहित तमाम मौजूद रहे।

पंच कैलाशी शिव साधिका साधना दीदी द्वारा आयोजित किया गया विशाल भंडारा

स्वतंत्र प्रभात

बिसवा सीतापुर। हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी पंच कैलाशी शिव साधिका साधना बाजपेयी दीदी द्वारा महाशिवरात्रि पावन पर्व के उपलक्ष्य में भोले नाथ शिव के रुद्रांभिषेक व विशाल भंडारे का आयोजन अपने निज निवास वार्ड कैथी टोला बिसवा आवास पर किया गया। पंच कैलाशी शिव साधिका साधना दीदी ने प्रभु शिव जी का जलाभिषेक,चंदन, अक्षत,फूल,माला,दूध,दही, शहद,अबीर - गुलाल,मेवा,मिष्ठान, वस्त्र आदि से विधिवत मंत्रोंचार के साथ रूद्राभिषेक किया। विशाल भंडारे का शुभारंभ कन्याओं एवम ब्राहमनों को भोजन कराकर, दान दक्षिणा भेंट कर किया। पंच कैलाशी साधना दीदी ने भंडारे में विभिन्न जनपदों से पधारे शिव भक्तों को प्रसाद देकर आशीर्वाद प्रदान किया। विशाल भंडारे के सफल आयोजन में अरुण मिश्रा, उषा किरण मिश्रा, डॉ. नलिन मिश्रा,श्रीमती शशि मिश्रा,रमाकांत मिश्रा,बेबी मिश्रा,अजय बाजपेयी, गीता बाजपेयी,संजय बाजपेयी, अक्षय कौशल बाजपेयी, सविता बाजपेयी, अश्वनी छोटू बाजपेयी,संध्या बाजपेयी,रिचा मिश्रा,हेमा मिश्रा,यति शिप्रा मिश्रा,प्रिया बाजपेयी,अंकित मिश्रा,मांशी बाजपेयी,सूरज बाजपेयी, शिवांश बाजपेयी,नव्या बाजपेयी आदि का विशेष योगदान रहा।

प्रथम पड़ाव के परिक्रमार्थियों पर हुई पुष्प वर्षा अंग वस्त्र भेंट कर सभी को किया रवाना

स्वतंत्र प्रभात

मिश्रिख सीतापुर । हर वर्ष परंपरागत रूप से महर्षि दधीचि की स्मृति में फाल्गुन मास के दौरान होने वाला 84 कोसी धार्मिक होली परिक्रमा मेला कल अमावस्या स्नान के साथ आज प्रतिपदा तिथि को नैमिषारण्य के पहला आश्रम के महंत नारायण दास द्वारा सुबह भोर होते ही डंका बजाए जाने के साथ ही रामाध्वनि के जय घोष के साथ संत महंतों मठाधीशों , पीठाधीशों के साथ ही धर्मावलंबी नर नारियों द्वारा हर्षोल्लास के साथ यह परिक्रमा शुरू कर दी गई है । बताते चलें कि यह धार्मिक परिक्रमा 10 बाहरी पड़ाव का भ्रमण करता हुआ दशमी तिथि को रात्रि के दौरान अधिकांशतः मिश्रित आ जाता है । शेष बचे परिक्रमार्थी चित्रकूट पड़ाव से भोर होते ही मिश्रित आ जाते हैं। जहां एकादशी तिथि को सभी परिक्रमार्थी महर्षि दधीचि मंदिर और दधीच कुंड तीर्थ की पंचकोसी परिक्रमा प्रारंभ कर देते हैं। जो पूर्णिमा तिथि तक निरंतर 5 दिन जारी रहती है। ज्ञातव्य हो कि आज पहला आश्रम से डंका बजते ही लाखों परिक्रमार्थियों द्वारा प्रथम पड़ाव द्वारकाधीश स्थान कोरौना के लिए प्रस्थान कर गई है। रास्ते में पड़ने वाले कस्बा औरंगाबाद के शुरुआत में ही यहां के निवासी सनातन और हिंदू धर्म में आस्था रखने वाले शफकत अली उर्फ मोनू ने अपने आवास के सामने सभी परिक्रमार्थियों पर पुष्प वर्षा करते हुए उनका स्वागत ही नहीं किया बल्कि अंग वस्त्र और बूंदी का स्वल्पाहार कराते हुए उन्हें प्रथम पड़ाव कोरौना के लिए रवाना किया।

अल्प संख्यक समुदाय में जन्म लेने के बावजूद भी सनातन धर्म में अटूट आस्था

क्षेत्रीय विधायक रहे स्वर्गीय ओमप्रकाश गुप्ता इनके पिता कौशर अली के नजदीकी मित्र थे । इसी मित्रता के चलते मोनू और शफकत अली उनके निकट पहुंचे और उनके सानिध्य में ही रहकर सीतापुर अपनी शिक्षा की शुरुआत की । स्वर्गीय ओमप्रकाश गुप्ता हनुमान जी के अनन्य भक्त थे । उन्हीं के साथ ही मोनू भी हिन्दू मंदिरों में पूजन अर्चन के लिए जाया करते थे । बाल्य काल से ही मोनू के अंदर हिंदू धर्म के देवी देवताओं के प्रति अटूट आस्था जागृत हुई । जो आज भी चली आ रही है । पूर्व में मोनू द्वारा ग्राम हीरापुर में दो मंदिरों का निर्माण कराकर धार्मिक प्रांण प्रतिष्ठा कराई गई । साथ ही कई अन्य मंदिरों और देवस्थानों का भी जीर्णोध्दार करा चुके हैं । इससे यह स्पष्ट होता है । कि अल्पसंख्यक समुदाय में जन्म लेने के साथ ही हिंदू धर्म के प्रति उनकी अटूट आस्था बनी हुई है।

पं0दीनदयाल उपाध्याय स्मृति अर्न्तप्रान्तीय क्रिकेट प्रतियोगिता सीजन-4 की विजेता बनी ज़ैद इलेवन गोपालगंज

स्वतंत्र प्रभात

रायबरेली । सतांव गन्ना काँटा मैदान में आयोजित हो रही पं0दीन दयाल उपाध्याय स्मृति अर्न्तप्रान्तीय क्रिकेट प्रतियोगिता सीजन-4 का फाईनल मैच शनिवार को के0पी0गार्डेन लखनऊ और जैद इलेवन गोपालगंज के मध्य खेला गया। मुख्य अतिथि उत्तराखण्ड राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री रमेश पोखरियाल निशंक ने फाईनल मैच को देख रहे हजारों दर्शकों और खिलाड़ियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि ऐसी प्रतियोगिताओं के आयोजन से क्षेत्र के युवाओं को प्रेरणा मिलती है और आगे चलकर वही युवा जिले, प्रदेश व देश के लिए खेलकर अपना और अपने क्षेत्र का नाम रोशन करते है। पूर्व मुख्यमंत्री ने प्रतियोगिता के आयोजक उमेश प्रताप सिंह की ऐसे भव्य आयोजन के लिए सराहना की और उनसे यह भी कहा कि यदि उन्हे क्षेत्र में जमीन उपलब्ध करा दी जाय तो वह मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से व्यक्तिगत अनुरोध करके एक स्टेडियम का निर्माण कराने का प्रयास करेंगें ताकि भविष्य में ऐसी प्रतियोगिता उसी स्टेडियम में आयोजित हो। फाईनल मुकाबला निर्धारित 15-15 ओवरों का खेला गया।टॉस जीतकर बल्लेबाजी करने उतरी जैद इलेवन गोपालगंज की टीम ने निर्धारित 15 ओवरों में 9 विकेट खोकर 194 रन बनाये। जैद इलेवन की तरफ से रंजीत यादव ने 40 गेंदों में 85 रनों की शानदार पारी खेली। 195 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी केपी गार्डेन लखनऊ की टीम के बल्लेबाज रनों की गति बढ़ाने के चक्कर में नियमित अन्तराल पर आउट होते रहे और पूरी टीम 146 रनों के स्कोर पर ही ढ़ेर हो गई। 40 गेंदों में 85 रनों की बेहतरीन पारी के लिए जैद इलेवन के ओपनर बल्लेबाज रंजीत यादव को मैन ऑफ द मैच चुना गया। मुख्य अतिथि पूर्व मुख्यमंत्री रमेश पोखरियाल निशंक ने विजेता टीम के कप्तान धीरज सिंह को 251000 रुपये की चेक व विजेता ट्राफी और उपविजेता टीम के कप्तान श्रेयश बाजपेई को 151000 रुपये की चेक और ट्रॉफी प्रदान की। राहुल कोबरा को प्रतियोगिता में शानदार प्रदर्शन के लिए मैन ऑफ द सीरीज के उपहार स्वरूप एक चमचमाती हीरों एचएफ डीलक्स मोटरसाईकिल प्रदान की गई। फाईनल मैच को देखने के लिए हजारों दर्शकों के साथ मुख्य अतिथि रमेश पोखरियाल, विशिष्ट अतिथि राजेश बाजपेई, उदयभान सिंह जेडी सिहसमेत कमेटी के सभी सदस्य मौजूद रहे। प्रतियोगिता के आयोजक उमेश प्रताप सिंह ने सभी आगन्तुको के प्रति आभार प्रकट करते हुए हर वर्ष प्रतियोगिता को और अधिक भव्यता के साथ आयोजित कराने का विश्वास दिलाया।

समाज सुधारक संत गोडगे का मनाया गया जयंती

स्वतंत्र प्रभात

मनकापुर (गोंडा)। युवा रजक संघ गोण्डा के तत्वाधान में राजेश चौधरी उर्फ गुड्डू कनौजिया की अध्यक्षता में 19वीं सदी के महान समाज सुधारक संत गाडगे जी महाराज की 149वीं जयंती गुरु कृपा मैरिज हॉल भोपतपुर में धूमधाम से मनाई गई। इस अवसर पर उपस्थित कार्यकर्ताओं एवं पदाधिकारियों ने संत गाडगे जी द्वारा किए गये कार्यों पर चर्चा करते हुए उनकी विचारधारा को आम जनमानस तक पहुंचाने का संकल्प लिया ।जयंती समारोह को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि विधायक गौरा प्रभात वर्मा ने कहा कि संत गाडगे जी मानवता के सच्चे हितैषी एवं सामाजिक समानता के द्योतक थे। संत गाडगे जी ने अपने जीवन, विचार एवं कार्यों के माध्यम से समाज एवं राष्ट्र के सम्मुख अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत किया। संत गाडगे ने अपने जीवन काल में लगभग 60 संस्थाओं स्कूल, धर्मशाला, गौशाला, छात्रावास, अस्पताल, विश्रामालय, वृद्ध आश्रम आदि का निर्माण कराया।अपने सम्बोधन के दौरान उन्होंने विधानसभा गौरा में सन्त गाडगे महाराज के नाम से अतिशीघ्र एक तोरण द्वार बनवाने व लोगों की मांग पर उचित स्थान पर भव्य मूर्ति स्थापित करने का आश्वासन दिया।विशिष्ठ अतिथि मोती लाल कन्नौजिया ने कहा कि गाडगे बाबा आजीवन सामाजिक अन्यायों के खिलाफ संघर्षरत रहे तथा अपने समाज को जागरूक करते रहे। उन्होंने सामाजिक कार्य और जनसेवा को ही अपना धर्म बना लिया था। वे व्यर्थ के कर्मकांडों, मूर्तिपूजा व खोखली परम्पराओं से दूर रहे। जाति प्रथा और अस्पृश्यता को बाबा सबसे घृणित और अधर्म कहते थे।संत गाडगे जी गौतम बुद्ध की तरह पीड़ित मानवता की सहायता ,समाज सेवा के लिए गृहत्याग किया। क्षेत्रीय अध्यक्ष अपना दल एस देवीपाटन मंडल राकेश वर्मा ने गाडगे बाबा के स्वच्छता के संदेश को अपनाने, कर्ज लेने से बचने और शिक्षा को घर-घर पहुंचाने का संकल्प लिया।कार्यक्रम का संचालन पूर्व सदस्य जिला पंचायत अभिमन्यु पटेल ने किया। इस मौके पर वीरेंद्र कन्नौजिया, जिलाध्यक्ष अपना दल एस राम दीन वर्मा, परशुराम वर्मा, धर्मेन्द्र चौधरी, अर्जुन कन्नौजिया, राम नरेश पटेल, गौरव आर्या, गोविंद कन्नौजिया, वीरेंद्र कनौजिया, विक्रम वर्मा, आदि उपस्थित रहे।

संक्षिप्त ख़बरें

जनसामान्य की शिकायतों के त्वरित निस्तारण हेतु जनपद की चारों तहसीलों में आयोजित हुआ संपूर्ण समाधान दिवस

अमेठी। शासन के निर्देशानुसार जन सामान्य की शिकायतों के त्वरित निस्तारण के उद्देश्य से जनपद की चारों तहसीलों में संपूर्ण समाधान दिवस का आयोजन किया गया। जिसमें तहसील गौरीगंज में पुलिस अधीक्षक अपर्णा रजत कौशिक व मुख्य विकास अधिकारी सूरज पटेल, तहसील अमेठी में अपर जिलाधिकारी न्यायिक दिनेश कुमार मिश्रा, तहसील मुसाफिरखाना व तहसील तिलोई में संबंधित उपजिलाधिकारी ने जन सामान्य की शिकायतों को सुना एवं उनके निस्तारण हेतु संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए। संपूर्ण समाधान दिवस के दौरान तहसील गौरीगंज में 12 शिकायतें में प्राप्त हुई जिनमें से 03 शिकायतों का मौके पर निस्तारण किया गया, तहसील अमेठी में 24 शिकायत में प्राप्त हुई जिनमें जिनमें से 02 शिकायतों का मौके पर निस्तारण कराया गया, तहसील तिलोई में 27 शिकायतें प्राप्त हुई जिनमें से 3 शिकायतों का मौके पर निस्तारण कराया गया तथा तहसील मुसाफिरखाना में 18 शिकायत प्राप्त हुई जिनके निस्तारण हेतु पुलिस व राजस्व की संयुक्त टीमें क्षेत्र में भेजी गई।

अमेठी पुलिस ने 5 लाख रूपये से अधिक साइबर अपराध में गुम पैसे लौटवाएं

अमेठी। शनिवार को अमेठी पुलिस ने जिले में साइबर अपराध के तहत फरवरी माह में धोखाधड़ी कर आम जनमानस के बैंक खातों से क्रेडिट कार्ड/ डेबिट कार्ड इत्यादि के माध्यम से निकाले गये ,5 लाख 8 हजार 5 सौ 93 रूपया वापस लौटाएं। साइबर अपराध के तहत शिकार हुए बैंक खाता धारकों को अपना पैसा पाकर बहुत खुश हुए। इस अपराध को रोकने में सफल पाली खेलने वाली तेजतर्रार पुलिस अधीक्षक अमेठी अपर्णा रजत कौशिक व प्रभारी निरीक्षक कंचन सिंह साइबर क्राइम थाना जनपद अमेठी सहित पूरी टीम का सहयोग रहा।

तमंचे के साथ युवक का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल

लालगंज (रायबरेली)। पुलिस प्रशासन की लाख कड़ाई के बावजूद क्षेत्र में असलहों का प्रदर्शन थमने का नाम नहीं ले रहा है। इसी तरह का एक मामला लालगंज कोतवाली क्षेत्र का बताया जा रहा है। जिसमें एक युवक की रील तमंचे के साथ वायरल हो रही है। हांलांकि स्वतंत्र प्रभात समाचार पत्र वायरल वीडियो की पुष्टि नहीं करता है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर वायरल पोस्ट में युवक कमर में तमंचा लगाए दिख रहा है। स्टेटस में लिख रखा है कि कर्म नहीं कांड करो तभी तो दुनिया याद करेगी। रील के बैकग्राउंड में चल रहा पंजाबी गाना भी युवक के भौकाली मिजाज को बयां कर रहा है। चौदह सेकंड के वायरल वीडियो में दिखाई दे रहा युवक लालगंज कोतवाली क्षेत्र के पूरे बैजू मजरे रणगांव का रहने वाला बताया जा रहा है। इंस्पेक्टर संजय कुमार सिंह ने बताया कि युवक के कमर में लगी वस्तु तमंचे जैसी नहीं लग रही है। फिर भी पुलिस टीम लगाकर इस संबंध में जानकारी ली जा रही है।

सड़क खराब, राहगीर परेशान

सिद्धार्थनगर। उसका बाजार क्षेत्र के उसका धानी सड़क के बेलसड़ मोड़ से करमा गांव को जाने वाली सड़क पर गिट्टी डालकर छोड़ दिया गया है। इससे राहगीरों को आवागमन में काफी दिक्कत हो रही है। यह सड़क महराजगंज और सिद्धार्थनगर जनपद को जोड़ती है। सड़क पर धूल गर्दा उड़ने से लोग परेशान है। क्षेत्र के विरेंद्र पाण्डेय, गणेश, हनुमत आदि ने सड़क मरम्मत की मांग की है।

हर घर जल हर घर नल योजना के तहत 2028 तक पूरा कर लिये जायेंगे टोटी व पानी की टंकी निर्माण कार्य के सभी अधूरे कार्य

स्वतंत्र प्रभात

अमेठी। विकास खंड संग्रामपुर में हर जल पहुंचाने के लिए हर घर जल हर घर नल योजना के तहत कार्य किया जा रहा है। जिसमें पानी की टंकी बनाने का निर्धारित समय पूरा होने के बाद भी टंकियां नहीं बन पाई है। जबकि जानकारी के अनुसार इस योजना के तहत काम पूरा करने की अवधि 12 महीने ही थी। लेकिन निर्धारित समय में कार्यदाई संस्था कहीं बाउंड्री वॉल बना पायी है तो कहीं अभी नींव ही रखी जा रही है। वहीं लोगों का कहना है कि टंकी निर्माण से पहले गांव की गलियों में बने रास्ते को खोदकर पाइपलाइन बिछाई गई है। जिसके कारण रास्ता खराब हो गया लेकिन जिस मंशा से पाइप लाइन बिछाई गई थी उसका लाभ सही तरीके से अभी तक नहीं मिला है। वहीं संग्रामपुर में लगभग 22 से 23 हजार घरों में इस योजना के तहत टोटीयां लगाने का प्रस्ताव मिला था लेकिन आज तक इस योजना का संग्रामपुर ब्लॉक के धरातल पर काम समय सीमा से 12 महीने बीत जाने के बाद भी ग्रामीणों को स्वच्छ जल पहुंचाने में ठेकेदार विफल है। वहीं इस पर संग्रामपुर क्षेत्र के ग्रामसभा पतापुर के प्रधान प्रतिनिधि शोले सिंह ने बताया कि हमारे ग्रामसभा के किसी भी पुरवे में शत-प्रतिशत टोंटी नहीं लगाई गई है। और जहां लगाई गई है उस रास्ते पर इनके द्वारा बिछाई गई पाइप के लीकेज के कारण रास्ते पर पानी भरा हुआ है।

वहीं संग्रामपुर क्षेत्र के ही कसारा, शुकुलपुर, गूंजीपुर, सहित बहुत से गांवों में इस योजना का अभी तक बुरा हाल है। वहीं सोनारी कनू प्रधान ने बताया कि हमारे गांव के तीन पुरवे में अभी तक पाइप भी नहीं बिछाई गई है। सरैया कनू, सरैया बड़गांव, नेवादा कनू, बनवीरपुर, भावलपुर, धौरहरा, गोरखापुर, लगभग सभी 37 ग्राम सभा में अभी भी इस योजना के तहत पानी नहीं पहुंचा है। वहीं क्षेत्र में लगभग 2 सौ से साढ़े तीन सौ लाख की लागत से 27 टंकियां बनाई जा रही है जिससे लगभग 22 से 23 हजार परिवारों को हर घर जल हर घर नल

योजना के तहत स्वच्छ जल पहुंचाने की योजना है। लेकिन जमीनी हकीकत देखी जाय तो निर्माण कार्य सभी 27 टंकियों का धरातल पर चल रहा है। लेकिन कुछ को छोड़ कर बाकी टंकी अभी तक पूर्ण नहीं है जिसमें किसी की अभी बाउंड्री बन रही है। वहीं इस क्षेत्र में लगे तकनीकी सहायक सत्यम से जानकारी ली गई तो उन्होंने बताया कि क्षेत्र में 27 पानी की टंकी बनाई जा रही है जिसमें कुछ का निर्माण कार्य चल रहा है और कुछ का कार्य पूरा होने वाला है और उन्होंने बताया पानी की क्षमता के अनुसार 2 से 3.5 करोड़ की लागत से पानी की टंकी का निर्माण कार्य चल रहे है। उन्होंने बताया कि जिस गांव में अभी पाइप लाइन नहीं बिछी है उस गांव में पाइपलाइन बिछाई की मशीन मंगाई गई है जल्द ही पाइपलाइन बिछ जाएगी। उन्होंने यह भी बताया कि 2028 तक के लिए कार्यदाई संस्था द्वारा समय विभाग से लिया जा चुका है। अब 2028 तक हर घर में पानी की टोंटी लग जाएगी।

सड़क पार कर रहे बच्चे को पिकअप वाहन ने मारी टक्कर, मौत

स्वतंत्र प्रभात

पीपरपुर,अमेठी। पीपरपुर थाना क्षेत्र के हारीपुर बाजार में पिकअप वाहन की टक्कर से सड़क पार कर रहे बच्चे की मौत हो गई। इससे परिजनों में कोहराम मच गया। हादसे के बाद चालक गाड़ी छोड़ कर फरार हो गया। हारीपुर गांव निवासी गांव निवासी रामहेत कोरी का हारीपुर में ही हारीपुर रसवादा मार्ग के बगल पानी की टंकी के समीप घर है। करीब दो दिन पहले इनकी बेटी अपनी ससुराल नरहरपुर थाना रामगंज से अपने बारह वर्षीय बेटे अरव के साथ पिता के घर हारीपुर आई थी। शनिवार दोपहर करीब डेढ़ बजे अरव बाजार से सामान लेकर मार्ग पार कर रहा था। इसी बीच तेज रफ्तार में जा रही पिकअप वाहन ने टक्कर मार दी। इससे मासूम उछलकर दूर जा गिरा । यह देखकर लोगों की भीड़ जमा हो गई। परिजनों को सूचना दी गई। राहगीरों व परिजनों दुर्घटना के शिकार बच्चे को एंबुलेंस से जिला अस्पताल सुल्तानपुर ले गए, जहां चिकित्सकों ने बुरी तरह से दुर्घटना ग्रस्त

बच्चे को मृत घोषित कर दिया। प्रभारी निरीक्षक पीपरपुर रामराज कुशवाहा ने बताया कि पूरे मामले में जांच की जा रही है। टक्कर मारने वाला वाहन पकड़ा गया है। चालक की तलाश की जा रही है।तहरीर के आधार पर मुकदमा दर्ज कर मामले की जांच की जायेगी। हारीपुर गांव के लोगों ने बताया कि सुलतानपुर जिला चिकित्सालय के बाद बच्चे का शव लेकर परिजन नरहरपुर गए हैं। इस दर्दनाक घटना को हर सुनने वाला आहत हो जा रहा है।

संस्थागत प्रसव कराने से योजनाओं को मिलता है लाभ - डॉ संतोष सिंह

स्वतंत्र प्रभात

अमेठी। शनिवार को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र संग्रामपुर में प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान के तहत एच आर पी डे के तहत कैंप लगाया गया। इस कैंप के तहत 28 गर्भवती महिलाओं का पंजीकरण किया गया। सभी पंजीकृत गर्भवती महिलाओं का बीपी, शुगर,एचबी, ब्लडप्रेशर व वज़न की जांच की गई। साथ ही संस्थागत प्रसव कराने के लिए प्रेरित किया गया। आयरन की दवा के साथ आयरन की ड्रिप दी गई। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र संग्रामपुर प्रभारी डॉ संतोष सिंह ने बताया कि आज एचआरपी डे के तहत 28 गर्भवती महिलाओं का पंजीकरण किया गया सभी गर्भवती महिलाओं का विशेष स्वास्थ्य परीक्षण किया गया। जिसमें 4 गर्भवती महिला एच आर पी चिन्हित हुई जिनको आयरन की ड्रिप दी गई। इन पंजीकृत महिलाओं में 11 महिलाओं को अल्ट्रासाउंड के लिए चिन्हित किया गया। इन पंजीकृत गर्भवती महिलाओं का बीपी, शुगर,एचबी के साथ ब्लडप्रेशर वजन आदि की जांच की गई । सलाह के रूप में सभी गर्भवती महिलाओं को संस्थागत प्रसव कराने के लिए प्रेरित किया और उन्होंने कहा की उन्हें सरकारी योजनाओं का लाभ आसानी से मिल जाएगा। इस कार्यक्रम में डॉ रुखसार, असिस्टेंट मुकेश कुमार, वार्ड ब्वाय संजय पाठक मौजूद रहें।

संजय गांधी अस्पताल के डाक्टरों ने की हड़ताल, पुलिस बूथ खोले जाने की मांग

मुंशीगंज,अमेठी। जिले के संजय गांधी अस्पताल मुंशीगंज में बीते दो दिन पहले अस्पताल में एक मरीज की मौत के बाद उसके परिजनों के द्वारा अस्पताल परिसर में किए गए तोड़ फोड़ व प्रदर्शन करने के बाद डाक्टरों के ऊपर दर्ज हुऐ मुकदमे से नाराज़ डाक्टरों ने अस्पताल में किया हड़ताल और वही डाक्टरों के मांग है कि अस्पताल परिसर में हम लोगों के इलाज के दौरान दी जाए सुरक्षा, जिससे इलाज के दौरान अचानक होने वाली दुर्घटना व आरोपों से बचा जा सके वहीं उन्होंने कहा कि आये दिन हम लोगो पर फर्जी तरीके से आरोप लगाएं जा रहे हैं और और हम लोगों पर कानूनी कार्यवाही की जा रही है और हम लोगो को राजनीति का शिकार बनाया जा रहा है।

आईएफएफडीसी नैनों उर्वरक पर आधारित फसल विचार गोष्ठी का हुआ आयोजन

हरखूमऊ कृषि वानिकी सहकारी समिति पर हजारों की संख्या में किसान रहे मौजूद

स्वतंत्र प्रभात

शुकुल बाजार अमेठी। हरखूमऊ सहकारी समिति पर नैनो उर्वरक के प्रयोग पर आधारित फसल विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। जहां पर हरखूमऊ कृषि वानिकी सहकारी समिति के सचिव अशोक सिंह द्वारा कराए गए कार्यक्रम में हजारों की संख्या में किसान मौजूद रहे। मुख्य अतिथि के रूप में योगेंद्र कुमार विपणन निदेशक इफको नई दिल्ली, विशिष्ट अतिथि अभिमन्यु राय राज्य विपणन प्रबंधक इफको लखनऊ, माधवी विप्रदास प्रबंध निदेशक आईएफएफडीसी गुरुग्राम शामिल हुई । कार्यक्रम की अध्यक्षता गुरु प्रसाद त्रिपाठी अध्यक्ष आईएफएफडीसी गुरुग्राम ने किया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य नैनो उर्वरकों के प्रयोग को लेकर रहा कार्यक्रम को आयोजन कर्ता अशोक सिंह ने संबोधित करते हुए किसानों को ज्यादा से ज्यादा नैनो उर्वरक के इस्तेमाल के लिए प्रेरित किया। वहीं कृषि विज्ञान केंद्र से आए हुए कृषि

वैज्ञानिकों ने वैज्ञानिक तरीके से खेती करने के उपाय, पशुपालन के फायदे और उनके रखरखाव तथा नैनो उर्वरक के फायदे पर विस्तृत प्रकाश डाला। मुख्य अतिथि योगेंद्र कुमार ने भी किसानों को संबोधित करते हुए वैज्ञानिक तरीके से खेती करने परंपरागत तरीके से हटते हुए बागवानी और फल व फूल की खेती के लिए तथा नैनो उर्वरक के प्रयोग पर विस्तृत प्रकाश डालते हुए किसानों को संबोधित किया। माधवी विप्रदास ने भी किसानों को संबोधित करते हुए खासकर सभा में उपस्थिति मातृ शक्तियों को संबोधित करते हुए विभिन्न बिंदुओं पर विस्तृत प्रकाश डाला। वही कार्यक्रम में मुन्ना जादूगर द्वारा भी किसानों को जागरूक किया गया तथा अपनी कला का प्रदर्शन किया। कार्यक्रम के आयोजन कर्ता सचिव अशोक सिंह द्वारा उपस्थित सभी किसानों के उठने बैठने और जलपान का उत्तम प्रबंध कराया गया था, सभी किसानों उच्च कोटि की सब्जी बीज किट भी उपलब्ध कराई गई। इस दौरान प्रमुख रूप से भाजपा जिला उपाध्यक्ष गिरीश चंद्र शुक्ला, उद्योगपति एवं वरिष्ठ भाजपा नेता महेंद्र विजय सिंह, जसवंत सिंह, जसकरन सिंह, शंकर बक्स सिंह,उदय नारायण मिश्रा, समाजसेवी पीके तिवारी, सहित हजारों की संख्या में किसान मौजूद रहे।

गड्ढों में तब्दील ओसाह-गूढ़ा सम्पर्क मार्ग को लेकर फूटा ग्रामीणों का गुस्सा

आक्रोशित ग्रामीणों ने पीडब्ल्यूडी विभाग के खिलाफ किया प्रदर्शन

स्वतंत्र प्रभात

शिवगढ़,रायबरेली। वर्षों से गड्ढों में तब्दील क्षेत्र के गूढ़ा- ओसाह सम्पर्क मार्ग को लेकर शनिवार को शायंकाल भौसी में ग्रामीणों का गुस्सा फूट पड़ा आक्रोशित ग्रामीणों ने पीडब्ल्यूडी विभाग के खिलाफ नारेबाजी करते हुए जमकर विरोध प्रदर्शन किया। प्रदर्शनकारियों में शामिल भौसी प्रधान प्रतिनिधि अरुण रावत, रमेश कुमार,उत्तम पटेल,जय प्रकाश विश्वकर्मा,अजय कुमार,जागेश्वर आदि लोगों का कहना था गूढ़ा - ओसाह सम्पर्क मार्ग पिछले कई सालों से गड्ढों में तब्दील है जिसके चलते स्कूली छात्र-छात्राएं एवं राहगीर आए दिन दुर्घटना का शिकार होते रहते हैं, ग्रामीणों ने

पीडब्ल्यूडी विभाग के खिलाफ नाराजगी जताते हुए जल्द से जल्द सड़क की मरम्मत कराने की मांग की है। इस सम्दर्भ में जब पीडब्ल्यूडी विभाग के जेई आलोक चौधरी से बात की गई तो उन्होंने बताया कि ओसाह से भौसी तक सड़क का नवीनीकरण हो गया था। भौसी से गूढ़ा तक 3600 मीटर सड़क का नवीनीकरण होना है, नवीनीकरण के लिए रोड़ सेंशन होने के बाद टीएस बनाकर भेजा गया था किन्तु प्लांट का रेट बढ़ने की वजह से शासन द्वारा दोबारा स्टीमेट मांगा गया था। दोबारा स्टीमेट बनाकर भेज दिया गया,ग्रामीणों की समस्या को दृष्टिगत रखते हुए जल्द ही गड्ढों को भराया जाएगा।

इस्लाम धर्म में सबसे पाक और बरकत का महीना होता है रमजान

स्वतंत्र प्रभात

महाराजगंज रायबरेली /रमजान इस्लाम धर्म का सबसे पाक और बरकतों से भरा महीना माना जाता है। इस महीने में हर मुसलमान रोजा रखता है, इबादत करता है अल्लाह से रहमत की दुआ करता है. ये महीना सिर्फ भूखे-प्यासे रहने का नाम नहीं, बल्कि सब्र, रहम और सदका दान देने की परंपरा होती है रमजान के महीने में किए गए ने कामों के बदले 70 गुना ज्यादा मिलता है ऐसा पाक किताब कुरान में लिखा है रमजान के महीने में 10 राते बेहद खास होती है जिसे शबे कादर की रात कहा जाता है यह रात साल के महीना से भी ज्यादा बरकतों वाली मानी जाती है रमजान का चांद नजर आते ही दुनिया भर के मुसलमान खुशी से झूम उठते हैं. ये महीना न सिर्फ इबादत का, बल्कि रिश्तों में और ज्यादा मोहब्बत और भाईचारे को बढ़ाने का भी होता है । रमजान का महीने गुनाहों की माफी

मांगने और नेक बनने का मौका देता है रमजान का एक अहम पहलू यह भी है कि यह गरीबों और जरूरतमंदों के दर्द समझने का मौका देता है रमजान हमें खुदा से जोड़ने और अपने गुनाहों से तौबा करने का सबसे खूबसूरत मौका देता है. इस पाक महीने में खास नमाज तराबी भी पढ़ाई जाती है अलग-अलग मस्जिदों में यह नमाज अदा की जाती है जिसमें मुसलमान व्यक्ति ज्यादा से ज्यादा एकत्रित होकर नमाज पढ़ते हैं।

सहेलियों संग पढ़कर घर लौट रही छात्रा को बाइक सवार तीन युवकों ने पीटा

छात्रा से मारपीट के मामले तीन युवकों के विरुद्ध मुकदमा दर्ज

लालगंज (रायबरेली)। कस्बे के साकेत नगर स्थित पशु चिकित्सालय के निकट शुक्रवार को स्कूल से घर जा रही छात्रा से मारपीट के मामले में पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है। युवकों ने बिटिया को पीटकर घायल कर दिया था। पीड़िता की तहरीर पर पुलिस ने दो नामजद व उनके एक अज्ञात साथी के विरुद्ध मामला दर्ज कर कार्रवाई शुरू कर दी है। शुक्रवार को समय करीब साढ़े तीन बजे सहेलियों संग पढ़कर घर लौट रही छात्रा को बाइक सवार तीन युवकों ने रास्ते में रोक लिया। आरोपी गाली गलौज करते हुए उसकी पिटाई कर दी और धमकाते हुए मौके से फरार हो गए। इंस्पेक्टर संजय कुमार सिंह ने बताया कि पीड़ित छात्रा की तहरीर पर पुलिस ने खीरों थाना क्षेत्र के बरहा निवासी वीर प्रताप सिंह, कुंहड़ौरा निवासी आयुष व एक अन्य अज्ञात व्यक्ति पर मुकदमा दर्ज किया है।

गांव के विकास में बाधक बने दबंगों ने योगी के चौमुखी विकास को दी खुली चुनौती, कार्यवाही शून्य

- दबंगों ने उखाड़ा ग्राम प्रधान द्वारा सरकारी धन से लगवाया गया इंटरलॉकिंग खडंजा
- बीडीओ स्तर से नहीं मिला न्याय,ग्राम प्रधान ने तहसील दिवस में पहुंचकर लगाई न्याय की गुहार
- सब कुछ जानकर भी अंजान बन सिर्फ और सिर्फ तमाशाई की भूमिका में नजर आ रहे जिम्मेदार

स्वतंत्र प्रभात

लालगंज (रायबरेली)- सरेनी।कहते हैं कि गांव के विकास के बिना देश का विकास संभव नहीं है।जहां एक तरफ सूबे की योगी सरकार गांव के चौमुखी विकास के लिए कटिबद्ध नजर आ रही है।वहीं दूसरी तरफ गांव के ही कुछ असमाजिक व शरारतीतत्व गांव के विकास में बाधक बने हुए हैं और योगी सरकार के चौमुखी विकास को खुलेआम चुनौती देते नजर आ रहे हैं और जिम्मेदार हैं कि सब कुछ जानकर भी अंजान बने हुए हैं और सिर्फ और सिर्फ तमाशाई की भूमिका में नजर आ रहे हैं।जिम्मेदार ऐसे शरारतीतत्वों पर कार्यवाही तो दूर मामले की जांच तक भी करना या कराना मुनासिब नहीं समझते हैं।एक ऐसा ही मामला प्रकाश में आया है,जहां ग्राम प्रधान द्वारा सरकारी धन से शासन प्रशासन की मौजूदगी में सार्वजनिक रास्ते में इंटरलॉकिंग खड़ंजा लगवाया गया था।आरोप है कि गांव के ही कुछ शरारतीतत्वों ने दो दिन बाद 15-20 बाहरी शरारतीतत्वों को बुलाकर शासन प्रशासन को खुलेआम चुनौती देते हुए ग्राम

प्रधान द्वारा लगवाए गए इंटरलॉकिंग खडंजे को उखाड़ फेंका।इस बाबत उन्हें सरकारी संपत्ति को क्षति पहुंचाने का जरा सा भी भय नहीं रहा।वहीं जब ग्राम प्रधान द्वारा इसका विरोध किया गया तो समूह में आए शरारतीतत्व गालीगलौज कर मारपीट पर आमादा हो गए।मामला विकास खंड सरेनी स्थित ग्राम पंचायत रायपुर का है।जानकारी के मुताबिक ग्राम प्रधान मोहनलाल पुत्र स्व. रामआसरे द्वारा ग्राम पंचायत रायपुर में बाबू शुक्ला के दरवाजे से राजकुमार गौड़ के दरवाजे तक सरकारी धन से इंटरलॉकिंग खडंजा निर्माण का कार्य कराया गया था।ग्राम प्रधान का आरोप है कि गांव के ही सुरेंद्र कुमार शुक्ला,रावेन्द्र कुमार शुक्ला पुत्रगण स्व. प्रेमसागर शुक्ला,मनोज,संतोष उर्फ धीरु पुत्रगण शिवानंद मिश्रा आदि 15-20 अज्ञात लोगों के साथ बीती 25 फरवरी की शाम लगभग साढ़े 5 बजे लाठी डंडा व फावड़ा लेकर आए और इंटरलॉकिंग निर्माण कार्य को उखाड़ कर फेंक दिया,जिससे सरकारी संपत्ति को नुकसान हुआ है।वहीं मेरे द्वारा जब सरकारी संपत्ति को नुकसान पहुंचाने से रोका गया तो दबंगों द्वारा गालीगलौज व मारपीट की गई,साथ ही साथ मुझे व मेरे परिवार को जान से मारने की धमकी दी गई है,जिससे मेरा पूरा परिवार दहशत में है।वहीं ग्राम प्रधान द्वारा बीती 27 फरवरी को पूरे मामले की जानकारी लिखित में खंड विकास अधिकारी को दी गई है बावजूद खंड विकास अधिकारी की तरफ से अभी तक कोई भी प्रभावी विधिक कार्यवाही अमल में नहीं लाई गई है,जो कि खंड विकास अधिकारी की उदासीनता व शिथिलता को दर्शाती है।वहीं ब्लॉक मुख्यालय के मुखिया से न्याय न मिलता देख थक हार कर ग्राम प्रधान मोहनलाल ने शनिवार को तहसील दिवस में शिकायती पत्र देते हुए मनबढ़ दबंगों के खिलाफ विधिक कार्यवाही करते हुए मुकदमा पंजीकृत कराये जाने की गुहार लगाई है।अब देखना अहम होगा कि सरकारी संपत्ति को नुकसान पहुंचाने वाले शरारती तत्वों पर कब व किस प्रकार की कार्यवाही अमल में लाई जाती है, यह तो आने वाला समय ही बताएगा।फिलहाल सरकारी कार्य में बाधक बन सरकारी संपत्ति को नुकसान पहुंचाने के बाद भी कार्यवाही न होने से आरोपी दबंगों के हौंसले बुलंद हैं।

इनकी भी सुनिए- "मामला संज्ञान में आया है।सरेनी पुलिस को मुकदमा पंजीकृत करने व खंड विकास अधिकारी को रिकवरी के लिए निर्देशित किया गया है।", मिथिलेश त्रिपाठी,एसडीएम लालगंज, रायबरेली।

आवश्यकता है
दया सावित्री महिला महाविद्यालय
गाल्हामऊ, हरख बाराबंकी।
(सम्बद्धः डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या)
महाविद्यालय में संचालित स्नातक स्तर पर B.A. व B.Sc. पाठ्यक्रम में प्रवक्ता पद- हिन्दी, अंग्रेजी, शिक्षाशास्त्र, समाजशास्त्र, भूगोल, प्राचीन इतिहास, गृहविज्ञान, वनस्पति विज्ञान, जन्तु विज्ञान, रसायन विज्ञान, भौतिक विज्ञान तथा गणित विषय।
कम्प्यूटर ऑपरेटर/ऑफिस क्लर्क/ प्रयोगशाला सहायक
योग्यता एवं वेतन - यू0जी0सी0 एवं विश्वविद्यालय के नियमानुसार।
इच्छुक अभ्यर्थी अपना आवेदन ई-मेल या स्पीड पोस्ट से विज्ञापन के 15 दिनो के अन्दर सभी शैक्षणिक प्रमाण-पत्रों तथा फोटो सहित भेज सकतें हैं।
College E-mail - dayasavitrimahilamahavidalaya@gmail.com
प्रबन्धक डॉ0रीना मिश्रा
05248-299380

सम्पूर्ण समाधान दिवस, घाटमपुर में जिलाधिकारी ने शिकायती प्रकरणों को सुना

स्वतंत्र प्रभात

कानपुर नगर। जिलाधिकारी जितेन्द्र प्रताप सिंह की अध्यक्षता में तहसील घाटमपुर में 'सम्पूर्ण समाधान दिवस 'का आयोजन किया गया। आज के सम्पूर्ण समाधान दिवस में कुल 421 प्रकरण आये, जिनमें राजस्व विभाग के 198 , पुलिस विभाग के 87 , विकास विभाग के 69 , समाज कल्याण विभाग के 6 , जलकर विभाग के 4 , ट्यूबवेल के 5, विद्युत विभाग के 12, चकबंदी विभाग के 4 कृषि विभाग के 4, पूर्ति विभाग के 12 बैंक के 2 पीडब्ल्यूडी के 2 व नगर पालिका के 116 प्रकरण सुने गये, जिनको जिलाधिकारी द्वारा सम्बन्धित अधिकारियों को इस निर्देश के साथ उपलब्ध करायें गये कि प्रकरणों का समयबद्ध व गुणवत्तापूर्ण निस्तारण कराना सुनिश्चित करायें। सम्पूर्ण समाधान दिवस में प्रार्थिनी सोनी देवी पत्नी नरेश नागर, पिंकी देवी पत्नी बबलू नागर, कुसुमा पत्नी धर्मेन्द्र नागर एवं मंजू देवी पत्नी शेरा नागर निवासी अज्योरी, घाटमपुर द्वारा आवास न मिलने की शिकायत पर मौके पर ही परियोजना निदेशक, जिला ग्रामीण अभियंत्रण विभाग द्वारा जिलाधिकारी को अवगत कराया गया कि उक्त चारो शिकायत कर्ताओं के प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) के अंर्तगत आवास हेतु पात्र हैं तथा उनका सर्वे भी कराया जा चुका है जल्द ही उन्हें आवास मिल जाएगा।

सम्पूर्ण समाधान दिवस में प्रार्थिनी केशकली पत्नी स्व0 छोटेलाल निवासी मोहल्ला कोटद्वार के प्रार्थना का संज्ञान लेते हुये नायाब तहसीलदार घाटमपुर और एस0एच0ओ0, घाटमपुर को आज ही मौके पर जाकर निराकरण कराये जाने के निर्देश दिये। प्रार्थिनी खुशनुमा पत्नी अब्दुल खालिक निवासी मोहल्ला कटरा पूर्वी के शिकायती प्रार्थना पत्र पर ई0ओ0 घाटमपुर व एस0एच0ओ0 घाटमपुर को निर्देश दिया कि आज ही स्वयं देखे। प्रार्थी सुरेशचन्द्र सोनी पुत्र मुन्नूलाल सोनी मोहल्ला कोटद्वार की शिकायती पत्र का संज्ञान लेते हुये जिलाधिकारी ने तहसीलदार घाटमपुर व ईओ घाटमपुर को स्वयं मौके पर जाकर देखने तथा निस्तारण पर विस्तृत आख्या प्रस्तुत करने के निर्देश दिये। प्रार्थी हरिशचन्द्र पुत्र करोड़ी लाल निवासी पतारा, घाटमपुर के प्रार्थना पत्र का संज्ञान लेते हुए एएलसी कानपुर को निर्देश दिये कि आज ही मौके पर जाकर जांच कर निराकरण करायें।

मेडिकल ऑफिसर ने किया ई.एम.टी. ट्रेनिंग का निरीक्षण

स्वतंत्र प्रभात

अलीगढ़। उत्तर प्रदेश 108 एम्बुलेन्स सेवा 102 एवं 108 एंबुलेंस सेवा को और बेहतर बनाने के लिए एंबुलेंस कर्मियों को मण्डल स्तरीय प्रशिक्षण कार्यक्रम मोहनलाल गौतम जिला चिकित्सालय अलीगढ़ पर प्रशिक्षित किया जा रहा है।

इस संबंध में 108 एंबुलेंस सेवा के प्रोग्राम मैनेजर मोहम्मद अरशद ने बताया कि ट्रेनिंग के पहले मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डॉक्टर तैयब खान द्वारा ट्रेनिंग प्रोग्राम का निरीक्षण गया। इस दौरान डॉक्टर तैयब खान ने 108 एवं 102 पर काम करने वाले कर्मचारियों के कार्य कौशल की जानकारी ली। इसके अलावा गर्भवती औरतों और एक्सीडेंटल मरीजों को रेफर केस में अच्छे से देखभाल करते हुए अस्पताल पहुंचाएं, साथ ही अस्पताल पर डॉक्टर को पेशेंट की रास्ते में हुई गतिविधियों तथा किए हुए प्राथमिक उपचार के बारे में सही जानकारी दें। कार्डियक अरेस्ट और चेस्ट पेन के दौरान अपने एंबुलेंस का रिस्पांस टाइम सही रखें और मरीज के पास सही समय पर पहुंचे। हेड इंजरी में पेशेंट को किस तरीके से सही पोजीशन देते हुए एयरवे ब्रीदिंग को उपकरण के माध्यम से मेंटेन करते हुए सुरक्षित पहुंचाना, इन सब बातों पर विशेष चर्चा की हुई। प्रोग्राम मैनेजर मोहम्मद अरशद ने बताया कि द्वारा बताए गए बिंदुओं पर ट्रेनिंग के दौरान विशेष ध्यान दिया जाएगा। ट्रेनिंग में अलग-अलग जनपद अलीगढ़ बुलंदशहर गौतम बुध नगर और गाजियाबाद के ई.एम.टी. शामिल हुए एंबुलेंस सेवा को बेहतर बनाने के लिए लखनऊ से आए ट्रेनर संजीव कुमार, क्वालिटी लीडर प्रशांत कुमार पांडे एवं अभिषेक कुमार , मौजूद रहे।

संक्षिप्त ख़बरें

बोर्ड परीक्षा के मध्य डीएम ने जुहारी देवी कालेज का किया निरीक्षण

कानपुर। यूपी बोर्ड की परीक्षाओं के चलते आज जिलाधिकारी जितेन्द्र प्रताप सिंह ने जुहारी देवी गर्ल्स इंटर कॉलेज का निरीक्षण किया और व्यवस्थाओं का जायजा लिया। इस दौरान उन्होंने कॉलेज में चल रही व्यवस्थाओं का मूल्यांकन किया और आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। आज जनपद में गणित का पेपर संपन्न चल रहे हैं। जिलाधिकारी कक्षाओं में गये और वहां की व्यवस्था देखी।

पांच तक मिलेगा खाद्यान्न

चित्रकूट- जिला पूर्ति अधिकारी आनंद कुमार सिंह ने बताया कि राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम-2013 के अन्तर्गत माह फरवरी के सापेक्ष खाद्यान्न आवंटन की तिथि पांच मार्च तक विस्तारित की गई है। बताया कि लाभार्थियों को फरवरी माह का खाद्यान्न नहीं मिला है, वह अब पांच मार्च तक ई-पॉश मशीन के माध्यम से व मोबाईल ओटीपी एवं पोर्टेबिलिटी के माध्यम से खाद्यान्न प्राप्त कर सकते है।

हासिल की सफलता

चित्रकूट- उत्तर प्रदेश जूनियर हाईस्कूल शिक्षक संघ के अध्यक्ष व कम्पोजिट विद्यालय दुगवां के प्रधानाचार्य शिवसांगर मिश्रा ने बताया कि राष्ट्रीय आय एवं योग्यता आधारित छात्रवृत्ति योजना परीक्षा में उनके विद्यालय के अमित कुमार, मालती, भैरमदीन, कल्लू, राजू प्रसाद, अंशु यादव, सानू देवी व जानकी देवी ने सफलता प्राप्त की है।

ओलावृष्टि में झोपड़ी गिरने से मां की मौत दो बच्चे घायल

स्वतंत्र प्रभात

अलीगढ़। थाना दादों क्षेत्र में गांव अचला नगला में तेज हवा और ओलावृष्टि के साथ बारिश से झोपड़ी अचानक गिरने से चाय बना रही महिला की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि चाय का इंतजार कर रहे बेटा और बेटी घायल हो गए। सूचना पर पहुंची पुलिस ने मृतक को पोस्टमार्टम के लिये भेज दिया औरब्च्चों को गम्भीरावस्था में उपचारहेतु अस्पताल में भर्ती कराया है। गांव अचला नगला निवासी 50 वर्षीय मुन्नी देवी पत्नी प्रेम सिंह झोपड़ी के अंदर अपने बेटा अरविंद व बेटी सुमित्रा के साथ सुबह करीब 8 बजे चाय बना रही थी। अचानक तेज हवा और बारिश से अचानक झोपड़ी गिर गई। झोपड़ी में लगा लोहे का गाटर महिला के सिर पर गिरा। जिससे महिला की मौके पर ही मौत हो गई। हादसे में दोनों बच्चे ईंटों के मलबा के नीचे दब गए। बेटा अरविंद को बमुश्किल बाहर निकाला जा सका। बच्चों की चीख-पुकार सुन ग्रामीणों ने कड़ी मशक्कत के बाद मां मुन्नी देवी व बेटी सुमित्रा को मलबे से बाहर निकाला। जब तक मुन्नी देवी ने दम तोड़ दिया था। ग्रामीणों ने घायल अरविंद व सुमित्रा को छर्रा के एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया। जहां प्राथमिक उपचार के बाद सुमित्रा के हल्की चोट होने के कारण डॉक्टर घर भेज दिया। वही घायल अरविंद का उपचार चल रहा है। सूचना पर पहुंची पुलिस ने मृतका के शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। मृतका अपने पीछे पति, छह बेटी व दो बेटों को रोते-बिलखते छोड़ गई। हादसे के बाद नायब तहसीलदार मयंक गोयल मौके पर पहुंचे और घटनास्थल का निरीक्षण कर बताया पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद आर्थिक सहायता प्रशासन द्वारा दिलाई जाएगी।

डीएम के निरीक्षण में परीक्षा केंद्र पर कोई पुलिस नदारद

● - परीक्षा के समय विद्यालय में प्रबंधक की उपस्थिति गलत - जिलाधिकारी

स्वतंत्र प्रभात

कानपुर। बोर्ड परीक्षा के चलते जिलाधिकारी जितेंद्र प्रताप सिंह ने आज पतारा के किसान इंटर कालेज का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने कई कमियां पाई। जिसके लिए उन्होंने कार्यवाही के निर्देश दिए। आज मैथमेटिक्स का पेपर था। जिलाधिकारी ने बताया कि जब मैं यहां आया तो कोई पुलिस आफिसर परीक्षा केंद्र पर नहीं था जब इंस्पेक्टर से बात की तो तुरंत ही उन्होंने वीरेंद्र प्रताप नाम के पुलिस आफिसर को भेजा, उन्हें यह भी पता चला कि पहले भी पुलिस आफिसर की अनुपस्थिति पाई गई है। उसके लिए उन्होने कहा कि मैं डीसीपी से बात करुंगा कि इनके खिलाफ किस तरह की कार्यवाही हो।

डीएम जैसे ही परीक्षा केंद्र पर पहुंचे तो वहां पर बिना नंबर की एक स्कार्पियो गाड़ी खड़ी थी पता चला कि वह विद्यालय प्रबंधक की है, जब कि परीक्षा के दौरान वहां विद्यालय प्रबंधक को नहीं होना था। परीक्षा के समय केवल केन्द्र व्यवस्थापक की जिम्मेदारी है। उन्होंने कहा कि इसके लिए वह डीआईओएस को निर्देश देंगे कि परीक्षा केंद्र पर इस तरह की गतिविधियां नहीं होनी चाहिए। तथा यह सुनिश्चित किया जाए कि परीक्षार्थियों को किसी तरह की कोई परेशानी नहीं हो। उन्होंने कहा कि यह केन्द्र व्यवस्थापक की व्यवस्था लचर पाई गई है।

सम्पूर्ण समाधान दिवस के पटल पर न लाएं लम्बित वाद: मण्ड़लायुक्त

स्वतंत्र प्रभात

अलीगढ़। आयुक्त अलीगढ़ मण्डल अलीगढ़ संगीता सिंह द्वारा तहसील अतरौली के एनैक्सी सभागार में आयोजित सम्पूर्ण समाधान दिवस का निरीक्षण कर शिकायत निस्तारण की गुणवत्ता को परखा गया। इस मौके पर उन्होंने सम्पूर्ण समाधान दिवस में आए हुए फरियादियों की समस्याओं को सुन उनका गुणवत्तापरक निस्तारण कराने के लिए संबंधित अधिकारियों को संदर्भित कर ससमय निस्तारण के निर्देश दिए। मण्डलायुक्त के कई प्रकरण ऐसे आए जिनमें न्यायालयों में वाद लम्बित हैं, ऐसे प्रकरणों में उन्होंने फरियादियों से अपील करते हुए कहा कि न्यायालयों में विचाराधीन प्रकरणों को सम्पूर्ण समाधान दिवस के पटल पर न लाएं ताकि अन्य फरियादियों व अधिकारियों का समय प्रभावित न हो। सम्पूर्ण समाधान दिवस में नई तहसील क्षेत्र निवासी कलियान सिंह ने खेतों में गटर के गंदे पानी राके जाने की शिकायत के फर्जी निस्तारण के बारे में कहा कि कई बार शिकायत किए जाने के बावजूद फर्जी रिपोर्ट लगाकर निस्तारण कर दिया गया है। इस पर मण्डलायुक्त ने नायब तहसीलदार को स्वयं मौके पर पहुँच शिकायत निस्तारण के निर्देश दिए। सम्पूर्ण समाधान दिवस में एसएसपी संजीव सुमन, सीडीओ प्रखर कुमार सिंह, एसडीएम साहिल कुमार, तहसीलदार रामगोपाल वर्मा, बीडीओ अतरौली वेदप्रकाश, बीडीओ गंगीरी स्मृति सिंह, सीओ अतरौली सर्जना सिंह, अन्य जिला, तहसील व ब्लॉक स्तरीय अधिकारियों व कर्मचारियों द्वारा प्रतिभाग किया गया।

डीएम ने आईटीआई घाटमपुर के कार्यशाला निर्माण पाई कई खामियां

● -निर्माण कार्य मानक के अनुसार नहीं हुआ तो होगी कार्रवाई - डीएम

स्वतंत्र प्रभात

कानपुर। जिलाधिकारी जितेंद्र प्रताप सिंह द्वारा आज राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान, घाटमपुर में निर्माणाधीन नयी कार्यशाला व उसके उन्नयन के कार्य का औचक निरीक्षण किया गया। इस दौरान जिलाधिकारी को निर्माण कार्य में कई खामियां मिलीं, जिन पर डीएम ने कार्रवाई के निर्देश दिए। जिलाधिकारी द्वारा किए गए निरीक्षण के दौरान पाया गया कि परियोजना से संबंधित जो बोर्ड लगाया गया है वह आनन -फानन में आज ही लगाया हुआ प्रतीत हुआ बोर्ड मानक के सापेक्ष बहुत छोटा और जिस पर परियोजना की पूरी जानकारी भी नहीं लिखी थी मुख्य भवन में दिव्यांगों को व्हीलचेयर सहित जाने के लिए बनाया गया रास्ता अत्यंत सकरा मिला, जिस पर से व्हीलचेयर को मोड़ पाना संभव नहीं है इस पर जिलाधिकारी ने उक्त रास्ते को तत्काल चौड़ा करने के साथ-साथ घुमाव देते हुए बनाने के निर्देश दिए।

विद्युत सप्लाई तारों का निरीक्षण करते हुए जिलाधिकारी ने पाया कि कॉपर तारों की क्वालिटी निम्न कोर्ट की है। इस पर जिलाधिकारी ने नाराजगी व्यक्त करते हुए उक्त विद्युत तारों का सैंपल लेकर लेबोरेटरी में जांच करवा कर संबंधित के विरुद्ध कार्रवाई करने के निर्देश दिए। प्रथम तल में निर्माणाधीन ममटी व पिलर के अंदर कहीं - कहीं सीमेंट के साथ-साथ पान मसाले के खाली पैकेट और लकड़ी के टुकड़े भरे मिले। साथ ही, सरिया की क्वालिटी भी बहुत निम्न थी। इसके अलावा निर्माणाधीन कार्यशाला के अंदर लगे शटर की हालत ठीक नहीं रही, उसमें जंग और धूल जमी मिली। इस पर जिलाधिकारी द्वारा रोष व्यक्त करते हुए संबंधित एपीएम आर. के. गुप्ता का स्पष्टीकरण लेते हुए उनके द्वारा किए गए अन्य कार्यों की जांचकर आवश्यक कार्रवाई करने के निर्देश दिए गए। निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी निर्देशित करते हुए कहा कि निर्माण कार्य में किसी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। जो भी संस्था या अधिकारी सरकारी मानक के अनुसार कार्य नहीं करेगा, उसके विरुद्ध निश्चित ही अनुशासनात्मक और विधिक कार्रवाई सुनिश्चित कराई जाएगी।

जिलाधिकारी व पुलिस अधीक्षक द्वारा न्यायालय उप जिलाधिकारी, तहसीलदार, नायब तहसीलदार व नजारत अनुभाग का किया गया औचक निरीक्षण

●पुराने मुकदमों का ससमय निस्तारण व न्यायालय की पत्रावलियों रख-रखा किया जाये बेहतर-जिलाधिकारी

कृषक दुर्घटना बीमा के प्राप्त आवेदनों की जॉच करते हुए ससमय निस्तारण सुनिश्चित किया जाये-जिलाधिकारी

स्वतंत्र प्रभात

ओबरा / सोनभद्र -जिलाधिकारी बी0एन0 सिंह व पुलिस अधीक्षक अशोक कुमार मीणा ने शनिवार को तहसील ओबरा के न्यायालय उप जिलाधिकारी, तहसीदार व नायब तहसीलदार का औचक निरीक्षण किया। इस दौरान जिलाधिकारी ने बारी-बारी से तीनों न्यायालयों के पत्रावलियों को निकलवाकर देखा और मुकदमों के स्थिति का जायजा लिया। उन्होंने कहा कि न्यायालय के लम्बित मुकदमों का निस्तारण ससमय किया सुनिश्चित किया जाये, जो मुकदमे पुराने हैं, उनका गहनता पूर्वक समीक्षा करते हुए निस्तारण कराया जाये। जिलाधिकारी ने सम्बन्धित को निर्देशित करते हुए कहा कि न्यायालय के पत्रावलियों के रख-रखा बेहतर हो, जरूरत पड़ने पर बिना कठिनाईयों के साथ पेश किया जा सके। इस दौरान जिलाधिकारी ने कृषक दुर्घटना बीमा के तहत प्राप्त दावों के रजिस्टर का जायजा लिया और उन्होंने कहा कि कृषक दुर्घटना बीमा के प्राप्त आवेदनों की जॉच करते हुए ससमय निस्तारण सुनिश्चित किया जाये, इस कार्य में शिथिलता व लापरवाही न बरती जाये। कृषक दुर्घटना बीमा के लाभार्थियों को बेवजह परेशान न किया जाये, जो भी पत्रावली पेंडिंग हैं, जॉच/समीक्षा करते हुए निस्तारण कराना सुनिश्चित किया जाये।

इसी प्रकार से जिलाधिकारी ने तहसील ओबरा के नजारत अनुभाग का भी निरीक्षण किया गया। इस दौरान नजारत के पत्रावलियों के रख-रखाव की स्थिति को को देखा। इस दौरान उन्होंने तहसीलदार कार्यालय में ई-खसरा फिडिंग के कार्य के स्थिति का जायजा लिया और उन्होंने निर्देशित किया कि ई-खसरा के कार्य में तेजी लाया जाये। इस मौके पर उप जिलाधिकारी विवेक सिंह, तहसीलदार सुशील कुमार, नायब तहसीलदार सहित अन्य सम्बन्धितगण उपस्थित रहे।

रासलीला के तीसरे दिन कालिया नाग दमन के लीला का हुआ मंचन

● - कालिया नाग के मान मर्दन की लीला का किया गया मंचन

- कालिया नाग के फन पर श्री कृष्ण ने किया नृत्य

स्वतंत्र प्रभात

सोनभद्र। कालिया नाग के फन पर कृष्ण के नृत्य की लीला को देखने के लिए लीला प्रेमियों की भीड़ उमड़ पड़ी। नगर के रामलीला प्रांगण में आयोजित रासलीला के तीसरे दिन कालिया नाग के मान मर्दन की लीला का मंचन किया गया। वृन्दावन से आए कलाकारों ने शानदार लीला का मंचन कर लीला प्रेमियों को मंत्रमुग्ध कर दिया श्री रामलीला चल रहे रासलीला में श्रीकृष्ण मित्रों के साथ यमुना नदी के किनारे गेंद से खेल रहे थे। भगवान ने जोर से गेंद फेंकी और वो यमुना में जा गिरी। गेंद भारी होने से वो सीधे यमुना के तल पर चली गई। समस्या यह थी कि उस समय यमुना में कालिया नाग रहता था। पांच फनों वाला नाग बहुत खतरनाक और विषधर था। उसके विष से यमुना काली हो रही थी और उसी जहर के कारण गोकुल के पशु यमुना का पानी पी कर मर रहे थे। कान्हा बहुत छोटे थे, लेकिन मित्रों के जोर के कारण उन्होंने तय किया कि गेंद वो ही निकाल कर लाएंगे। कान्हा ने यमुना में छलांग लगा दी। कृष्ण ने कालिया नाग की पूंछ पकड़कर उसे मारना शुरू कर दिया। कालिया नाग अपने प्राण की रक्षा के लिए कृष्ण से दुहाई देने लगा। कृष्ण ने उसे यमुना छोड़कर समुद्र में जाने के लिए वचबद्ध किया। इसके बाद कालिया नाग के फन पर नृत्य किया। इस तरह भगवान कृष्ण ने मथुरावासियों को कालिया नाग के साथ यमुना को उसके विष से मुक्ति दिलाई। इससे पूर्व बांके बिहारी की अनुपम छटा की भव्य आरती की गई। इस अवसर पर पूर्व विधायक रमेश दुबे, अविनाश कुशवाहा, समिति के संरक्षक- जितेंद्र सिंह, संयोजक रामप्रसाद यादव, अध्यक्ष सचिन गुप्ता, महामंत्री धीरज जालान, सदस्य मनोज सिंह, सन्नु केसरी, विजय कांत मिश्र, डॉ. अनिल पांडेय, संदीप चौरसिया, विनोद केसरी सहित अन्य लोग उपस्थित रहे।

सपा रमजान में रोजा इफ्तार व नवरात्रों में कराएगी कन्या भोज

● होली पर 421 मतदान केंद्रों पर करेगी होली मिलन समारोह

स्वतंत्र प्रभात

कानपुर। समाजवादी पार्टी कानपुर महानगर के पदाधिकारियों कार्य समिति के सदस्यों पांचों विधानसभा क्षेत्र के अध्यक्षों विधायकों 78 वार्ड अध्यक्षों फ्रंटल संगठनों पीडीए मिशन के कार्यकर्ताओं की मासिक बैठक सपा महानगर अध्यक्ष हाजी फजल महमूद की अध्यक्षता में हुई। मासिक बैठक का संचालन महानगर के वरिष्ठ उपाध्यक्ष शैलेंद्र यादव मिन्टू ने किया। बैठक को संबोधित करते हुए सपा महानगर अध्यक्ष हाजी फजल महमूद ने अपने संबोधन में कहा कि एक माह से चल रही पीडीए पंचायत के आंकलन की रिपोर्ट समिति को सौंप पीडीए पंचायत की ऐतिहासिक सफलता पर महानगर के सभी फ्रंटल बूथ सपा समिति तथा पीडीए मिशन टीम ने महानगर अध्यक्ष हाजी फजल महमूद का भव्य स्वागत कर पीडीए पंचायत की सफलता पर बधाई दी। बैठक को संबोधित करते हुए सपा महासचिव संजय सिंह बंटी सेंगर ने कहा कि रमजान के पवित्र दिनों में सपा कार्यकर्ता रोजेदारों को आमंत्रित कर सम्मान तथा सहयोग के लिए अग्रणी रहेंगे तथा होली पर्व पर 421 मतदान केंद्रों के परिवारों के बीच पहुंचकर सम्मान तथा मिलन करेंगे। सपा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष शैलेंद्र यादव मिन्टू ने अपने संबोधन में कहा कि नवरात्र के अवसर पर सपा कार्यकर्ता पीडीए टीम कन्या भोज का आयोजन करेगी तथा परिवारों के बीच जाकर सहयोग की भागीदार बनेगी।। मासिक बैठक में सपा महानगर अध्यक्ष हाजी फजल महमूद प्रदेश सचिव के के शुक्ला महासचिव संजय सिंह बंटी सेंगर वरिष्ठ उपाध्यक्ष शैलेंद्र यादव मिन्टू नंदलाल जयसवाल बंटी यादव आनंद शुक्ला सत्यनारायण गहरवार महेंद्र सिंह बड़े ठाकुर फखरे आलम अंसारी रजत मिश्रा अर्पित त्रिवेदी दीपक खोटे शादाब आलम अनूप यादव अरमान खान के के मिश्रा राजेश गोंड मुमताज मंसूरी पार्षद अर्पित यादव पार्षद फखर इकबाल लियाकत अली आकाश यादव आसिफ कादरी सुभाष द्विवेदी शेषनाथ यादव राजेंद्र जयसवाल राजेंद्र प्रसाद कोरी उमर अली अमित चौरसिया सुनील मांझी राजकुमार निषाद सौरभ सिंह तौसीफ सिद्दीकी चंदन बादशाह मोहतशिम हलीम पप्पी उमा देवी महेश यादव हेमंत गुप्ता जफरुल हसन राजेंद्र सोनकर लालू गुप्ता फारूक निजामी मुन्नेखा इशरत इराकी शमी अल्लाह अहमद आदि सैकड़ों लोग उपस्थित रहे।

सोनभद्र में 3 मार्च को रोजगार मेला, 13 कंपनियां देंगी नौकरियां

स्वतंत्र प्रभात

सोनभद्र/01 मार्च,2025 जिला सेवायोजन अधिकारी, सोनभद्र ने अवगत कराया है कि जिला सेवायोजन कार्यालय, सोनभद्र द्वारा जनपद के बेरोजगार अभ्यर्थियों को रोजगार देने के लिए 03 मार्च,2025 को प्रातः 10.00 बजे से जिला सेवायोजन कार्यालय, खुशबू बाग नर्सरी रोड (जिला अस्पताल के सामने), लोढ़ी, राबर्ट्सगंज, सोनभद्र के परिसर में रोजगार मेला का आयोजन किया गया है, जिसमें निजी क्षेत्र की लगभग 13 कम्पनियां प्रतिभाग करेंगी जिसमें उ0प्र0 राज्य सड़क परिवहन निगम (सोनभद्र डिपो) में संविदा पर चालक की भर्ती, प्लेटिनम एच0 आर0 सोल्यूशन, सूरत, गुजरात, क्रेडिट एक्सेस ग्रामीण लि0, सोनभद्र, जी0एम0आर0 स्मार्ट इलेक्ट्रीकल डिस्ट्रीब्यूशन प्रा0 लि0, नोएडा, डीसेट्स, फरीदाबाद, ग्रीनटास इंडस्ट्रीज प्रा0 लि0, वाराणसी, एस0बी0आई0 कार्ड, वाराणसी, मीडलैण्ड माइक्रोफीन, सोनभद्र, कामाख्या टी0वी0एस0, राबर्ट्सगंज, एल0आई0सी0, राबर्ट्सगंज, वज्र इण्डस्ट्रीज, राबर्ट्सगंज, सोलेरा इण्डस्ट्रीज प्रा0लि0, मधुपुर, सोनभद्र एवं जोमैटो, वाराणसी इत्यादि कम्पनियों द्वारा विभिन्न पदों पर भर्तियां की जाएगी। समस्त इच्छुक एवं योग्य बेरोजगार अभ्यर्थियों का साक्षात्कार नियोजकों द्वारा जिला सेवायोजन कार्यालय, खुशबू बाग नर्सरी रोड (जिला अस्पताल के सामने), लोढ़ी, राबर्ट्सगंज, सोनभद्र के परिसर में लिया जायेगा। यह रोजगार मेला पूर्णतः निःशुल्क है। इस हेतु कोई यात्रा व्यय देय नहीं होगा।

15 वर्ष से बिना पार्किंग के भवनों पर कार्यवाही रामभरोसे

स्वतंत्र प्रभात

अलीगढ़। कमिश्नर ने एडीए को निर्देशित किया है कि सख्त कार्रवाई की जाए। अब कार्रवाई हर साल जैसी ही होगी या कुछ आगे बढ़ेगी यह तो वक्त ही बताएगा। रामघाट रोड पर बने भवनों को पार्किंग बनाने के लिए 2010 से नोटिस जारी किए जा रहे हैं। हर बार चेताया जाता है कि अगर पार्किंग नहीं बनाई गई तो भवन को सील कर दिया जाएगा। इस मार्ग पर प्रशासन ने ऐसे 69 भवनों का चिन्हीकरण किया है जिनमें या तो पार्किंग है ही नहीं या फिर अगर है तो उसका प्रयोग किसी दूसरे कार्य में किया जा रहा है। अब फिर से नोटिस जारी किए जाने हैं। एसपी ट्रैफिक मुकेश कुमार उत्तम काकहना है कि मंडलायुक्त की अध्यक्षता वाली मीटिंग में ऐसे भवनों को एडीए से नोटिस दिलवाने के निर्देश दिए गए हैं। एडीए स्तर से इस दिशा में कार्रवाई की जाएगी। हमारे स्तर से नोटिस व उसके जवाब के बाद वाहनों पर कार्रवाई की जाएगी।

ट्रैफिक व्यवस्था ध्वस्त

शहर के सबसे व्यस्त व सबसे ज्यादा व्यावसायिक गतिविधियों वाले रामघाट रोड को दुबे पड़ाव से लेकर क्लार्सी चौराहा तक छह किमी का रास्ता दिन में 30 से 45 मिनट के बीच तय होता है। कभी कभी तो एक घंटे का समय भी ट्रैफिक की भीड़ में फंसे-फंसे ही बीत जाता है। इसकी सबसे बड़ी वजह सडक़ किनारे वाहनों का खड़ा होना, ठेले खोमचों वालों की भीड़ का होना भी है। दूसरा बड़े बड़े व्यावसायिक भवनों की पार्किंग सडक़ों पर होना है। इस प्रमुख मार्ग पर लगने वाला जाम पूरे शहर की ट्रैफिक व्यवस्था को ध्वस्त कर देता है।

प्रतिदिन गुजरते 40 हजार वाहन

इसी मार्ग के जरिए प्रदेश के बरेली, बदायूं, मुरादाबाद और बुलंदशहर समेत कई जिलों का जुड़ाव होता है। मथुरा जाने वाले लोग भी इसी मार्ग से होकर गुजरते हैं। क्लार्सी ओवरब्रिज निर्माण से पहले हुए सर्वे के अनुसार प्रतिदिन 40 हजार वाहन गुजरते हैं। जिनमें से 15 फीसदी वाहन बाईपास से गुजरते हैं। ऐसे में जाम का निदान होना बेहद जरूरी है। मगर स्थायी समाधान सिर्फ नोटिसों तक सीमित रहता है। अब देखना है कि इस बार क्या होगा।

संक्षिप्त ख़बरें

आयोजित संपूर्ण समाधान दिवस में आई 35 सिकायतो में 8 का मौके पर निस्तारण किया गया।

गोला गोकर्णनाथ-खीरी। तहसील गोला के सभागार में शनिवार को उपजिलाधिकारी विनोद कुमार गुप्ता की अध्यक्षता में संपूर्ण समाधान दिवस के आयोजन में विभिन्न विभागों की आई 35 शिकायतो में 8 शिकायतों का मौके पर निस्तारण कर दिया गया।संपूर्ण समाधान दिवस में विभिन्न विभागों से संबंधित आई 38 शिकायतों में राजस्व एवं आपदा विभाग की आई 22 शिकायत- संयुक्त जांच हेतु 3- गृह गोपन विभाग पुलिस विभाग 6- विद्युत विभाग की 4 शिकायतों के साथ स्कूल 35 शिकायत प्राप्त हुए जिसमें राजस्व एवं आपदा विभाग आठ शिकायतों का मौके पर ही निस्तारण कर दिया गया। शेष बची 27 शिकायतों को अभिलंब निस्तारण हेतु संबंधित अधिकारियों को प्रेषित कर दी गई है।

आडोटोरियम के डेकोरेशन का कार्य पूर्ण नही करने पर ठेकेदार को नोटिस जारी करने का नश पाश अध्यक्ष ने दिया आदेश।

गोला गोकर्णनाथ- खीरी। नगर पालिका परिषद गोला के परिसर में निर्माणाधीन आडोटोरियम (प्रेक्षागृह) के डेकोरेशन का कार्य रवि प्रकाश पुत्र राज कुमार मनार निवासी ग्राम व पोस्ट ऐरा थाना ईशानगर को लगभग एक करोड़ में वित्तीय वर्ष 2018-19 में दिया गया था। जिसके डेकोरेशन में इलेक्ट्रिक, पी0 वी0 सी0 पैनलिंग, स्टील रेलिंग, टायल, साउण्ड सिस्टम, कुर्सियां, सेन्ट्रल ए0सी0, गेट , स्टेज आदि का कार्य करना था । कुछ कार्य करने के बाद नगर पालिका प्रशासन ने 49 लाख 15 हजार का भुगतान भी कर दिया गया है। एक वर्ष से कार्य बंद है ठेकेदार को अनेक बार मौखिक एवं दूरभाष से डेकोरेशन का काम पूर्ण करने को कहने पर भी जब कार्य शुरू नही हुआ तो नगर पालिका अध्यक्ष विजय शुक्ला रिंकू ने नोटिस जारी करने का आदेश जारी करते हुए कहा कि, यह एक अतिमहत्वपूर्ण योजना है जो अधूरी पडी है जिसे जल्द से जल्द पूरी करना हमारा लक्ष्य है।

शादी की सारी व्यवस्था पूर्ण होने के बाद किया शादी से इनकार रिपोर्ट दर्ज

बरेली/क्यों लड़ियां के राजेश कुमार ने अपनी पुत्री की शादी पीलीभीत के गांव कनकोर के प्रेम राज के साथ तय की थी गोद भराई आदि की रस्म पूरी होने के बाद सब कुछ ठीक चल रहा था लड़की पक्ष ने लड़का पक्ष को बुलाकर शादी की तारीख भी 10 में निर्धारित कर दी गई जिसकी व्यवस्था के लिए लड़की पक्ष ने बारात घर से लेकर खाना बनाने आदि की सारी व्यवस्था सुनिश्चित कर दी परंतु लड़का पक्ष ने तय किए गए रिश्ते के खर्चे से अधिक दहेज की मांग रख दी जिसे लड़की पक्ष देने में असमर्थ होने पर लड़का पक्ष के लोगों ने शादी करने से इनकार कर दिया काफी प्रयास करने के बाद जब मामला नहीं बना तो लड़की के पिता ने लड़का सहित चार लोगों के विरुद्ध जान से मारने दहेज मांगने आदि संबंधित धाराओं में रिपोर्ट दर्ज कर दी है।

सम्पूर्ण समाधान दिवस में 2 शिकायतें निस्तारित

देवरिया 1 मार्च। जिलाधिकारी दिव्या मित्तल की अध्यक्षता में तहसील बरहज के सभागार में सम्पूर्ण समाधान दिवस का आयोजन हुआ। इस अवसर पर जिलाधिकारी तथा पुलिस अधीक्षक विक्रांत वीर ने जनता की समस्याओं को गंभीरतापूर्वक सुना और उनके त्वरित समाधान हेतु संबंधित अधिकारियों को आवश्यक निर्देश प्रदान किए। जिलाधिकारी ने कहा कि भूमि विवादों का समाधान तथा सार्वजनिक भूमि पर अवैध अतिक्रमणों को हटाना प्रशासन की प्राथमिकताओं में शामिल है। लेखपाल अपने-अपने क्षेत्रों में भ्रमणशील रहें और भूमि विवाद से जुड़ी समस्याओं का समाधान कराएं। पुलिस अधीक्षक विक्रांत वीर ने पुलिस विभाग से संबंधित मामलों की सुनवाई की और शिकायतों का त्वरित समाधान का निर्देश दिया। सम्पूर्ण समाधान दिवस में 45 शिकायती प्रार्थना पत्र प्राप्त हुए, जिनमें से 13 राजस्व विभाग, 8 पुलिस विभाग, 11 विकास विभाग, 7 खाद्य एवं रसद शिक्षा विभाग, एक समाज कल्याण विभाग और 5 अन्य विभागों से संबंधित थे। मौके पर 2 शिकायती प्रार्थना पत्रों का समाधान किया गया, जबकि शेष 43 मामलों को संबंधित विभागों को समाधान हेतु सौंपा गया। इस दौरान जिलाधिकारी ने बरहज आश्रम में स्थित पंडित रामप्रसाद बिस्मिल के समाधि स्थल पर पुष्प अर्पित कर उन्हें नमन किया तथा बाबा राघव दास की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया।

टूटी नालियां और जलभराव, बना हजरतपुर की पहचान, प्रशासन कब लेगा संज्ञान?

स्वतंत्र प्रभात

फूलबेहडखीरी- विकास खंड फूलबेहड़ क्षेत्र के अंतर्गत ग्राम पंचायत हजरतपुर में सफाई व्यवस्था पूरी तरह चरमरा गई है। गांव की गलियों में कूड़े-कचरे के ढेर लगे हैं, और टूटी नालियों के कारण जलभराव ने विकराल रूप ले लिया है। सड़कों पर बने बड़े-बड़े गड्ढे और भरा हुआ गंदा पानी राहगीरों और वाहनों के लिए मुसीबत बन चुका है। हजरतपुर मे किस कदर मोदी जी के स्वच्छता अभियान को पलीता लगाया जा रहा हैं इसी से अंदाजा लगाया जा सकता हैं स्थानीय निवासियों के अनुसार, गंदगी और जलभराव के कारण गांव में मच्छरों का प्रकोप बढ़ गया है, जिससे डेंगू - मलेरिया जैसी बीमारियों का खतरा मंडरा रहा है। धार्मिक स्थलों के रास्तों पर गन्दा पानी भरा होने के कारण लोग परेशान हैं।

स्थिति इतनी गंभीर हो चुकी है कि बंद पड़ी और जर्जर नालियों में घरों का गंदा पानी और शौचालयों का पानी मिलकर पूरे इलाके में बदबू फैला रहा है। दुर्गन्ध युक्त माहौल से बच्चे और बुजुर्ग सबसे अधिक प्रभावित हो रहे हैं, क्योंकि कीचड़ भरे रास्तों से गुजरना उनके लिए मुश्किल हो गया है। ग्रामीणों का कहना है कि यदि जल्द ही सफाई अभियान नहीं चलाया गया और नालियों की मरम्मत नहीं हुई, तो वे उच्च अधिकारियों और प्रशासन से शिकायत करने के लिए मजबूर होंगे।

क्या कहते हैं ग्राम प्रधान

जब ग्राम प्रधान सत्रोहन लाल से इस विषय पर सवाल किया गया तो उन्होंने बताया कि रईस की दुकान से लेकर पूर्व दिशा तक 100 मीटर सड़क मरम्मत कार्य के लिए एस्टीमेट तैयार है, बनाया जाएगा ,और यह कार्य मार्च के बाद शुरू होगा जो कि संदेह में डालता है। वहीं जब ग्राम पंचायत अधिकारी *दिनेश कुमार* से संपर्क करना चाहा गया तो साहब कभी फोन ही नहीं उठाते ना वापस करते हैं जबकि अलग-अलग समय पर संपर्क करने की कोशिश की गई लेकिन मजाल है कि साहब वापस कर दें या फोन उठा लें। मीडिया से संपर्क में न आने का कारण बताएं ग्राम पंचायत अधिकारी हजरतपुर। अब सवाल यह उठता है कि क्या पंचायत प्रशासन समय रहते इस समस्या का समाधान करेगा, या फिर ग्रामीणों को इसी परेशानी के साथ जीने के लिए मजबूर होना पड़ेगा बेहाल? प्रशासन कब लेगा संज्ञान? फूलबेहड़ (हजरतपुर), [28/02/2025) ब्लॉक फूलबेहड़ क्षेत्र के अंतर्गत ग्राम पंचायत हजरतपुर में सफाई व्यवस्था पूरी तरह चरमरा गई है। गांव की गलियों में कूड़े-कचरे के ढेर लगे हैं, और टूटी नालियों के कारण जलभराव ने विकराल रूप ले लिया है। सड़कों पर बने बड़े-बड़े गड्ढे और भरा हुआ गंदा पानी राहगीरों और वाहनों के लिए मुसीबत बन चुका है। स्थानीय निवासियों के अनुसार, गंदगी और जलभराव के कारण

गांव में मच्छरों का प्रकोप बढ़ गया है, जिससे डेंगू - मलेरिया जैसी बीमारियों का खतरा मंडरा रहा है। धार्मिक स्थलों के रास्तों पर भी पानी भरा होने के कारण लोग परेशान हैं। स्थिति इतनी गंभीर हो चुकी है कि बंद पड़ी और जर्जर नालियों में घरों का गंदा पानी और शौचालयों का पानी मिलकर पूरे इलाके में बदबू फैला रहा है। बच्चे और बुजुर्ग सबसे अधिक प्रभावित हो रहे हैं, क्योंकि कीचड़ भरे रास्तों से गुजरना उनके लिए मुश्किल हो गया है। ग्रामीणों का कहना है कि यदि जल्द ही सफाई अभियान नहीं चलाया गया और नालियों की मरम्मत नहीं हुई, तो वे उच्च अधिकारियों और प्रशासन से शिकायत करने के लिए मजबूर होंगे।

जब ग्राम प्रधान सत्रोहन लाल से इस विषय पर सवाल किया गया तो उन्होंने बताया कि रईस की दुकान से लेकर पूर्व दिशा तक 100 मीटर सड़क मरम्मत कार्य के लिए एस्टीमेट तैयार है, बनाया जाएगा ,और यह कार्य मार्च के बाद शुरू होगा जो कि संदेह में डालता है। वहीं जब ग्राम पंचायत अधिकारी दिनेश कुमार से संपर्क करना चाहा गया तो साहब कभी फोन ही नहीं उठाते ना वापस करते हैं जबकि अलग-अलग समय पर संपर्क करने की कोशिश की गई लेकिन मजाल है कि साहब वापस कर दें या फोन उठा लें। मीडिया से संपर्क में न आने का कारण बताएं ग्राम पंचायत अधिकारी हजरतपुर। अब सवाल यह उठता है कि क्या पंचायत प्रशासन समय रहते इस समस्या का समाधान करेगा, या फिर ग्रामीणों को इसी परेशानी के साथ जीने के लिए मजबूर होना पड़ेगा?

खुले में बिक रहे हैं मांस मछली स्थानीय लोगों को हो रही है परेशानी

स्वतंत्र प्रभात

सोनभद्- सोनभद्र के ओबरा में गजराज नगर क्षेत्र में खुलेआम सार्वजनिक स्थानों पर मांस-मछली की बिक्री हो रही है, जिससे स्थानीय लोगों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। शासन-प्रशासन के रोक के बावजूद भी दुकानदार नियमों का उल्लंघन कर रहे हैं।दुकानदार अस्वस्थ बकरे और मुर्गों को काटकर बेच रहे हैं, जिससे लोगों में बीमारी फैलने का खतरा है।दुकानों पर साफ-सफाई न होने के कारण तेज दुर्गंध आती है, जिससे राहगीरों को परेशानी होती है।खुले में मांस की बिक्री से शाकाहारी लोगों की भावनाएँ आहत होती हैं।खुले में जानवरों को काटना पशु क्रूरता कानून का उल्लंघन है।कई दुकानें बिना लाइसेंस के चल रही हैं, जो कि अवैध है।स्कूली बच्चों को भी इससे गुजरना पड़ता है, जो उनके मानसिक स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव डाल सकता है।भारत में पशु क्रूरता निवारण अधिनियम, 1960 (Prevention of Cruelty to Animals Act, 1960) के तहत, जानवरों को अनावश्यक दर्द या पीड़ा देना एक दंडनीय अपराध है।मांस बिक्री की दुकानों के लिए लाइसेंस अनिवार्य है। जैसे की दुकानों पर साफ-सफाई का ध्यान रखना चाहिए और मांस को पर्दे या कपड़े से ढककर रखना चाहिए।कानून का उल्लंघन करने वालों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करनी चाहिए।स्थानीय लोगों ने प्रशासन से इस मामले में तत्काल कार्रवाई करने की अपील की है।उन्होंने मांग की है कि अवैध रूप से चल रही मांस की दुकानों को बंद किया जाए और नियमों का उल्लंघन करने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाए।खुले में जानवरों को काटना न केवल अनैतिक है, बल्कि यह कानूनी रूप से भी गलत है। स्थानीय प्रशासन को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि पशु क्रूरता कानून का सख्ती से पालन किया जाए और अवैध मांस की दुकानों को बंद किया जाए।

उप जिलाधिकारी की अध्यक्षता में तहसील दिवस का आयोजन हुआ

स्वतंत्र प्रभात

बरेली/उप जिला अधिकारी अजय कुमार उपाध्याय क्षेत्राधिकार हर्ष मोदी तहसीलदार दुष्यंत कुमार सिंह के नेतृत्व में नवाबगंज सभागार में तहसील दिवस का आयोजन किया गया यहां पर 60 फरियादियों की शिकायतें पंजीकृत की गई इनमें से छह शिकायतों का मौके पर ही निस्तारण कर दिया गया से 54 शिकायतों के निस्तारण हेतु अधीनस्थों को शीघ्र निस्तारण करने का निर्देश दिया गया। यहीं पर भारतीय किसान यूनियन ने संयुक्त रूप से चीनी मिलों द्वारा किसानों के गन्ना भुगतान का न देने का मामला रखा गया इस पर उप जिला अधिकारी द्वारा उप गन्ना आयुक्त को उनकी शिकायत भेज कर निस्तारण करने का आश्वासन दिया गया यहीं पर फरियादियों द्वारा चक मार्गो पर कब्जा करने आदि की शिकायतें कुछ मामले पुलिस से संबंधित थे जिनको क्षेत्राधिकार हर्ष मोदी ने समस्त थाना प्रभारी को निस्तारण करने का निर्देश दिया । इस तहसील दिवस की अध्यक्षता इसकी अध्यक्षता एसडीम अजय कुमार उपाध्याय नेकी संचालन तहसीलदार दुष्यंत कुमार सिंह ने किया यहां पर उपस्थित खंड विकास अधिकारी कमल सिंह चौहान ए डी ओ पंचायत रणजीत सिंह बाल विकास परियोजना अधिकारी सुषमा राठौर के साथ ही कई विभागों के लोग उपस्थित थे।

हल्की बूंदाबांदी से डामर रोड हुआ कीचड़मय, राहगीरों को निकलने में परेशानी

मितौली खीरी- रोड पर जमी मिट्टी हल्की बूंदाबांदी से कीचड़ में तब्दील हो गई जिससे राहगीरों को निकलने में परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। आपको बताते चलें कि मितौली तहसील के कस्ता ग्राम से दानपुर संपर्क मार्ग पर मिट्टी ढुलाई के कारण रोड पर मिट्टी की एक मोटी परत जम गई थी जोकि आज हल्की बारिश से कीचड़मय हो गई। जिससे राहगीरों को निकलने में काफी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। इतना ही नहीं सड़क में कटान भी हुआ है जो हादसे को दावत दे रहा है, कभी न कभी अंधेरे उजाले में गिर सकता है।इस सड़क का दुर्भाग्य ऐसा है कि मिट्टी ढुलाई के कारण यह सड़क कभी टूट जाती है तो कभी मिट्टी से पट जाती है। जिसका परिणाम पथिकों भुगतना पड़ता है।

गहरी जुताई एवं भूमि व बीज शोधन से बढेगी गन्ने की पैदावार

स्वतंत्र प्रभात

गोला गोकर्णनाथ-खीरी। बजाज हिन्दुस्थान शुगर लिमिटेड चीनी मिल गोला के मिल गेट क्षेत्र के ग्राम देवकली में एक कृषक गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी में चीनी मिल के वरिष्ठ महा प्रबन्धक गन्ना पी एस चतुर्वेदी,ज्येष्ठ गन्ना विकास निरीक्षक आशुतोष मधुकर एवं मिल पारिक्षेत्र के लगभग 135 कृषकों ने भाग लिया।वरिष्ठ महा प्रबन्धक गन्ना ने कृषकों से अपील की कि गन्ना बुआई से पूर्व गहरी जुताई करना अति आवश्यक है क्योंकि जमीन की निचली परतें कड़ी हो चुकी है।टराईकोडर्मा से भूमि शोधन व दो आंख के टुकड़े कर बीज शोधन कर अधिक पैदावार प्राप्त करने के लिए उन्नतशील गन्ना प्रजातियों जैसे को0 0118,को0 15023,कोशा0 13235,कोलख014201 तथा जल भराव वाले क्षेत्रो के लिए को0 98014 एवं कोलख 94184 का चयन कर ट्रेंच विधि से गन्ना बुआई करे और बताया कि गन्ने के ऊपरी एक-तिहाई हिस्से का जमाव अच्छा होता है इस लिए ऊपरी एक-तिहाई हिस्से को बीज में प्रयोग करके शेष भाग को मिल में आपूर्ति कर दे।प्रबंधक गन्ना सत्येन्द्र कुमार मिश्र ने पेड़ी गन्ने की अच्छी उपज प्राप्त करने के लिए गन्ना कटाई के तुरन्त बाद सिचाई करके 75 किग्रा0 यूरिया प्रति एकड़ की दर से प्रयोग करने की सलाह दी। साथ ही उन्होंने बताया कि चीनी मिल द्वारा कृषकों को बीज उपलब्ध कराया जा रहा है तथा मृदा उपचार हेतु ट्राइकोडर्मा व बीज उपचार हेतु फफूंदीनाशक थायोफिनेट मिथाइल भी मिल द्वारा कृषकों को अनुदान पर उपलब्ध कराई जा रही है और ये भी बताया कि अपना बेसिक कोटा मजबूत बनाए रखने के लिए सारा गन्ना मिल में ही आपूर्ति करें।

इसी क्रम में ज्येष्ठ गन्ना विकास निरीक्षक गोला ने विभिन्न विभागीय योजनाओं तथा उनमे देय अनुदान के बारे में तथा बसंत कालीन बुवाई में ध्यान देने योग्य आवश्यक बातें, प्रजातियों,ड्रिप सिंचाई महिला स्वयं सहायता समूह से उत्पादित सीडलिंग के लगाने के लाभ, फार्म मशीनरी बैंक में उपलब्ध यंत्रों के सदुपयोग किफायती दरों में किराये पर ले जाकर अधिक से अधिक लाभ प्राप्त करने तथा समिति द्वारा दी जाने वाली नैनो यूरिया तथा अन्य दवाइयां आदि के बारे में विस्तार से बताया।आइपीएल के मार्केटिंग मैनेजर तारकेश सिहं व पंकज कुमार ने टराइकोडरमा व प्रिज्म के लाभ व प्रयोग की विस्तार से जानकारी दी। गोष्ठी की अध्यक्षता पूर्व प्रधान जितेन्द्र कुमार शुक्ल ने की तथा मंच संचालन प्रबन्धक गन्ना सत्येन्द्र कुमार मिश्र ने किया इस मौके पर सहायक गन्ना अधिकारी रावेन्द्र कुमार, कृषक राकेश मिश्र, ओमप्रकाश यादव, अनिल वर्मा ,केदारनाथ वर्मा, राजेश कुमार,फरीद अहमद,फरहाद खान, गन्ना समिति के गन्ना पर्यवेक्षक व चीनी मिल के मोटिवेटर/कामदार सहित सैकड़ों कृषक उपस्थित रहे।

बुनकरों और दस्तकारों की बदहाली दूर करेगी मोमिन कांफ्रेंस

स्वतंत्र प्रभात

बरेली /आल इंडिया मोमिन कांफ्रेंस की मीटिंग में संगठन को मजबूत बनाने और इससे लोगों को जोड़ने को लेकर मीटिंग हुई। इसमें नवनियुक्त जिला अध्यक्ष डॉ खालिक अंसारी का जोरदार स्वागत हुआ। लोगों ने उन्हें फूल मालाओं के साथ बुके भेंट की। इस दौरान उत्तर प्रदेश मोमिन कांफ्रेंस के प्रदेश उपाध्यक्ष मंडल इंचार्ज अखलाक अंसारी ने कहा कि संगठन का मकसद मुस्लिमों में इसलाह और जागरुकता का है। प्रदेश महामंत्री हाजी परवेज अंसारी ने कहा कि लोगों की आपसी बुराई को कम कर संगठन से जोड़ने का काम होगा। कौम की तरक्की उनकी सामाजिक भागीदारी पर काम करना होगा। बुनकरों और दस्तकारों की समस्याओं को प्रमुखता से उठाया जाएगा।पूर्व चेयरमैन मोहम्मद इलियास अंसारी मीरगंज प्रदेश महासचिव मोमिन कॉन्फ्रेंस ने कहा अब वूमेन कांफ्रेंस नौजवानों के हाथ में है इंशाल्लाह फिर बिरादरी दरी पर बैठकर अपनी समस्याएं हल करेगी। इस मौके पर प्रदेश महासचिव मुस्ताक अंसारी, मुख्तार अंसारी, सचिव असलम अंसारी के साथ फारूक अंसारी, इलयास अंसारी, शकील अंसारी अहमद रज़ा अंसारी,अब्दुल सलीम अंसारी, डॉ हलीम अंसारी, डॉ शाहज़ेब अंसारी, मेराज अंसारी, हाजी इस्लाम बब्बू ,डॉ ताहिर,डॉ अंसार, आरिफ अंसारी, डॉ हाशम अंसारी ,मास्टर आबिद अंसारी, आदि रहे।

छत से बेघर हुआ ग्रामीण, कागजों पर सिमटा जन कल्याणकारी योजना, स्थानीय जन प्रतिनिधि बेखबर

स्वतंत्र प्रभात

सोनभद्र । नव सृजित विकास खण्ड कोन के दुरूह क्षेत्र अन्तर्गत ग्राम पंचायत करहिया में स्थानीय जन प्रतिनिधि की उपेक्षा देखने को मिली । गौरतलब है कि ग्राम पंचायत करहिया अति पिछड़ी आदिवासी क्षेत्र होने के नाते यह क्षेत्र आज भी विकास से कोसों दूर है जिसका नतीजा रहा कि स्थानीय निवासी विनोद कुमार चेरो का जीता जगता उदारहरण है। कुछ जानकारों का कहना है कि भले ही सरकार चेरो जाति के लिए तरह तरह की योजना चलाकर विकास की गंगा बहाने का दावा कर रही हो लेकिन हकीकत में हालात कुछ और ही बयां कर रही है। इसी क्रम में बतातें चलें कि विनोद चेरो के पास कच्चा का मकान था जो इस वर्ष अत्यधिक बारिश होने के कारण धाराशायी हो गया न तो रहने के लिए उसके पास अपना स्वयं

का छत है। वह किसी तरह से मजदूरी करके अपना जीवोकोपार्जन करता है। विनोद चेरो ने बताया कि सरकार द्वारा चलाये जा रहे जन कल्याणकारी योजना प्राप्त करने के लिए प्रधान, सचिव, रोजगार सेवक तक गुहार लगाई किन्तु किसी ने नहीं सुना । यहाँ तक कि अपने पत्नी बच्चों को अन्यत्र भेजकर अपना रोजी रोटी के लिए बाहर चला जाता है। इस बावत खण्ड विकास अधिकारी कोन से सेल फोन पर वार्ता किया गया कि उन्होंने आश्वासन दिया कि उक्त व्यक्ति को तत्काल विकास खण्ड कार्यालय भेंजे ताकि उसे सरकार द्वारा मिलने वाली योजनाओं से सत्यापन के उपरांत लाभान्वित कराया जा सके। अब देखना दिलचस्प होगा कि खण्ड विकास अधिकारी के हस्तक्षेप से उक्त गरीब को बरसात से पहले आवास मिल पायेगा या कागजों पर सिमट कर रह जायेगा।

होली एवं रमजान को लेकर थाना प्रभारी ने की संभ्रांत लोगों के साथ बैठक

स्वतंत्र प्रभात

बरेली/क्यों लड़िया यहां के प्रभारी निरीक्षक जितेंद्र कुमार सिंह ने होली एवं रमजान पर शांति व्यवस्था कायम रखने के लिए क्षेत्र के सम्राट लोगों के साथ थाना परिसर में बैठक कर शासन के निर्देशों से अवगत कराया और उन्होंने कहा होली का पर्व और रमजान दोनों साथ-साथ हो रहे हैं दोनों समुदायों के लोगों को एक दूसरे के पर्व का सम्मान कर पर्व मनाने में ज्यादा ही आनंद का अनुभव प्राप्त होगा। साथ ही पर्वों पर किसी को भी अमर्यादित कार्य करने की अनुमति नहीं है ऐसा करने वालों के विरुद्ध दंडात्मक कार्यवाही की जाएगी इसके लिए वह स्वयं जिम्मेदार होंगे इसलिए दोनों समुदाय के लोग अपना अपना पर्व व्यवस्थित तरीके से मनाई पुलिस का सहयोग करें पुलिस आपका सहयोग करने के लिए तत्पर है । यदि किसी ने पर्व पर शांति व्यवस्था बिगड़ने का प्रयास किया तो उसके विरुद्ध प्रशासन अपने तरीके से कार्यवाही करेगा फिर किसी भी तरह की सिफारिश काम नहीं आएगी इसलिए सभी लोग शांति व्यवस्था बनाने में सहयोग करे यहां पर उपस्थित मोहम्मद फारूक लाला खान सफीक अहमद जादूगर महेश मिश्रा सुमित कुमार वर्मा दीपू पीर मोहम्मद अजीम अहमद समेत भारी संख्या में दोनों समुदायों के लोग उपस्थित थे।

बेदखली आदेश के बाद भी नहीं हट रहा तालाब से अवैध कब्जा

नगर पंचायत अध्यक्ष और अधिशासी अधिकारी की मिली भगत आई सामने

●अवैध कब्जा हटवाए शासन को भेजी जाती रही झूठी जांच रिपोर्ट

स्वतंत्र प्रभात

लखीमपुर खीरी - शासन के सख्त आदेशों के बाद भी लेखपाल राजस्व निरीक्षक और अधिशासी अधिकारी नगर पंचायत ओयल की मिली भगत से पुलिस चौकी ओयल के पास स्थित तालाब गाटा संख्या 562 /2.258 हेक्टेयर में से 0.013 हेक्टेयर भू भाग पर अवैध कब्जा करके पक्का निर्माण करा कर दुकान व मकान बनवा डाला गया लेकिन नगर पंचायत द्वारा इस अवैध कब्जे को ना रोका जा जाना नगर पंचायत ओयल प्रशासन की मिली भगत को दर्शाता है जबकि इस अवैध निर्माण को शुरू होते ही शिकायत करता संतोष कुमार पुत्र राजेंद्र किशोर शिकायत करता रहा और अवैध निर्माण होता रहा तहसील प्रशासन और नगर पंचायत प्रशासन सोता रहा।

यदि अधिशासी अधिकारी लेते संज्ञान तो रुक सकता था अवैध कब्जा

शिकायतकर्ता संतोष कुमार तहसील प्रशासन से लेकर राजस्व परिषद और सीएम पोर्टल पर दर्जनों शिकायतें की सभी शिकायतों में फर्जी रिपोर्ट लगाकर के अवैध कब्जा नहीं रुकवाया गया निर्माण पूरा होने के बाद अपनी गर्दन फसाते देख लेखपाल 67 (1) की कार्यवाही कर अपना पल्ला झाड़ लिया गया उक्त में राजस्व वाद में अवैध कब्जे धारक पर अर्थ दंड और बेदखली आदेश पारित किया जिसे क्षुब्ध होकर अवैध कब्जे धारक ने जिला अधिकारी के समक्ष वाद संख्या डी? 2021/ 1043000 199 2 वाद संख्या 1992/ 2021 श्री कृष्ण बनाम ग्राम पंचायत ढकवा ओयल उत्तर प्रदेश और संख्या 2006 अंतर्गत धारा 67(5) दाखिल किया गया जिसमें आदेश दिनांक 19 -12- 2022 को पारित आदेश में अपील करता अवैध कब्जा धारक की अपील को निरस्त कर दिया गया सूत्र बताते हैं कि हर जगह से मुकदमा हारने के बाद भी अवैध कब्जा धारक को तालाब से हटाए जाने की आज तक कार्यवाही नहीं की जा रही है एसडीएम सदर के आदेश के बाद भी ई?ओ? ने नहीं दर्ज कराई अवैध कब्जे धारक के विरुद्ध एफआईआर ग्राम ढकवा परगना खीरी तहसील लखीमपुर नगर पंचायत ओवल ढकवा स्थित तालाब गाटा संख्या 562/ 2.2580 के जुज भाग पर राजकुमार व श्री कृष्ण पुत्र गण राजाराम के द्वारा मकान व दुकान बनाकर अवैध कब्जा कर लिया गया है जिसमें 67 (1) की कार्यवाही की गई और निर्माण कार्य रोक दिया गया लेकिन दबंग किस्म लोगों द्वारा अवैध निर्माण जारी रखा गया क्योंकि उक्त तालाब गाटा संख्या 562 नगर पंचायत ओयल ढकवा की सीमा के अंदर है जिसके चलते अतिक्रमण कार्यों के विरुद्ध प्रथम सूचना रिपोर्ट दर्ज करने का अधिकार बनता है इसलिए अधिशासी अधिकारी को रिपोर्ट दर्ज करने को निर्देशित करने की संस्तुति सहित राजस्व निरीक्षक व लेखपाल ने दिनांक 12 -6:-20 को एसडीएम सदर को रिपोर्ट सौंप थी जिसमें जिओ तेल को अवैध कब्जा धारक के विरुद्ध मुकदमा पंजीकृत कराए जाने तथा तालाब पर किए जा रहे अतिक्रमण को रूकवाये जाने के आदेश दिए गए थे जिसका भी कोई संज्ञान ईओ द्वारा नहीं लिया गया यदि ईओ नगर पंचायत द्वारा संज्ञान लेते हुए एफआईआर दर्ज कराई गई होती तो तालाब पर अतिक्रमण न हो पता है और ना ही आज कोई अतिक्रमण हटाने को लेकर कोई कार्यवाही अमल में लाई जा रही है उक्त से स्पष्ट नजर आता है कि ईओ नगर पालिका ओयल की मुक सहमत से ही तालाब को पाट कर उसके आशिक भाग पर दुकान व मकान बनवाया गया है।

संक्षिप्त ख़बरें

पूरी पारदर्शिता के साथ की जाए आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों का चयन, बिचैलियों के चक्कर में न पड़े अभ्यर्थी -जिलाधिकारी

मीरजापुर। शासन के निर्देश के क्रम में जनपद के शहरी/ग्रामीण 13 बाल विकास परियोजनाओं में आंगनबाड़ी कार्यकत्री के मानदेय आधारित रिक्त पदो पर चयन हेतु सीधी भर्ती प्रक्रिया के तहत दिनांक 05 मार्च 2025 एवं 06 मार्च 2025 को आवेदन पत्र भरने वाले अभ्यर्थियों के मूल शैक्षिक अभिलेख/प्रमाण पत्रों का सत्यापन किए जाने की प्रक्रिया निर्धारित है। जिलाधिकारी प्रियंका निरंजन ने जिला कार्यक्रम अधिकारी व समिति के सदस्यों को निर्देशित करते हुए कहा कि पूरी पारदर्शिता के साथ अभिलेखो का सत्यापन/चयन किया जाए किसी भी स्तर पर लापरवाही बर्दाशत नही की जाएगी। उन्होंने आवेदन करने वाले सभी अभ्यर्थियों को भी निर्देशित करते हुए कहा कि वे किसी भी बिचैलियों के चक्कर में न पड़े। चयन प्रक्रिया पात्रता के अनुसार पूरी पारदर्शिता के साथ की जाएगी।

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस पर विज्ञान क्विज प्रोजेक्ट कंम्पटीशन का आयोजन किया गया

मीरजापुर। राष्ट्रीय विज्ञान दिवस पर विज्ञान क्विज प्रोजेक्ट कंपटीशन एवं वार्षिक कैलेंडर में विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले बच्चों को प्रमाण पत्र मेडल से पुरस्कृत करना प्रथम संदेश रही द्वितीय प्राजंलि दुबे तृतीय जैस्मिता प्रजापति गरिमा में उपस्थिति में खंड शिक्षा अधिकारी 96 ब्लॉक प्रमुख प्रतिनिधि शुभम सिंह वर्तमान जिला पंचायत सदस्य कोराव सोमदत्त पटेल, ब्लॉक प्रमुख प्रत्याशी मंडा डॉ रवि शंकर पांडे जी, पंच बहादुर सिंह जी, विजय बहादुर यादव, सत्येंद्र सिंह, मंजुला मौर्य, अखिलेश शुक्ला, हरिशंकर सिंह, सत्येंद्र सिंह, इआरपी राष्ट्रीय छात्रवृत्ति आय परीक्षा में कुल 4 छात्र-छात्राओं ने सफलता अर्जित की है प्राजंलि, संदेश दिव्यांश, जैस्मिता आदि।

प्रभारी चिकित्सा अधिकारी व सीपीएम को अनुपस्थित रहने पर आशा संगीनियों ने तहसील दिवस पर जिलाधिकारी को दिया पत्रक

हलिया, मीरजापुर । हलिया प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में प्रभारी चिकित्सा अधिकारी व सीपीएम को अनुपस्थित रहने पर आशा संगीनियों ने व मनोकामना मिश्रा ने तहसील दिवस पर प्रार्थना पत्र देकर बताया कि प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र हलिया से प्रभारी चिकित्सा अधिकारी व सीपीएम अक्सर स्वास्थ्य केंद्र छोड़कर गायब रहते हैं संविदा सीपीएम अनिल कुमार द्वारा प्रधानमंत्री वंदना योजना साड़ी ड्रेस में कमीशन की मांग की जाती है प्रभारी चिकित्सा अधिकारी द्वारा जनसमूह की समस्या का निदान नहीं किया जाता है आए दिन गर्भवती महिलाओं नवजात शिशु मौत के कगार पर पहुँच जाते हैं किंतु मामले को संज्ञान में नहीं लिया जाता है प्रार्थी एवं क्षेत्र की आशा संगिनी कार्य करती द्वारा प्रभारी चिकित्सा अधिकारी हलिया जनपद के उच्च अधिकारियों को कई एक बार प्रार्थना पत्र दिया गया लेकिन डॉक्टर व सीपीएम के ऊपर कोई कार्रवाई नहीं हुआ जिससे शनिवार को लालगंज तहसील दिवस पर आशा संगीनियों ने प्रार्थना पत्र देकर कार्रवाई का मांग किया है।

स्वयंसेवकों नें मलिन बस्ती में स्वच्छता एवं शिक्षा जागरूकता कार्यक्रम चलाया

चुनार, मीरजापुर । स्वतंत्रता संग्राम सेनानी विश्राम सिंह राजकीय महाविद्यालय चुनार मीरजापुर में शनिवार को तृतीय एकदिवसीय सामान्य कार्यक्रम के अंतर्गत मलिन बस्ती खैरुद्दीनपुर में स्वच्छता, शिक्षा एवं स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम विषय पर जनजागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। उक्त कार्यक्रम में कार्यक्रम अधिकारी डॉ दीपक कुमार सिंह के नेतृत्व में स्वयंसेवकों नें घर घर जाकर नागरिकों को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक किया। इस क्रम में प्राथमिक विद्यालय खैरुद्दीनपुर में साफ सफाई एवं श्रमदान करके पुष्प वाटिका को तैयार किया गया। साथ ही प्राथमिक कक्षा के बच्चों को शिक्षा एवं अधिकारों से परिचय कराया गया। बच्चों नें स्वयंसेवकों का स्वागत किया और उनसे सेवा कार्य सीखा।उक्त कार्यक्रम में अनुभवजन्य अधिगम,आउटरीच प्रोग्राम, डिजिटल कृषि, स्पेल, माय भारत पोर्टल में रजिस्ट्रेशन की जानकारी आकाश गिरि एवं विवेक नें दी, जिनके शासन द्वारा पांच पांच महाविद्यालय में आउटरीच कार्यक्रम करना है। उक्त कार्यक्रम में मलिन बस्ती के बच्चे एवं अभिभावकों नें अपने अधिकारों के समझा एवं प्रतिबद्धता दिखाई।उक्त अवसर पर प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक,70 स्वयंसेवक, बच्चे, नागरिक आदि उपस्थित रहे।

तहसील औराई में जिलाधिकारी व पुलिस अधीक्षक ने फरियादियों की शिकायतों को गंभीरता से सुनकर किया निस्तारण

जनपद के सभी अधिकारी/कर्मचारी भ्रष्टाचार के प्रति जीरो टॉलरेंस की नीति पर करें कार्य जिलाधिकारी

● जिलाधिकारी के समक्ष भूमि पैमाइश की अधिकांश शिकायत आने पर राजस्व व पुलिस की संयुक्त टीम बनाकर प्रभावी कार्रवाई करने का उप जिलाधिकारी को दिया निर्देश

राजस्व व पुलिस की संयुक्त टीम, मौके का स्थलीय निरीक्षण कर कराए संतुष्टिपरक निस्तारण-पुलिस अधीक्षक

स्वतंत्र प्रभात

भदोही - शासन के मंशानुरूप जनशिकायतो के त्वरित निस्तारण एवं कार्यवाही के दृष्टिगत ''सम्पूर्ण समाधान दिवस'' जनपद के सभी तहसीलों में आयोजित किया गया। तहसील औराई में जिलाधिकारी विशाल सिंह एवं पुलिस अधीक्षक अभिमन्यु मांगलिक, सीएमओ डॉ संतोष कुमार चक, उप जिलाधिकारी औराई बरखा सिंह, तहसील ज्ञानपुर में अपर जिलाधिकारी कुंवर वीरेंद्र मौर्य, अपर पुलिस अधीक्षक डॉ0 तेजवीर सिंह, उप जिलाधिकारी अरुण गिरी, तहसील भदोही में अपर जिलाधिकारी शिव नारायण सिंह,उप जिलाधिकारी श्याम मणि त्रिपाठी, अन्य अधिकारियो द्वारा सम्पूर्ण समाधान दिवस में उपस्थित होकर फ़रियादियों की समस्याओ को गंभीरता से सुन कर निस्तारण किया गया। सभी तहसीलों में जिलाधिकारी के निर्देश के क्रम में लगायें गये विभिन्न कैम्पो- बाल विकास पुष्टाहार विभाग, आयुष्मान गोल्डेन कार्ड, परिवार नियोजन, समाज कल्याण विभाग द्वारा वृद्धावस्था पेंशन, महिला कल्याण विभाग द्वारा महिलाओं एवं बालिकाओं के उन्ययन हेतु विविध योजना मिशन शक्ति, राजस्व विभाग हेल्प डेस्क, जागरूकता हेतु लगाये गये। तहसील औराई में जिलाधिकारी व पुलिस अधीक्षक ने निरीक्षण करते हुयें उनके द्वारा लाभार्थियों को दी जाने वाली योजनाओं एवं सुविधाओं की जानकारी ली।

जिलाधिकारी के समक्ष विभिन्न विभागो से सम्बन्धित तहसील औराई में फरियादियो के द्वारा कुल 57 समस्याओ से अवगत कराया गया। जिसमें से जिलाधिकारी व पुलिस अधीक्षक द्वारा 05 प्रार्थना पत्रो को मौके पर ही निस्तारित करते हुये शेष 52 प्रार्थना पत्रो को सम्बन्धित विभाग के अधिकारियो को निर्धारित समय सीमा के अन्दर गुणवत्तापूर्ण ढंग से निस्तारित करने का निर्देश दिया गया। इस अवसर पर जिलाधिकारी विशाल सिंह ने कहा कि आज तहसील दिवस में अधिकांश शिकायतें भूमि पैमाइश को लेकर रही जिसके लिए राजस्व व पुलिस की संयुक्त टीम मौके का स्थलीय निरीक्षण कर रिपोर्ट लगाएंगी तथा प्रभावी क्रियान्वयन करना सुनिश्चित करेंगे। केंद्र व प्रदेश सरकार की जन कल्याणकारी योजनाओं का लाभ आम जनमानस व अंत्योदय तक पहुंचे, इसके लिए सभी विभागाध्यक्षों को निर्देशित किया गया है।

जिलाधिकारी ने कहा कि उप जिलाधिकारी, तहसीलदार व नायब तहसीलदार अपने-अपने कोर्टो के लंबित मुकदमों का गुणवत्तापरक व ससमय निस्तारण करना सुनिश्चित करें। उन्होंने बताया कि मुकदमे के सुनवाई के लिए आम इंसान व किसान दूरदराज के क्षेत्रों से बड़ी आशा के साथ आते हैं,उनके केसों को जल्द ही डिस्पोजल किया जाए। जनपद भदोही के सभी अधिकारी/कर्मचारी भ्रष्टाचार के प्रति जीरो टॉलरेंस की नीति पर कार्य करें।उन्होंने सभी विभागाध्यक्षों को निर्देशित किया कि देश व प्रदेश में जो इन्नोवेशन/नवाचार कार्य हो रहे हैं वह अपने यहां भी क्रियान्वित करें । पुलिस अधीक्षक अभिमन्यु मांगलिक ने कहा कि राजस्व संबंधित मामलों में कानूनगो ,लेखपाल व पुलिस की संयुक्त टीम द्वारा स्थलीय निरीक्षण,सत्यापन कर एक हफ्ते के अन्दर निस्तारण करने का निर्देश दिया। संयुक्त टीम मौके पर जाकर दोनो पक्षों व गवाहों के साक्ष्य लेते हुए स्पॉट नोट तैयार कर उसपर हस्ताक्षर कराये। उन्होंने सभी तहसीलदारों को निर्देशित किया कि जो मामले या विवाद बार बार आ रहे है,उनकी सूची बनाकर पुलिस के साथ मिलकर मामले का निस्तारण करना सुनिश्चित करायें। सम्पूर्ण समाधान दिवस पर तीनों तहसील में उपर्युक्त अधिकारियों द्वारा कुछ फरियादियों की समस्याओं का त्वरित निस्तारण करते हुए शेष निस्तारण के लिए सम्बन्धित अधिकारियों को निर्देशित किया गया। संपूर्ण समाधान दिवस तहसील भदोही में प्राप्त कुल 32 शिकायतों में 05 का त्वरित निस्तारण, तहसील ज्ञानपुर में कुल प्राप्त 28 शिकायतों में से 06 का त्वरित निस्तारण किया गया।

दूषित पानी पीने से 16 से ज्यादा लोग हुए बीमार

● विंध्याचल सीएचसी में भर्ती कराया गया सभी का चल रहा इलाज

स्वतंत्र प्रभात

मीरजापुर, विंध्याचल। दूषित पानी पीने से उल्टी दस्त की शिकायत होने पर पहुंचाया गया अस्पताल सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में चल रहा सभी का इलाज़ वहीं दो मरीजों की हालत गंभीर होने पर मंडलीय अस्पताल रेफर कर दिए गए हैं। सभी मरीज विंध्याचल थाना क्षेत्र के सदर बाजार बलुआ घाट एवं चिकान टोला के निवासी हैं। बताते चलें कि नगर पालिका प्रशासन की ओर से सदर बाजार कोतवाली मार्ग पर टुबेल लगा हुआ है पानी की सप्लाई क्षेत्र में होती है विगत एक हफ्ते से गंदा पानी नल में आ रहे थे उच्च अधिकारियों से शिकायत करने के उपरांत भी सुधार नहीं हुए जिसके कारण आधा दर्जन से अधिक लोग बीमार हो गए जिसका इलाज चल रहा है वही मरीज भर्ती हुए हैं । अभिषेक पाडेय 17 वर्ष, सैफ 15 वर्ष, आनंद 26 वर्ष,मानवी 10 वर्ष,कृति 18 वर्ष,अवंतिका 8 वर्ष ,सुमन 22 वर्ष, दुर्गा 15 वर्ष ,संग्राम 19 वर्ष, आकाश 21 वर्ष, प्रियंका 20 वर्ष ,आयुष 16, वर्ष रेहान 9 वर्ष, सीता 35 वर्ष,इन सभी मरीजों को विंध्याचल सीएचसी में भर्ती कर उपचार किए जा रहे हैं वहीं , बाबू 18 वर्ष, दुर्गा 14 वर्ष हालत गंभीर होने पर मंडली चिकित्सालय मीरजापुर रेफर किए गए हैं। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र प्रभारी डॉक्टर संतोष कुमार सिंह ने बताया कि वायरल फीवर एवं गंदा पानी पीने से आधा दर्जन से अधिक मरीज की तबीयत बिगड़ी हुई है। सभी मरीजों को भर्ती कराए गए हैं जिनका इलाज सुचारू रूप से किया जा रहा है वही हालत गंभीर होने पर दो मरीजों को मंडलीय चिकित्सालय भी रेफर किए गए हैं।

सम्पूर्ण समाधान दिवस पर मण्डलायुक्त व पुलिस महानिरीक्षक मीरजापुर की तहसील मड़िहान में सुनी गई जन समस्याएं

●सम्बन्धित को गुणवत्तापूर्ण व समयबद्ध निस्तारण के दिए गए निर्देश

जमीन व राजस्व विवादों में पुलिस व राजस्व की संयुक्त टीम कराये निस्तारण

स्वतंत्र प्रभात

मीरजापुर । शनिवार को शासन के निर्देशानुसार जनता की समस्याओं को सुनकर उनके त्वरित निस्तारण हेतु परिक्षेत्र के समस्त तहसीलों पर सम्पूर्ण समाधान दिवस का आयोजन किया गया । इस अवसर पर मण्डलायुक्त विन्ध्याचल मण्डल ÷बालकृष्ण त्रिपाठी÷ व पुलिस महानिरीक्षक विन्ध्याचल परिक्षेत्र, मीरजापुर ÷आर.पी. सिंह÷ द्वारा जनपद मीरजापुर के तहसील मड़िहान में फरियादियों की समस्या सुनकर समाधान का भरोसा दिलाया तथा अधीनस्थों को निर्देश दिया कि शिकायतों के निस्तारण की गुणवत्ता का भी ध्यान रखा जाए, समाधान ऐसा करें कि फरियादी संतुष्ट हो जाए और उन्हें दोबारा शिकायत करने की जरूरत न पड़े एवं यह भी निर्देश दिया कि जनशिकायतों का निस्तारण शासन की सर्वोच्च प्राथमिकता वाले बिंदुओं में से एक है, इसमें किसी भी प्रकार की लापरवाही या उदासीनता न बरती जाए। राजस्व से सम्बन्धित प्रकरणों में राजस्व व पुलिस की संयुक्त टीम द्वारा समयबद्ध और गुणवत्तापूर्वक निस्तारण निर्धारित समयावधि के भीतर किए जाए तथा शिकायतों का निस्तारण कागजों तक सीमित ना हो, शिकायतकर्ता की शिकायत का वास्तविक निस्तारण हो । भूमि विवाद, चकरोड व अवैध कब्जा आदि की शिकायतों का निस्तारण राजस्व व पुलिस की संयुक्त टीम मौके पर जाकर करें । संबंधित थाना प्रभारी को असामाजिक तत्वों को चिन्हित करते हुए निरोधात्मक कार्यवाही किए जाने का निर्देश दिया गया । इस दौरान कुल 67 प्रार्थना पत्र प्राप्त हुए थे, जिसमें से 05 प्रार्थना पत्रों का मौके पर निस्तारण किया गया तथा शेष प्रार्थना पत्रों को पुलिस और राजस्व की संयुक्त टीम बनाकर निस्तारण करने हेतु निर्देशित किया गया । साथ ही पिछले सम्पूर्ण समाधान दिवस पर प्राप्त प्रार्थना पत्रों की समीक्षा करते हुये, निस्तारण हेतु शेष प्रार्थना पत्रों को तत्काल गुणवत्तापूर्वक निस्तारण करने के निर्देश दिया। इस दौरान उपजिलाधिकारी मड़िहान, अपर पुलिस अधीक्षक आपरेशन मीरजापुर सहित पुलिस एवं राजस्व के अन्य अधिकारी/कर्मचारीगण मौजूद रहे ।

आंकाक्षी विकास खण्ड औराई को ओवर ऑल डेल्टा रैकिंग में प्रथम स्थान प्राप्त होने पर कर्मचारियों व अधिकारियों को दिया बधाई-जिलाधिकारी

स्वतंत्र प्रभात

भदोही :- आकांक्षी विकास खण्ड औराई जनपद भदोही को ओवर ऑल डेल्टा रैकिंग के आधार आंकाक्षी विकास को प्रदेश में प्रथम स्थान प्राप्त होने पर जिलाधिकारी विशाल सिंह विकास खण्ड कार्यालय पहुँचकर, ब्लाक प्रमुख बृजमोहन मिश्रा एवं खण्ड विकास अधिकारी दिलीप कुमार एवं सम्बन्धित अधिकारी एवं कर्मचारियों की सराहना व प्रशंसा करते हुए बधाई दी, और कहा कि आप लोगों के कड़ी मेहनत लगन के कारण जनपद को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ है व शासन द्वारा विकास के लिए पुरस्कार स्वरूप 2 करोड़ 50 लाख की धनराशि मुहैया करायी गयी है। उस पैसे का अच्छे कार्य सदुपयोग के लिए किया जाय जिससे विकास खण्ड औराई में विकास दिखाई दे। उन्होंने कहा कि भदोही मीरजापुर रोड नरथुआ तालाब अग्नि बालि जगह सुन्दरीकरण कराया जाय। जिससे विन्ध्याचल आने जाने वाले पर्यटक रूके। जिलाधिकारी विशाल सिंह द्वारा निर्देशित किया गया कि आंकाक्षी जनपद में के जितने इण्डीकेटर्स है उसमें कौन सा पिछड़ा हुआ है उस पर तत्काल प्रस्ताव बनाकर प्रेषित करने का निर्देश खण्ड विकास अधिकारी को दिया। जहाँ मा0 ब्लाक प्रमुख बृजमोहन मिश्रा, खण्ड विकास अधिकारी दिलीप कुमार, सीएम फेलो डॉ0 मधू शास्त्री, एवं अन्य सभी लोग उपस्थित रहे।

एक अप्रैल से आफलाइन रसीद के माध्यम से सभी भुगतान पर रोक,एन डी एस ऐप से होगा सभी टैक्सो का ऑनलाइन भुगतान

स्वतंत्र प्रभात

मीरजापुर। नपाध्यक्ष श्यामसुंदर केशरी ने पालिका के डिजिटलीकरण को और प्रभावी बनाने के लिए अगामी एक अप्रैल से केवल ह्ष्ठस(नगर पालिका डिजिटल सेवा) ऐप से ऑनलाइन भुगतान करने का आदेश दिया है।उन्होंने कहा कि कर संग्रह करने के लिए एक अप्रैल से रसीद,पर्ची या किसी अन्य माध्यम से रसीद जारी नहीं किया जाएगा,ना ही आफलाइन (नगद) भुगतान स्वीकार किया जाएगा।नगर पालिका में नामांतरण(दाखिल खारिज), मूल्यांकन आदि का आवेदन एन डी एस ऐप के माध्यम से आनलाइन ही होगा।जिन नागरिकों के पास ऑनलाइन कर जमा करने की सुविधा नहीं होगी या वे किसी कारण ऑनलाइन टैक्स जमा करने में उन्हें असुविधा होती है तो कर विभाग के कर समाहर्ता और राजस्व निरीक्षक भवन स्वामी के घर पहुंचकर डिजिटल माध्यम से कर का संग्रह करेंगे। टैक्स जमा करने के बाद उनको ऑनलाइन बिल भुगतान की रसीद दी जाएगी,जो पूरी तरह से ऑनलाइन प्रक्रिया के तहत ही होगी।इसके साथ ही नागरिकों की सुविधा के लिए पालिका के कर विभाग कार्यालय पर कर संग्रह केंद्र खोला गया है जहां आनलाइन भुगतान करके ऑनलाइन बिल भुगतान की रसीद दी जाएगी।नपाध्यक्ष ने कहा है कि पीएम मोदी के डिजिटल भारत के सपने को साकार करने के लिए पालिका प्रतिबद्ध है। एनडीएस के माध्यम से एक अप्रैल से सिर्फ ऑनलाइन टैक्स जमा करना होगा।

आनलाइन गृहकर-जलकर जमा करने पर 1 प्रतिशत की छूट प्राप्त होगी

नगर की जनता गूगल प्ले स्टोर से इस ऐप को डाउनलोड कर अपने टैक्स को घर बैठे ही जमा कर सकेंगी।जो लोग किसी कारण ऑनलाइन टैक्स देने में असमर्थ होंगे,उनके घर कर का संग्रह कर उन्हें ऑनलाइन बिल भुगतान का रसीद दिया जाएगा,जिसके लिए अधिकारियों एवं कर्मचारियों की जिम्मेदारी भी तय की गई है।कर विभाग के अधिकारियों को नगर के जनता के बीच जाकर शत प्रतिशत ऐप डाउनलोड कराने की जिम्मेदारी दी गई है। ऐप डाउनलोड करने के लिए पालिका द्वारा जागरूकता अभियान चलाकर लोगों को जागरूक भी किया जाएगा।ऑनलाइन प्रक्रिया से लोगो को घर बैठे करों के भुगतान के साथ बहुत सी अन्य सुविधाएं मिलेगी जिससे पारदर्शी,सुगम तरीके से लोग अपना टैक्स जमा करने के साथ अन्य समस्याओ का सहज निस्तारण करवा सकेंगे।

जिंदा आदमी को मृतक दिखाकर किए गए वारासत का मामला तहसील दिवस में रहा चर्चा का विषय

स्वतंत्र प्रभात

महराजगंज/रायबरेली। शनिवार को तहसील सभागार में आयोजित संपूर्ण समाधान दिवस एसडीएम सचिन यादव की उपस्थिति में संपन्न हुआ। इस दौरान कुल 28 शिकायतें आई। तो वही समसपुर हलोर गांव के एक व्यक्ति को राजस्व अभिलेखों में मृतक दिखाकर दूसरे व्यक्ति के नाम पाका 11 दर्ज करने की शिकायत प्रार्थी ने समाधान दिवस में की है। दिए गए शिकायती पत्र में जागेश्वर पुत्र मैकूलाल ने कहा है कि, मुझ जीवित व्यक्ति को हल्का लेखपाल व कानूनगो द्वारा मृतक दिखाकर दूसरे व्यक्ति के नाम पाका 11 कर दिया गया है। तथा कीमती जमीन को राजस्व कर्मचारीयों की मिली भगत से मुझको मृतक दिखाकर पाका 11 दूसरे व्यक्ति के नाम दर्ज किया गया है जो गलत है। यदि जल्द ही मामले को निस्तारण न किया गया तो जिलाधिकारी से मिलकर शिकायत करूंगा। आपको बता दें कि, तहसील समाधान दिवस में कुल 28 शिकायतो में राजस्व से संबंधित 09 पुलिस से संबंधित 14 विकास से संबंधित 4 और अन्य 1शिकायतें आई। जिसमें 5 शिकायतों का मौके पर ही निस्तारण कर दिया गया। शेष शिकायतो के निस्तारण हेतु सम्बन्धित को कड़े निर्देश देते हुए एसडीएम ने कहा कि मौके पर जाकर पक्षों की उपस्थिति में शिकायतो का निस्तारित करे। किसी प्रकार की लापारवाही क्षम्य नहीं है। इस मौके पर तहसीलदार मंजूला मिश्रा,नायब तहसीलदार उमेशचंद्र त्रिपाठी बीडीओ वर्षा सिंह कोतवाल जगदीश यादव बछरावा थानेदार ओम प्रकाश तिवारी, शिवगढ़ थानेदार श्याम कुमार पाल राजस्व निरीक्षक अहमद व लेखपाल राजीव मिश्र, शैलेन्द्र कुमार, राहुल त्रिवेदी, विवेक सिंह सहित अन्य मौजुद रहे।

विद्यार्थियों को दिया गया प्रशिक्षण

स्वतंत्र प्रभात

बरगढ़, चित्रकूट- राजकीय पॉलिटेक्निक कॉलिज बरगढ़ में बीती 22 फरवरी से एक मार्च शनिवार तक नंदी फाउंडेशन एवं महिंद्रा प्राइड क्लासरूम की ओर से ''एंप्लॉयमेंट स्किल डेवलपमेंट'' प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें संस्था के 45 विद्यार्थियों ने प्रतिभाग किया। महिंद्रा प्राइड क्लासरूम के ट्रेनर अनूप कुमार द्विवेदी ने बताया कि कार्यक्रम में साक्षात्कार, बॉडी लैंग्वेज, समय प्रबंधन, मनी मैनेजमेंट, नेतृत्व सहित विभिन्न बिंदुओं पर विद्यार्थियों को प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण में विद्यार्थियों ने भी अपने विचारों को अभिव्यक्त किया। जिससे विद्यार्थियों में आत्मविश्वास की वृद्धि हुई। कॉलिज के प्रधानाचार्य संतोष कुमार वैश्य ने बताया कि इस कार्यक्रम को आयोजित करने से विद्यार्थियों को भविष्य में साक्षात्कार देने में सहायता मिलेगी। कहा कि कॉलिज का उद्देश्य अच्छी शिक्षा के साथ विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास कर अच्छा प्लेसमेंट प्रदान कराना है।

आगंनबाड़ी कार्यकत्री के चयन हेतु अभिलेखो का चयन 05 व 06 मार्च को

● मूल अभिलेखो के साथ विकास भवन कार्यालय के सभागार में समय से पहुंचे अभ्यर्थी

स्वतंत्र प्रभात

मीरजापुर। जनपद मीरजापुर के शहरी/ग्रामीण 13 बाल विकास परियोजनाओं में आंगनबाड़ी कार्यकत्री के मानदेय आधारित रिक्त पदो पर चयन हेतु आवेदन करने वाले अभ्यर्थियों के अभिलेखो का मिलान/सत्यापन दिनांक 05 मार्च 2025 व दिनांक 06 मार्च 2025 को पूर्वान्ह 10 बजे से किया जाएगा। उक्त आशय की विस्तृत जानकारी देते हुए जिला कार्यक्रम अधिकारी वाणी वर्मा ने बताया कि शासनादेश संख्या-19/2023/3975/58-1-2022-2/1(27) 10 टी0सी0 दिनांक 21 मार्च 2023 के क्रम में जनपद मीरजापुर के शहरी एवं ग्रामीण 13 बाल विकास परियोजनाओं में आगंनबाड़ी कार्यकत्री के मानदेय आधारित रिक्त पदो पदो पर चयन हेतु सीधी भर्ती प्रक्रिया के तहत जिला कार्यालय अधिकारी मीरजापुर के कार्यालय के विज्ञप्ति संख्या-सी-1784 दिनांक 15.03.2024 के क्रम में चयन समिति द्वारा लिए गए निर्णयानुसार अभ्यर्थियों द्वारा आवेदन पत्र में भरे गए सभी विवरणो/मिलान/सत्यापन मूल अभिलेखो से कराया जाना है। उन्होंने सभी आवेदन करने वाले अभ्यर्थियों से कहा कि सभी अभ्यर्थी अपने आवेदन पत्र में भरे गए विवरण से सम्बन्धित समस्त मूल शैक्षिण अभिलेख/प्रमाण, अंकपत्र, आधार कार्ड एवं यदि अभ्यर्थी द्वारा आरक्षण से सम्बन्धित दावा किया गया है तो आरक्षण सम्बन्धित पत्र यथा-निवास प्रमाण, आय प्रमाण पत्र, जाति प्रमाण पत्र, दिव्यांगता प्रमाण पत्र, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी आश्रित प्रमाण पत्र, विधवा से सम्बन्धित प्रमाण पत्र, तलाकशुदा/परित्यक्तता से सम्बन्धित प्रमाण पत्र, आर्थिक रूप से कमजोर (ई0डब्लू0एस0) प्रमाण पत्रों की मूल प्रति एवं स्वाप्रमाणित छायाप्रति के साथ निर्धारित तिथि व समय पर विकास भवन सभागार कक्ष पथरहिया मीरजापुर में निर्धारित समय सारणी के अनुसार उपस्थित होना सुनिश्चित करें।

उन्होंने बताया कि परियोजना/विकास खण्ड कोन, मझवां, सीखड़, नरायनपुर, सिटी ग्रामीण, एवं जमालपुर के अभ्यर्थी दिनांक 05 मार्च 2025 को तथा परियोजना/विकास खण्ड राजगढ़, पहाड़ी, छानबे, हलिया, नगर, मड़िहान तथा लालगंज के अभ्यर्भी दिनांक 06 मार्च 2025 को पूर्वान्ह 10 बजे उपरोक्तानुसार अपने मूल अभिलेखो/प्रमाण पत्रो के साथ उपस्थित होना सुनिश्चित करें। जिन अभ्यर्थियों के अभिलेखो का मिलान/सत्यापन होना है उनकी सूची जनपद की जिला सूचना विज्ञान केन्द्र (एन0आई0सी0) की बेबसाइट https://mirzapur.nic.in/ पर उपलब्ध है तथा जिलाधिकारी, मुख्य विकास अधिकारी एवं बाल विकास परियोजना अधिकारी के सूचना पट्ट पर चस्पा भी की गई हैं। उन्होंने बताया कि सूची के अनुसार समस्त अभ्यर्थी अपने उपरोक्तानुसार अभिलेखो के साथ स्वंय निर्धारित, समय व स्थान पर उपस्थित होना सुनिश्चित करे यदि उपरोक्त मूल अभिलेखो के साथ प्रतिभाग नही किया जाता है तो उनके अभ्यर्थन पर विचार नही किया जाएगा, इसके लिए अभ्यर्थी स्वंय जिम्मेदार होंगे। उपरोक्त के लिए अलग से किसी भी प्रकार यात्रा भत्ता देय नही होगा।

प्रयागराज के अतीक अहमद के कार्यालय में लगी आग,धुआं उठते देख लोगों की जुटी भीड़!

स्वतंत्र प्रभात

प्रयागराज। प्रयागराज के चकिया में अतीक अहमद के बंद कार्यालय में आग लग गई। बिल्डिंग से ऊंची-ऊंची लपटें उठने लगी। चारों तरफ धुंआ फैल गया। धुंआ उठते देख मौके पर लोगों की भीड़ जमा हो गई। आस पास के मकान के लोग घर से बाहर निकल आए। फौरन फायर ब्रिग्रेड को सूचना दे दी गई।सूचना मिलते ही फायर ब्रिगेड की तीन गाड़ियां मौके पर पहुंच गई। आधे घंटे में आग पर काबू पा लिया। इस घटना में कोई हताहत नहीं हुआ है। आग कैसे लगी, अभी इसका पता नहीं चल पाया है। हादसे वाली जगह से मिला था कैश और असलहे स्थानीय लोगों के अनुसार प्रशासन शहर में माफियाओं के

खिलाफ तेजी से अभियान चलाकर कार्रवाई कर रहा है। अतीक के जिस कार्यालय मेंआज आग लगी है। यहां पर अतीक अहमद का दरबार सजा करता था। चेकिंग के दौरान यहां से लाखों रुपए और असलहे बरामद हुए थे। जिसके बाद पीडीए ने बिल्डिंग के एक हिस्से को बुलडोजर से ध्वस्त कर दिया था।

कौन था अतीक अहमद

अतीक अहमद प्रयागराज का रहने वाला था। वह गैंगस्टर से सांसद बना था। समाजवादी पार्टी समेत अन्य पार्टी से चुनाव लड़कर जीता था। 15 अप्रैल 2023 को काल्विन हास्पिटल में मेडिकल कराने जाने के दौरान तीन हमलावरों ने उसे गोली मार दी थी। उस पर उमेश पाल की हत्या कराने का आरोप था। प्रयागराज में हमलावरों ने रात में अतीक को गोली मार दी थी। वारदात के बाद हत्यारे मौके से ही गिरफ्तार कर लिए गए थे।

प्रशिक्षण के उपरांत स्वरोजगार विकसित करें : संयुक्त कृषि निदेशक, प्रयागराज

स्वतंत्र प्रभात

ब्यूरो प्रयागराज । औद्यानिक प्रयोग एवं प्रशिक्षण केंद्र खुसरोबाग प्रयागराज में चल रहे माली प्रशिक्षण कार्यक्रम अंतर्गत शनिवार को संयुक्त कृषि निदेशक एस पी श्रीवास्तव द्वारा प्रतिभागियों को कृषि विभाग द्वारा संचालित योजनाओं की जानकारी देते हुए बताया गया कि वर्तमान समय में प्राकृतिक के खेती करना किसानों के लिए लाभकारी है उद्यान विभाग द्वारा दिए जा रहे मालियों के प्रशिक्षण में स्वरोजगार की संभावनाओं पर जोर देते हुए श्री श्रीवास्तव द्वारा कहा गया कि यह योजना युवाओं को स्वावलंबी बनाने में सार्थक साबित होगी तकनीकी सत्र में डॉ. अनुराग रजनीकांत तायडे सहायक प्राध्यापक कीट विज्ञान विभाग सैम हिग्गिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी और विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज द्वारा पाठशाला में लगने वाले प्रमुख कीटों की पहचान तथा उनके प्रबंधन के विषय पर प्रतिभागियों को विस्तृत जानकारी दी गई इसके अलावा राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन योजना की तकनीकी सहायक मोहम्मद साकिब ने अपने ज्ञान से प्रतिभागियों को जागरूक किया इसके अलावा कार्यक्रम में औद्योगिक प्रयोग एवं प्रशिक्षण केंद्र के प्रशिक्षण प्रभारी वीके सिंह तथा सहायक उद्यान निरीक्षक विवेक श्रीवास्तव उपस्थित रहे।

रिजवी कप आबिस एण्ड साकिब रिजवी मेमोरियल क्रिकेट प्रतियोगिता का आगाज आज से

स्वतंत्र प्रभात

कौशाम्बी। हर वर्ष की भान्ति इस वर्ष भी प्रदेश की प्रतिष्ठित प्रतियोगिता जो मरहूम आबिस और साकिब की याद में आयोजित की जाती है, 2 मार्च से रिज़वी कॉलेज के मैदान पर दिनांक 2 मार्च से रिज़वी कॉलेज के मैदान पर आयोजित होगी। आयोजन सचिव शैलेन्द्र सिंह के अनुसार इस प्रतियोगिता में कुल 8 टीमों को प्रवेश दिया है। जिसमें गत उपविजेता हरियाणा के अलावा अन्य 7 टीम प्रदेश के विभिन्न जिलों से सम्बद्ध है। यह प्रतियोगिता नॉक आउट आधार पर एकदिवसीय प्रारूप में आयोजित होगी। इस प्रतियोगी में विजेता टीम को 2 लाख व उपविजेता को 1.5 लाख रुपए के साथ अन्य पुरस्कार प्रदान किए जायेंगे। प्रतियोगिता में कई नामी खिलाड़ियों के नाम आने की उम्मीद है। प्रतियोगी का प्रतियोगिता उद्घाटन कौशाम्बी जिला के जिला जज माननीय अनुपम कुमार के कर कमलों के द्वारा होगा। यह समस्त जानकारी कॉलेज के प्रबन्धक और कौशाम्बी क्रिकेट एसोसिएशन के अध्यक्ष राशिद रिज़वी ने दी है।

जिलाधिकारी ने समाधान दिवस मंझनपुर में जनशिकायतों को सुनकर सम्बन्धित को दिये आवश्यक दिशा-निर्देश

स्वतंत्र प्रभात

कौशाम्बी। जनपद कौशाम्बी के सभी तहसीलों में आज सम्पूर्ण समाधान दिवस का आयोजन किया गया। जिलाधिकारी मधुसूदन हुल्गी एवं पुलिस अधीक्षक बृजेश कुमार श्रीवास्तव ने तहसील मंझनपुर में जनशिकायतों को सुनकर सम्बन्धित अधिकारियों को गुणवत्तापूर्ण व समयान्तर्गत निस्तारित करने के निर्देश दिये। जिलाधिकारी ने राजस्व से सम्बन्धित शिकायतों पर राजस्व एवं पुलिस की संयुक्त टीम को मौके पर जाकर शिकायत को निस्तारित करने के निर्देश दिये। तहसील दिवस में अधिशासी अधिकारी-करारी के अनुपस्थित रहने पर जिलाधिकारी ने कड़ी नाराजगी व्यक्त करते हुए वेतन रोकने एवं स्पष्टीकरण जारी करने के निर्देश दिये। जिलाधिकारी ने सभी अधिकारियों को तहसील दिवस एवं आईजीआरएस पर प्राप्त शिकायतों को गम्भीरता से लेते हुए गुणवत्तापूर्ण/समयान्तर्गत निस्तारित करने के निर्देश देते हुये कहा कि यह सुनिश्चित किया जाय कि कोई भी शिकायत लम्बित न होने पाये। सम्पूर्ण समाधान दिवस में कुल 47 शिकायतें प्राप्त हुई, जिसमें से 04 शिकायतों का निस्तारण मौके पर ही कर दिया गया। समाधान दिवस में शिकायतकर्ता मो0 कदीर निवासी ग्राम-गुलामनूर का पूरा द्वारा प्रार्थना पत्र देकर अवगत कराया गया कि हर-घर नल योजना के तहत घर में पानी का कनेक्शन नहीं दिया गया है, जिस पर जिलाधिकारी ने अधिशासी अभियन्ता जल निगम को जॉच कराकर आवश्यक कार्यवाही करने के निर्देश दिये। इसी प्रकार सुशीला देवी निवासी ग्राम-गौसपुर टिकरी द्वारा प्रार्थना पत्र देकर अवगत कराया गया कि प्रार्थिनी को पट्टा आवन्टित हुआ था, जिस पर निर्माण कराकर निवास भी कर रहीं है, गांव के ही कुछ दबंग व्यक्तियों द्वारा आवास खाली करने एवं जान से मारने की धमकी दी जा रही है, जिस पर जिलाधिकारी ने ईओ मंझनपुर को जॉच कराकर आवश्यक कार्यवाही करने के निर्देश दिये। तहसील सिराथू में कुल 27 शिकायतें प्राप्त हुई, जिसमें से 03 शिकायतों का निस्तारण मौके पर ही कर दिया गया तथा तहसील चायल में कुल 29 शिकायतें प्राप्त हुई, जिसमें से 02 शिकायतों का निस्तारण मौके पर ही कर दिया गया। इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी अजीत कुमार श्रीवास्तव, मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ0 संजय कुमार एवं उप जिलाधिकारी अजेन्द्र सिंह सहित अन्य सम्बन्धित अधिकारीगण उपस्थित रहे।

दस हजार रुपये का इनामिया अभियुक्त गिरफ्तार

स्वतंत्र प्रभात

ब्यूरो प्रयागराज। श्रीमान् पुलिस आयुक्त कमिश्नरेट के निर्देशन में अपराध एवं अपराधियों के विरुद्ध चलाये जा रहे अभियान में प्रभारी निरीक्षक एस0ओ0जी0 307/147/148/323/324/354/336/427/452/325 भादवि से सम्बन्धित अभियुक्त अब्दुल रहमान पुत्र यूसुफ निवासी 88 शिलाखाना कालौनी मैहदौरी थाना शिवकुटी प्रयागराज जिस पर पुलिस उपायुक्त नगर द्वारा 10,000 रुपये का पुरस्कार घोषित किया गया था को थाना क्षेत्र सुशान्त गोल्फ सिटी कमिश्नरेट लखनऊ से दिनांक 28/02/2025 को गिरफ्तार किया गया। गिरफ्तार अभियुक्त अब्दुल रहमान पुत्र यूसुफ निवासी- 88, शिलाखाना कालौनी मैहदौरी थाना शिवकुटी, कमिश्नरेट प्रयागराज बताया गया। अभियुक्त के विरुद्ध शिवकुटी थाने में तीन मुकदमे पिछले वर्षों में कायम है।

किसान भाई अन्न,मिलेट्स पुनरोद्धार योजना का 6 मार्च तक करें आवेदन

स्वतंत्र प्रभात

कौशाम्बी। उत्तर प्रदेश श्री अन्न(मिलेट्स) पुनरोद्धार कार्यक्रम के अन्तर्गत विकास भवन/जिलाधिकारी कार्यालय / प्रेरणा कैन्टीन/राज्य कर्मचारी कल्याण निगम आदि स्थानों पर मिलेट्स स्टोर की स्थापना के लिए आवेदन जनपद के समस्त कृषक उत्पादक संगठनों/ उद्यमियों/ स्वयं सहायता समूहों आदि द्वारा दिनांक-06 मार्च 2025 तक आवेदन पत्र/प्रस्ताव विभाग उप कृषि निदेशक में कर सकतें हैं। कृषि विभाग द्वारा संचालित उत्तर प्रदेश श्रीअन्न (मिलेट्स) पुनरोद्धार कार्यक्रम के अन्तर्गत विकास भवन/जिलाधिकारी कार्यालय/प्रेरणा कैन्टीन (जिलाधिकारी/मुख्य विकास अधिकारी की संस्तुति)/राज्य कर्मचारी कल्याण निगम आदि स्थानों पर मिलेट्स स्टोर की स्थापना के लिए श्रीअन्न की फसलों से बने व्यंजन/उत्पादक बनाने का अनुभव रखने वाले कृषक उत्पादक संगठनों/उद्यमियों/स्वयं सहायता समूहों आदि अपना आवेदन पत्र/प्रस्ताव अनुभव प्रमाण पत्र, आधार, पेन एवं बैंक खाते की प्रमाणित छायाप्रति पंजीकृत डाक से दिनांक-27.03.2025 तक कार्यालय उप कृषि निदेशक मंझनपुर में प्रेषित कर सकते हैं। जिलाधिकारी की अध्यक्षता में गठित चयन समिति द्वारा चयन किया जायेगा।

सूखी नहरों में पानी छोड़े जाने की मांग को लेकर सकिपा का सड़क पर उतरकर प्रदर्शन

स्वतंत्र प्रभात

कौशाम्बी। जनपद में समर्थ किसान पार्टी के तत्वावधान में शनिवार एक मार्च को जिले की सभी सूखी नहरों में पानी छोड़े जाने की मांग को लेकर मुख्यालय की सड़को पर पार्टी नेता अजय सोनी की अगुवाई में पार्टी कार्यकर्ताओं ने प्रदर्शन किया और अपर जिलाधिकारी कौशाम्बी प्रबुद्ध सिंह को एक मांगपत्र सौंपकर तत्काल नहरों एवं रजबहों में टेल तक जलापूर्ति करने की मांग की गई। सौंपे गए ज्ञापन में सिराथू ब्लॉक एवं मंझनपुर ब्लॉक के कई गांवों से गुजरती नहरों एवं रजबहों जैसे करारी माइनर, तुलसीपुर माइनर, भेलखा माइनर, समदा माइनर, उदहिन कैमा माइनर, गम्भीरा पूर्व माइनर, धमावां माइनर आदि में टेल तक जलापूर्ति किए जाने की मांग की गई। मांग न मानी जाने पर आन्दोलन किये जाने की बात कही गई। इस अवसर पर अजय सोनी ने कहा कि सिंचाई विभाग किसानो की अनदेखी कर रहा है। बार बार मांग करने के बाद भी जिले की तमाम सूखी नहरों में जलापूर्ति नही की जा रही है। कभी कुम्भ मेला में पानी भेजे जाने तो कभी कोई न कोई बहाना बनाकर सिंचाई विभाग किसानो को गुमराह कर रहा है। आगे कहा कि जल्द ही सभी सूखी नहरों में टेल तक जलापूर्ति नही की गई तो समर्थ किसान पार्टी के तत्वावधान में आन्दोलन किया जायेगा। इस अवसर पर मांगपत्र स्वीकार करते हुए अपर जिलाधिकारी कौशाम्बी प्रबुद्ध सिंह ने समुचित कार्यवाही करने का आश्वासन दिया है। इस अवसर पर भैरव प्रसाद, बद्री प्रसाद प्रजापति, मुन्ना तिवारी, फूलचन्द्र लोधी, राजकुमार साहू, प्रदीप शुक्ला, जुम्मन अली आदि मौजूद रहे।

महामाया राजकीय महाविद्यालय के विद्यार्थियों ने बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ पर नुक्कड़ नाटक किया प्रस्तुत

स्वतंत्र प्रभात

कौशाम्बी। प्राथमिक विद्यालय यूसुफपुर रारा में चल रहे महामाया राजकीय महाविद्यालय कौशाम्बी की राष्ट्रीय सेवा योजना के विशेष शिविर के अन्तर्गत आज छठवें दिन की शुरुआत योगाभ्यास से प्रारम्भ हुई तत्पश्चात् स्वयंसेवकों ने कार्यक्रम अधिकारी डॉक्टर पवन कुमार के नेतृत्व में गांव में बेटी बचाओं बेटी पढ़ाओं पर रैली एवं दीवाल लेखन के माध्यम से जन जागरूकता का प्रचार कराया। गांव में कल्पना , सावन , गौरव ,लक्ष्मी आदि की टीम द्वारा बेटी बचाओं बेटी पढ़ाओ विषय पर नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत किया गया। शिविर में लौटकर भोजन समिति द्वारा बनाए गए भोजन को ग्रहण किया। इसके उपरांत बौद्धिक सत्र में मुख्य अतिथि जिला प्रोबेशन अधिकारी की प्रतिनिधि श्रीमती मालती देवी ने नारी सशक्तिकरण को लेकर सुमंगला योजना की विस्तार से चर्चा की। जिसके अन्तर्गत दो बेटी होने पर सरकार द्वारा सहायता प्रदान की जाती है। महाविद्यालय के संरक्षक एवं प्राचार्य प्रोफेसर शैलेन्द्र तिवारी ने शिविरार्थियों का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि प्रत्येक स्वयंसेवक/स्वयंसेविकाएं समाज को आइना दिखाने का काम करते हैं। प्रोफेसर(डॉ0) अनिल कुमार सोनकर नारी स्वालम्बन के लिए शिविरार्थियों को जागरूक करने का प्रयास किया। कार्यक्रम का संचालन कार्यक्रम अधिकारी डॉक्टर पवन कुमार द्वारा किया गया इस अवसर पर डॉ अनिल कुमार सोनकर, डॉ अनिल कुमार, डॉ अजय कुमार, डॉ0 नीलम बाजपेयी, डॉ0 रीता दयाल,डा भावना केसरवानी, डॉ तरित अग्रवाल, डॉ रमेश चन्द्र, डॉ सन्तोष कुमार, डॉ शैलेश कुमार एवं विशेष शिविर में सम्मिलित समस्त स्वयंसेविकाएं/स्वयंसेवक उपस्थित रहे।

सम्पूर्ण समाधान दिवस पर अपर जिलाधिकारी व अपर पुलिस अधीक्षक ने सिराथू में की जनसुनवाई

स्वतंत्र प्रभात

कौशाम्बी। सम्पूर्ण समाधान दिवस के अवसर पर अपर जिलाधिकारी अरुण कुमार गोंड व अपर पुलिस अधीक्षक कौशाम्बी राजेश कुमार सिंह द्वारा उपजिलाधिकारी सिराथू योगेश कुमार गौड़ के साथ तहसील सिराथू में जनसुनवाई की गयी । कुल प्राप्त 27 हुये र प्रार्थना पत्रों में से 03 का मौके पर ही निस्तारण कर दिया गया है, शेष प्रकरणों में सम्बन्धित को टीम बनाकर त्वरित गुणवत्तापरक निस्तारण हेतु निर्देशित किया जा रहा है इस अवसर पर तहसील सिराथू अन्नत राम अग्रवाल नायब तहसीलदार उत्तरी विनय सिंह, नायब तहसीलदार न्यायिक अंकिता पाठक, नायब तहसीलदार दक्षिणी अतुल कुमार वर्मा, क्षेत्राधिकारी सिराथू अवधेश कुमार विश्वकर्मा सहित अधिकारीगण उपस्थित रहे।

भूमाफियाओं ने अधिकारियो को चकमा देकर दाखिल किया वाद जिला अधिकारी ने वाद को निरस्त करते हुए एक सप्ताह में बेदखल करने का दिया आदेश

स्वतंत्र प्रभात

कौशाम्बी। करारी थाना क्षेत्र के मीरापुर गांव में तालाब और खलिहान की सार्वजनिक सुरक्षित भूमि नम्बर पर जिसका आराजी संख्या 699 ख मिलजुमला रक्बा 0.008 हे0 खलिहान की खाते की सुरक्षित भूमि में दर्ज है जिस पर मीरापुर गांव के भूमाफिया हरिओम पुत्र लुसुरू ने अवैध तरीके से टीन शेड और सरकारी शौचालय बनाकर अवैध कब्जा कर रखा है इसी क्रम में भूमाफिया हरीलाल पुत्र लुसुरू ने 699 ख मिलजुमला रकबा 0.001 हे0 पर खलिहान की सुरक्षित भूमि पर मकान और सरकारी शौचालय बनाकर अवैध कब्जा कर रखा है और घनश्याम पुत्र लुसुरू तालाब की आराजी संख्या 699 क मिलजुलमा रक्बा 0.003 हे0 पक्की नींव डालकर मकान और सरकारी शौचालय बनाकर अवैध कब्जा कर रखा है जो गांव के ही तीनों बहुत बड़े भूमाफिया और दबंग व शोरेपुस्त किस्म के व्यक्ति हैं जिन्हें हल्का लेखपाल ने कई बार रोकने का प्रयास किया है लेकिन हल्का लेखपाल समेत तहसील प्रशासन मंझनपुर के अधिकारियों को ठेंगा दिखाते रहे वही तहसील प्रशासन मौके पर पहुंचकर नोटिस देते हुए कहा गया है तो सभी भूमाफियाओं ने कहा की अवैध कब्जा एक हफ्ते के भीतर हटा लेंगे लेकिन एक हफ्ता नहीं बल्कि एक महीना समय बीत गया परन्तु अवैध कब्जा को अभी तक नहीं हटाया है जिस पर 28 फरवरी को जिलाधिकारी कौशाम्बी ने अपने कोर्ट के माध्यम से निर्णय लेते हुए तहसील प्रशासन मंझनपुर को आदेशित किया गया है कि एक सप्ताह के भीतर अवैध कब्जा को हटाकर सरकारी सुरक्षित भूमि को सुरक्षित किया जाए और साथ ही जुर्माना वसूली करने का आदेश हुआ है।

अर्का फतेहपुर पावर हाउस से विद्युत सप्लाई रहेगी बन्द

कौशाम्बी। जनपद के अर्का फतेहपुर पावर हाउस में पैनल के काम को लेकर विद्युत सप्लाई 2 मार्च को 11ः00 बजे दिन से 4ः00 बजे शाम तक ठप रहेगी विभाग में उपभोक्ताओं को पूर्व से सूचित कर उन्हें आगाह कर दिया है अर्का फतेहपुर पावर हाउस के जेई निसार अहमद ने बताया है कि 02 मार्च समय 11बजे से 4ः00 बजे तक विद्युत सप्लाई बन्द रहेगी,उप खण्ड अधिकारी सराय अकिल विनय सिंह उपभोक्ताओं को सूचित कर रहे है कि वह समय से अपना आवश्यक कार्य कर लें ताकि उपभोक्ताओं को समस्या का सामना न करना पड़े।

सीओ मंझनपुर द्वारा थाना मंझनपुर व थाना करारी का किया गया त्रैमासिक निरीक्षण

कौशाम्बी। क्षेत्राधिकारी मंझनपुर द्वारा थाना मंझनपुर एवं थाना करारी का त्रैमासिक निरीक्षण किया गया इस दौरान थाना कार्यालय,महिला हेल्प डेस्क,सीसीटीएनएस कार्यालय का निरीक्षण कर रजिस्टरों को चेक किया गया एवं अद्यावधिक रखने व दस्तावेजों के रख-रखाव हेतु दिशा निर्देश दिए गए साथ ही हवालात, मालखाना,मेस,टॉयलेट, बन्दी गृह तथा थाना परिसर आदि का भ्रमण कर निरीक्षण किया गया एवं सम्बन्धित को साफ-सफाई हेतु आवश्यक निर्देश दिए गये।

सात दिवसीय एनएसएस शिविर का शुभारंभ

स्वतंत्र प्रभात

सिद्धार्थनगर। शिवपति स्नातकोत्तर महाविद्यालय शोहरतगढ़ के राष्ट्रीय सेवा योजना का सात दिवसीय विशेष शिविर का शुभारंभ शोहरतनाथ मंदिर पर शनिवार को प्राचार्य प्रोफेसर अरविंद कुमार सिंह ने माँ सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण कर किया। एनएसएस स्वयंसेवकों द्वारा सरस्वती वंदना प्रस्तुत की गई। शिविर के मुख्य अतिथि महाविद्यालय के प्राचार्य प्रोफेसर अरविंद कुमार सिंह ने कहा कि समाज की सेवा करने से न केवल समाज को लाभ होता है, बल्कि हमारे स्वयं के जीवन में भी सकारात्मक परिवर्तन आते हैं। सेवा के माध्यम से हम जीवन में धैर्य, सहनशीलता, और समर्पण के मूल्यों को आत्मसात करते हैं। कहा कि एनएसएस हमें नेतृत्व,अनुशासन और टीम वर्क की महत्वपूर्ण क्षमताओं को विकसित करने में सहायता करती है। सभी स्वयंसेवकों को यह संकल्प लेना चाहिए कि हम अपने ज्ञान और क्षमताओं का प्रयोग समाज की भलाई के लिए करेंगे। लक्ष्य व देश भक्ति गीत का गायन करते स्वामी विवेकानंद एवं रानी लक्ष्मीबाई इकाइयों के स्वयंसेवक ने गोंद लिए गए गांधीनगर वार्ड नंबर- 10 एवं शिवनगर वार्ड नंबर- नौ में स्वच्छता व स्वास्थ्य जागरूकता का कार्यक्रम चलाया। इस दौरान डॉ0 धर्मेंद्र सिंह, डॉ0 मुकेश कुमार, डॉ0 विनोद कुमार, डॉ0 प्रवीण कुमार, डॉ अजय कुमार, डॉ0 सत्यनारायण दास, जयराम, रमेश, देवेंद्र सिंह, अश्वनी सिंह, राजीव वर्मा, सुशील कुमार आदि मौजूद रहे।

मीरा की भक्ति का सजीव मंचन देख मंत्रमुग्ध हुए दर्शक

स्वतंत्र प्रभात

सिद्धार्थनगर। भनवापुर क्षेत्र के महादेव गजपुर गांव के नौ दिवसीय शतचंडी महायज्ञ में चल रहे रासलीला के छठे दिन शुक्रवार रात वृन्दावन से आए बाल कलाकारों ने भगवान कृष्ण की परम भक्त मीराबाई की भक्ति चरित्र लीला का मंचन किया गया। वृन्दावन से आए हुए कलाकारों द्वारा लीला मंचन में दिखाया उक्ति राजपरिवार में जन्मी मीराबाई के बाल मन में कृष्ण की ऐसी छवि बसी थी कि यौवन काल से लेकर मृत्यु तक मीरा ने कृष्ण को ही अपना सब कुछ माना। मीराबाई के बचपन में एक दिन उनके पड़ोस किसी बड़े आदमी के यहां बारात आई थीं।सभी स्त्रियां छत पर खड़ी हो कर बारात देख रहीं थीं। मीराबाई भी उनके साथ बारात देख रहीं थीं।इस दौरान मीरा ने अपनी माता से पूछा कि मेरा दूल्हा कौन है।इस पर मीराबाई की माता ने श्री कृष्ण की मूर्ति की तरफ इशारा कर कह दिया कि वही तुम्हारे दूल्हा हैं।यह बात मीराबाई के बाल मन में एक गांठ की तरह बध गई। मीराबाई का विवाह मेवाड़ के सिसोदिया राजपरिवार में राणा सांगा के पुत्र भोजराज से कर?दिया।इस शादी के लिए पहले तो मीराबाई ने मना कर दिया पर जोर देने पर वह फूट-फूट कर रोने लगी और विदाई के समय कृष्ण की वहीं मूर्ति अपने साथ ले गई,जिसे उसकी माता ने उनका दूल्हा बताया था। मीराबाई के विवाह के दस बर्ष बाद उनके पति का देहांत हों गया। मीराबाई के कृष्ण प्रेम को देखते हुए लोकलाज की वजह से मीराबाई के ससुराल वालों ने उन्हें मारने के लिए कई चालें चली पर सब विफल रहीं। मीराबाई ने भक्ति को एक नया आयाम दिया।एक ऐसा स्थान जहां भगवान ही इंसान का सब कुछ होता है। दुनिया के सभी लोभ उस मोह से विचलित नहीं कर सकते।एक अच्छा खासा राजपाट होने के बाद भी मीराबाई वैराग बनी रहीं। कालांतर में मीराबाई द्वारिका में भगवान द्वारिकाधीश रणछोड़ जी के विग्रह में विलीन होकर भगवान श्रीकृष्ण के परम धाम चली गई।।इस अवसर पर आचार्य दुर्गेश शुक्ल, आयोजक जगराम यादव, बब्बू पान्डेय प्रधान, बुद्धिराम विश्वकर्मा, जग्गी लाल, राजेन्द्र, संतोष गुप्ता,आदि मौजूद रहे।

राष्ट्रीय आय योग्यता आधारित परीक्षा में जिले के 161 बच्चों का हुआ चयन

स्वतंत्र प्रभात

सिद्धार्थनगर । शुक्रवार को राष्ट्रीय आय योग्यता छात्रवृत्ति योजना का परिणाम घोषित हुआ । जिले के चौदह ब्लाकों के विभिन्न विद्यालयों के कुल 161 बच्चों ने सफलता हासिल की है । उधर बर्डपुर ब्लाक के पीएम श्री कंपोजिट विद्यालय चकईजोत के 2 बच्चे आकाश कुमार गौतम एवं नंदनी शर्मा ने योजना में स्थान हासिल किया है । छात्रों की सफलता पर बेसिक जिला शिक्षा अधिकारी समेत शिक्षक राजेश सिंह और अभिभावकों ने प्रसन्नता जताई है ।

वार्षिकोत्सव में विद्यालय के बच्चों ने प्रस्तुत किया मनमोहक कार्यक्रम

स्वतंत्र प्रभात

सिद्धार्थनगर। शोहरतगढ़ क्षेत्र के कम्पोजिट उच्च प्राथमिक विद्यालय चिल्हिया में शनिवार को वार्षिकोत्सव का शुभारंभ बीइओ संतोष कुमार शुक्ला ने किया। विद्यालय के छात्र - छात्राओं ने मनमोहक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। बच्चों ने नशा मुक्ति नाटक, सावन, बेटी हिन्दुस्तान की आदि कार्यक्रम ने लोगों को प्रभावित किया। सांस्कृतिक कार्यक्रम में प्रतिभागी छात्र-छात्राओं को पुरस्कार देकर बीइओ ने सम्मानित किया। इस दौरान बीइओ ने कहा कि शिक्षक अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन निष्ठापूर्वक करते। ऐसे मंच बच्चों को अपनी प्रतिभा बिखेरने का अवसर देते हैं। अभिभावकों को चाहिए कि वे स्कूल में नामांकित बच्चों को नियमित स्कूल पढ़ने के लिए जरूर भेजें। कार्यक्रम का संचालन एआरपी मुस्तन शेरुल्लाह ने किया। इस दौरान खंड शिक्षा अधिकारी संतोष कुमार शुक्ला, प्रधानाध्यापक अतिउल्लाह,अंशुमान सिंह, प्रेमशंकर, इंदरजीत, कल्पना, मोहम्मद नैयर, लालजी यादव, मनोज यादव, कल्पना, सुनीता वर्मा, आलोक कुमार, धीरेंद्र, विजय प्रकाश, सतीश सिंह, अरुणेश कुमार आदि लोग मौजूद रहे।

संक्षिप्त ख़बरें

संजीवनी विकाश फाउंडेशन ग्राहक सेवा केंद्र का विधिवत् उद्घाटन मुखिया ने किया

चौपारण- लक्ष्मण यादव के घर के सामने स्टेट बैंक ऑफ इंडिया,शाखा - चौपारण की एक सुक्ष्म शाखा के रूप में ग्राहक सेवा केंद्र की स्थापना की गई,जिसका नाम संजीवनी विकाश फाउंडेशन है और इस ग्राहक सेवा केंद्र का संचालन लक्ष्मण यादव के सुपुत्र राजेश कुमार यादव करेगें ।इस कार्यक्रम का विधिवत् उद्घाटन मुखिया जानकी यादव ने फीता काटकर की।मौके पर मुखिया ने कहा की इस ग्राहक सेवा केंद्र के खुलने से इस क्षेत्र के आम जन - मानस को बहुत सुविधा होगी।उक्त कार्यक्रम में पंचायत के कई समाज सेवी व गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

विद्यार्थियों के बीच पोशाक,जूते व मौजे का वितरण

चौपारण- प्रखंड के राजकीय प्राथमिक विद्यालय मधगोपाली में पहली तथा दूसरी कक्षा के विद्यार्थियों के बीच पोशाक,जूते व मौजे का वितरण मुखिया जानकी यादव व अन्य लोगों के द्वारा किया गया ।मौके पर समाजसेवी छोटेलाल जसवाल, गुड़िया देवी, उप मुखिया प्रतिनिधि मो मतीन, प्रभारी सह सहायक अध्यापक बालदेव साव, विद्यालय की अध्यक्षा मायावती गुप्ता, संयोजिका अनु देवी, वार्ड सदस्य कामेश्वर साव, दीपक कुमार यादव, जुगल साव, राजेश चौधरी, राजेश कुमार कुशवाहा व अन्य लोग उपस्थित हुए।

चौपारण में 03 एकड़ अवैध अफीम की खेती नष्ट, पुलिस कार्रवाई जारी

चौपारण- हजारीबाग जिले के चौपारण थाना क्षेत्र स्थित खैरीटांड जंगल में अवैध रूप से की जा रही अफीम की खेती को चौपारण थाना प्रभारी ने अपने पुलिस बल, सशस्त्र बलों और वन विभाग की टीम के साथ मिलकर नष्ट कर दिया। प्राप्त जानकारी के अनुसार, लगभग 03 एकड़ में फैली इस अवैध अफीम की खेती को पूरी तरह से नष्ट किया गया। पुलिस प्रशासन ने अब इस मामले में अफीम की खेती करने वाले व्यक्तियों की पहचान करने की प्रक्रिया शुरू कर दी है, और उनके खिलाफ अग्रतर कार्रवाई की जा रही है। पुलिस का कहना है कि इस अवैध गतिविधि को रोकने के लिए सभी आवश्यक कदम उठाए जा रहे हैं ताकि भविष्य में ऐसे मामलों को प्रभावी रूप से नियंत्रित किया जा सके।

उरवां में डीवीसी विस्थापित संघर्ष समिति का धरना 24वें दिन भी जारी

चंदवारा- उरवां में डीवीसी विस्थापित संघर्ष समिति के तहत धरना 1 मार्च 2025 को 24वें दिन भी जारी रहा। पूर्व विधायक प्रत्याशी कृष्णा यादव ने कहा कि जब तक विस्थापितों को न्याय नहीं मिलता, संघर्ष जारी रहेगा। धरने में शीतल यादव की अध्यक्षता में सभा आयोजित की गई, जिसमें समिति के संयोजक कृष्ण यादव, पंचायत मुखिया मनोज पासवान, और अन्य नेताओं ने डीवीसी प्रबंधन और जिला प्रशासन की अनदेखी पर नाराजगी जताई। धरना में महिलाएं और पुरुषों की संख्या बढ़ती जा रही है। विस्थापितों की प्रमुख मांगें में जमीन का रसीद जारी करना, मुआवजा, रोजगार, स्वास्थ्य सुविधाएं, और 100 बिस्तरों वाला अस्पताल बनाना शामिल हैं। आंदोलन तब तक जारी रहेगा जब तक इन मांगों पर ध्यान नहीं दिया जाता। धरने में सैकड़ों ग्रामीणों की उपस्थिति रही।

ट्रैक्टर पलटने से दो बच्चों की मौत, कई घायल, परिजनों में मचा कोहराम

दुर्घटना/हादसा

लोहरदगा- लोहरदगा जिले के सुदूरवर्ती नक्सल प्रभावित सेरेंगदाग थाना क्षेत्र में एक बड़ा हादसा हुआ, जिसमें दो बच्चों की मौत हो गई। यह घटना शाहीघाट-ऊपर तुरियाडीह-बतरू पथ के पास बतरू गांव के निकट हुई, जब एक ट्रैक्टर अनियंत्रित होकर पलट गया। मृतकों की पहचान 11 वर्षीय छोटू लोहार और 14 वर्षीय मनीष उरांव के रूप में की गई। दोनों बच्चे सेरेंगदाग थाना क्षेत्र के ऊपर तुरियाडीह गांव के निवासी थे। वे ईंट लदे ट्रैक्टर में बैठकर शाहीघाट से बतरू गांव की ओर जा रहे थे, जब यह दुर्घटना घटी। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, ट्रैक्टर पहाड़ी इलाके से ग्रामीण इलाके की ओर आ रहा था, जब अचानक ट्रैक्टर अनियंत्रित हो गया और पलट गया। इस हादसे में दोनों बच्चे ट्रैक्टर के नीचे दब गए और मौके पर ही उनकी मौत हो गई। घटना की सूचना मिलते ही ग्रामीणों ने सेरेंगदाग पुलिस को सूचित किया, और थाना प्रभारी रामाशीष यादव पुलिस बल के साथ घटनास्थल पर पहुंचे। उन्होंने शवों को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए लोहरदगा सदर अस्पताल भेज दिया गया। पुलिस इस हादसे की जांच कर रही है, और परिजनों से भी बयान लिया गया। इस घटना में घायलों में मंजीत उरांव, अमीन उरांव, रूपेश उरांव, प्रेम लोहरा और पंकज लोहरा शामिल हैं। हादसे के बाद बच्चों के परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है, और गांव में गहरा शोक व्याप्त है।

ध्वस्त जर्जर ग्रेड 2, स्टोन मेटल पथ पर ग्रामीणों का आवागमन हुआ जोखिम भरा

स्वतंत्र प्रभात

पाकुड़िया/पाकुड- खागाचूंआ,मुर्गाडांगा, बसंतपुर ग्रामीण सड़क जर्जर होने से लोगों के आवागमन में, कठिनाई होने की बातें इन क्षेत्रों के ग्रामीणों ने 28 फरवरी को कहीं।उक्त जीर्ण स्टोन मेटल सड़क के संदर्भ में पूछने पर लोगों ने बताया कि,यह ग्रेड टू रोड वर्षों पहले निर्माण किया गया है परंतु विगत कई सालों से, पूरी तरह जीर्ण होने से लोगों के आवागमन में बहुत ही दिक्कतें होती रही है।इस पथ के निकट के ग्रामीणों ने कहा इसी पथ से प्रतिदिन चांदना,खागाचूंआ,पाथरा,मुर्गाडांगा, बसंतपुर तथा अन्य कई ग्रामों के लोगों का आना-जाना लगा रहता है। लेकिन वर्षा के मौसम में, हम लोगों को इस सड़क से कहीं भी आवागमन में भारी कठिनाई होती रही है। लोगों ने बड़े ही दावों से कहा,इस ध्वस्त रोड पर साइकिल,वाइक या छोटे-बड़े वाहनों का चलना भी, पूरी तरह कठिनाई भरा है नंगे पांव चलना तो,पूरी तरह जोखिम भरा है और अनेकों बार पांव कट जाता है। ग्रामीणों ने बताया कि, इसी रोड के निकट सरकारी विद्यालय भी है और जर्जर पथ से ही प्रति दिन, छात्र-छात्राएं साइकिलें व पैदल बड़ी कठिनाईयों से आना-जाना करती है। वहीं ग्रामीण महिलाओं ने कहा,अच्छी पक्की सड़क के निर्माण नहीं किये जाने से हम लोगों को कहीं, आवागमन में काफी कठिनाईयों का सामना करना पड़ रहा है।एक सवाल के जवाब में महिलाओं ने कहा,यदि अच्छी पक्की सड़क का सरकार निर्माण करा दे तो, हम लोगों को आटो-टोटो से पाकुड़िया तथा कहीं भी, बाहर कम समय तथा काफी सुविधा से आ-जा सकेंगे। ग्रामीणों ने बड़े ही रोष पूर्ण मन से कहा, पाकुड़िया प्रखण्ड में बहुत गांवों में बढ़िया रोड का निर्माण किया गया है लेकिन,उक्त बहुत ही,खराब सड़क का निर्माण अब तक नहीं किये जाने से हम लोगों के, आवागमन में काफी कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है, हम सभी ग्रामीण जन विधायक प्रोफेसर स्टेफन मरांडी जी से, उक्त जीर्ण ग्रामीण रोड निर्माण कराने की मांग करते हैं ताकि हम लोगों के आवागमन में सुविधा हो।

पांच दिवसीय श्री श्री रूद्र महायज्ञ सह द्धितीय वार्षिक उत्सव का समापन

- पांच हजार से अधिक लोग भंडारे में हुये शामिल

शिवलिंग की भव्यता ने श्रद्धालुओं को मोहा, महाकाल की तर्ज पर हुई विशेष साज सज्जा

स्वतंत्र प्रभात

चौपारण, हजारीबाग- बिगहा स्थित चंद्रवंशी भवन परिसर में आयोजित श्री श्री 108 रूद्र महायज्ञ सह द्धितीय वार्षिक उत्सव हवन व भंडारे के साथ संपन्न हो गया। अंतिम दिन भंडारे में पांच हजार से अधिक लोगों ने महाप्रसाद ग्रहण किया। इसके पूर्व पूरे आयोजन में हजारों की संख्या में लोग जुटे। क्या आम क्या खास हर लोगों ने शिव मंदिर में मत्था टेक कर अपनी श्रद्धा प्रकट की। अंतिम दिन यज्ञाचार्य मुकेश पांडेय तथा बनारस से आये अन्य आचार्य ने विशेष पूजन का आयोजन किया। यज्ञ के दौरान पूजा मंडप की परिक्रमा में भी हजारों लोग जुटे। अयोध्या से पधारीं मानस प्रवक्ता मिथिलेश्वरी जी के प्रवचन में भी विशेषकर महिला श्रद्धालुओं की भीड उमड पडी। पूजा में बतौर पूजारी शशि शेखर तथा पिंटू यादव सपत्नीक शामिल हुये। आयोजन में विधायक मनोज यादव, सिमरिया विधायक उज्जवल दास, पूर्व विधायक अकेला यादव, अविनाश आर्या, इंस्पेक्टर चंद्रशेखर प्रसाद, थाना प्रभारी अनुपम प्रकाश,ज्ञप्रमुख प्रतिनिधि संजय राणा, जिप सदस्य राकेश रंजन, मुखिया प्रतिनिधि बिनोद सिंह, राजदेव यादव, जानकी यादव, विकास यादव, रामचंद्र सिंह, संजय सिंह, सतेन्द्र सिंह, गणेश सीटु, बिजय वर्मा, संजय चंद्रवंशी, पप्पू चंद्रवंशी समेत बडी संख्या में गणमान्य की उपस्थिति रही। वहीं पूरे आयोजन को सफल बनाने में चंद्रवंशी समाज अध्यक्ष छत्रधारी चंद्रवंशी, सचिव देवधारी चंद्रवंशी, मुरली चंद्रवंशी, राजेन्द्र राम चंद्रवंशी, भुनेश्वर चंद्रवंशी,यज्ञ अध्यक्ष महेंद्र चंद्रवंशी, सचिव रामाधार चंद्रवंशी, करूणा चंद्रवंशी, प्रदीप चंद्रवंशी, कृष्णा चंद्रवंशी, राजु चंद्रवंशी, मदन चंद्रवंशी, देवेंद्र चंद्रवंशी, लखन चंद्रवंशी, रामजीवन चंद्रवंशी, सुरेंद्र चंद्रवंशी, पूर्व मुखिया छोटु चंद्रवंशी, चंदन चंद्रवंशी,उमेश चंद्रवंशी, उपेंद्र चंद्रवंशी समेत सैकड़ों अन्य का योगदान रहा। बिगहा के चंद्रवंशी भवन परिसर में आयोजित द्धितीय वार्षिक उत्सव में शिवलिंग की भव्यता पर पूरे क्षेत्र में चर्चा रही। हजारीबाग जिले में लगभग चार फुट का सबसे बडा शिवलिंग यहाँ स्थापित है। बीते साल मध्यप्रदेश के नर्मदा नदी से दिव्य और अलौकिक शिवलिंग को लाया गया था। वहीं लगभग पांच क्विंटल वजन का विशाल अर्घ्य राजस्थान से मंगाया गया था। मंदिर भी आधुनिक निर्माण का बडा शैली प्रस्तुत करता है। महायज्ञ के हर दिन शिवलिंग की विशेष साज सज्जा की गई। महाकाल के तर्ज पर शिवलिंग की अदभुत साज सज्जा देखने तथा पूजन के लिए हर दिन हजारों श्रद्धालुओं की भीड देखी गई।

उपायुक्त हेमंत सती ने पहाड़ों का किया निरीक्षण, ग्रामीणों से की वार्ता

- सरकारी योजनाओं के क्रियान्वयन का लिया जायजा, रोजगार एवं आंगनबाड़ी भवन निर्माण के दिए निर्देश

स्वतंत्र प्रभात

साहेबगंज झारखंड -उपायुक्त हेमंत सती ने पगार पहाड़, बालको पहाड़ और भतभंगा पहाड़ का दौरा कर वहां की स्थिति का जायजा लिया। इस दौरान उन्होंने ग्रामीणों से मुलाकात कर सरकार की महत्वाकांक्षी योजनाओं के क्रियान्वयन एवं लाभ प्राप्ति की जानकारी ली।।निरीक्षण के क्रम में उपायुक्त ने जल जीवन मिशन के तहत की गई पेयजल आपूर्ति व्यवस्था का अवलोकन किया। उन्होंने ग्रामीणों से पूछा कि उन्हें पाइपलाइन के माध्यम से शुद्ध पेयजल मिल रहा है या नहीं। इसके अलावा प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत आवंटित आवासों की स्थिति का भी जायजा लिया। साथ ही विरसा हरित ग्राम योजना के अंतर्गत किए गए पौधारोपण कार्य एवं विरसा आवास योजना के लाभुकों से मिलकर फीडबैक लिया।

आंगनबाड़ी भवन नहीं होने पर जताई नाराजगी

निरीक्षण के दौरान उपायुक्त ने पाया कि पहाड़ों के गांवों में आंगनबाड़ी भवन का अभाव है। आंगनबाड़ी सेविका ने बताया कि वह अपने निजी आवास में आंगनबाड़ी केंद्र चला रही हैं, जिससे बच्चों को पढ़ाई के दौरान काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इस पर उपायुक्त ने तत्काल आंगनबाड़ी भवन निर्माण के लिए जमीन चिह्नित करने का निर्देश संबंधित पदाधिकारियों को दिया। उपायुक्त ने ग्रामीणों के आर्थिक सशक्तिकरण के लिए पहाड़ों पर बसे गांवों के महिलाओं एवं पुरुषों को मशरूम उत्पादन और बांस के हेड़ी क्राफ्ट की ट्रेनिंग देने का निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि इससे ग्रामीणों को स्वरोजगार के अवसर मिलेंगे और उनकी आर्थिक स्थिति मजबूत होगी। निरीक्षण के दौरान उपायुक्त ने ग्रामीणों से सीधा संवाद किया और उनकी समस्याओं को सुना। उन्होंने कहा कि सरकार की योजनाएं गांव-गांव तक पहुंच रही हैं और सभी को इनका लाभ मिलना चाहिए।

मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन ने झारखंड विधानसभा के सदस्यों के लिए आयोजित प्रबोधन-सह-प्रशिक्षण कार्यक्रम में लिया भाग

स्वतंत्र प्रभात

रांची- झारखंड मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन झारखंड विधानसभा सभागार में आयोजित षष्ठम् झारखंड विधानसभा के माननीय सदस्यों हेतु प्रबोधन-सह-प्रशिक्षण कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने अपने संबोधन में कहा कि विधानसभा भवन लोकतंत्र का सबसे बड़ा मंदिर है, जहां किसी धर्म, जाति या व्यक्ति के साथ कोई भेदभाव नहीं होता। मुख्यमंत्री ने कहा कि इस सदन में विभिन्न विचारधाराओं के लोग होते हुए भी लोकतंत्र की गरिमा बनी रहती है, और यहां सभी को समान रूप से सम्मान मिलता है। उन्होंने यह भी कहा कि इस सदन में जनहित से जुड़े मुद्दों को प्रस्तुत किया जाता है, और यह लोकतंत्र का एक अभिन्न हिस्सा है। मुख्यमंत्री ने आगे कहा कि लोकतंत्र के इस मंदिर की गरिमा और भव्यता सभी धर्मों और समुदायों के हक और अधिकार की आवाज़ को सशक्त बनाती है। उन्होंने यह भी जोड़ा कि सीखने की कोई उम्र नहीं होती, और जो भी इस सदन में आते हैं, वे न केवल सीखते हैं बल्कि जन आकांक्षाओं को भी सामने रखते हैं। मुख्यमंत्री ने राज्य के विकास को लेकर दृढ़ संकल्प व्यक्त करते हुए सभी माननीय सदस्यों से सदन की कार्यवाही में एकजुट होकर काम करने की अपील की। उन्होंने विश्वास जताया कि सभी विधायक राज्य की समृद्धि और विकास के लिए अपनी भूमिका निभाएंगे। इस कार्यक्रम में उपसभापति, राज्यसभा हरिवंश, विधानसभा अध्यक्ष रवींद्रनाथ महतो, संसदीय कार्य मंत्री राधा कृष्ण किशोर, झारखंड विधानसभा के प्रभारी सचिव मानिक लाल हेंब्रम, पी. आर. एस चक्षु राय सहित कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

दबंगों का कब्जा, राजस्व विभाग पर गंभीर आरोप

स्वतंत्र प्रभात

चित्रकूट। कर्वी तहसील के ग्राम अकबरपुर में सदर तहसीलदार की लापरवाही और अधिकारियों की मिलीभगत से ग्राम सभा की आबादी की जमीन पर दबंगों का कब्जा हो गया है। यह घटनाक्रम तब सामने आया, जब ग्राम पंचायत सदस्य अश्विनी कुमार ने कई बार शिकायत करने के बावजूद अवैध निर्माण कार्य को रोकने के लिए कोई ठोस कदम नहीं उठाए गए। इस मुद्दे में एसडीएम पूजा साहू ने तहसीलदार चंद्रकांत तिवारी को निर्देशित किया था कि वह अवैध निर्माण को तुरंत रोकें, लेकिन तहसीलदार ने इस मामले में कोई कार्रवाई नहीं की। सूत्रों के अनुसार, इस जमीन पर कब्जा करने की साजिश पहले से ही तैयार थी, जिसमें राजस्व विभाग के कर्मचारियों की भूमिका भी संदिग्ध बताई जा रही है। दबंगों ने विधवा महिला सावित्री देवी से इस जमीन का कब्जा हटा लिया, और फिर राजस्व विभाग के अधिकारियों ने दबंगों को इस भूमि पर कब्जा करा दिया। सावित्री देवी ने उच्च अधिकारियों से कई बार शिकायत की, लेकिन उसकी कोई सुनवाई नहीं हुई।

ग्राम सभा की इस भूमि पर कब्जे के मामले में तहसीलदार चंद्रकांत तिवारी की भूमिका पर सवाल उठ रहे हैं। गौरतलब है कि उन्होंने 11 जनवरी को कार्यभार संभाला था, और उसी महीने 19 जनवरी को सावित्री देवी से तहसीलदार की मौजूदगी में भूमि से कब्जा हटा दिया गया है। और उसी जमीन पर दबंगों कब्जा करा दिया गया है सूत्रों से जानकारी मिली है कि तहसीलदार चंद्रकांत तिवारी ने कब्जा दिलाने के बदले में दबंगों से मुंह मांगी रकम ली है। अब यह सवाल उठता है कि जब अधिकारियों को इस मामले की गंभीरता का पता था, तो उन्होंने कार्रवाई क्यों नहीं की? क्या यह मामले में राजस्व विभाग की मिलीभगत का हिस्सा है? इन सवालों का जवाब मिलना अभी बाकी है, लेकिन यह स्थिति ग्रामीणों और आम लोगों के लिए चिंता का विषय बन चुकी है। स्थानीय लोगों का कहना है कि अगर जल्द ही इस मामले में कोई कार्रवाई नहीं होती, तो दबंगों का उत्पीड़न और बढ़ सकता है, और ग्राम सभा की भूमि पर कब्जे की यह साजिश और भी गहरी हो सकती है। अब यह देखना होगा कि प्रशासन इस मामले में क्या कदम उठाता है और क्या दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाती है।

अखिल भारतीय कुशवाहा युवा महासभा मिलन समारोह बैठक संपन्न

स्वतंत्र प्रभात

चौपारण। चौपारण प्रखंड के अखिल भारतीय कुशवाहा महासभा होली मिलन समारोह के लोगों द्वारा एक बैठक की गई। बैठक में मुख्य रूप से मुखिया प्रतिनिधि नागेंद्र दांगी को अध्यक्ष बनाया गया तथा उनकी अध्यक्षता में रविवार 9 मार्च की तिथि तय की गई। तत्पश्चात पांच सदस्यीय टीम का चयन किया गया जो इस प्रकार है - अध्यक्ष पद हेतु सुखदेव कुशवाहा तथा सदस्य पद हेतु बसंत कुमार दांगी, प्रेम कुमार दांगी, धनेश्वर दांगी, श्याम प्रसाद दांगी, सूर्य देव कुमार दांगी, मनोज कुमार दांगी की बनाया गया। इसके पश्चात निर्णय लिया गया कि इस बार होली मिलन समारोह का आयोजन ग्राम वृंदावन लपसिया में किया जाएगा। तत्पश्चात ग्राम वृंदावन एवं लपसिया के बीच बैठक की गई तथा कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए अध्यक्ष बसंत कुमार, उपाध्यक्ष अनिल कुमार दांगी, कोषाध्यक्ष लोकेश प्रसाद दांगी एवं प्रेम कुमार दांगी का चयन किया गया जो होली समाप्त होने तक मान्य रहेगा। दिनांक 21/02/25 को दादपुर में माहेश्वरी मेहता की अध्यक्षता में आमंत्रण पत्र वितरित किया गया तथा दिनांक 23/02/25 को दैहर में कमला माता मंदिर के प्रांगण में नागेंद्र दांगी की अध्यक्षता में आमंत्रण पत्र वितरित किए गए तत्पश्चात नीमा नंदकिशोर दांगी, प्रवीण दांगी के नेतृत्व में आमंत्रण पत्र वितरित किए गए इसके पश्चात सुजी में सुभाष कुमार दांगी, मिथुन कुमार दांगी के नेतृत्व में आमंत्रण पत्र वितरित किए गए। इसके बाद 27/02/25 को मनगढ़ में लक्ष्मी प्रसाद दांगी की अध्यक्षता में मनगढ़ के कुशवाहा समाज में आयोजक मंडल के द्वारा आमंत्रण पत्र दिया गया। जिसमें उपस्थित रामसेवक प्रसाद दांगी, नंदकिशोर प्रसाद दांगी, जय नंदन प्रसाद दांगी, शंभू प्रसाद दांगी के अलावा भी कुशवाहा समाज के लोग उपस्थित थे, दिनांक 28 /2 /2025 को बरिया में रामस्वरूप प्रसाद की अध्यक्षता में होली मिलन समारोह का बैठक किया गया और आयोजक मंडल के द्वारा आमंत्रण पत्र भी दिया गया जिसमें उपस्थित लोग, रामधनी प्रसाद दांगी, विपिन कुमार दांगी, दयानंद प्रसाद दांगी, सुरेंद्र प्रसाद दांगी, बसंत प्रसाद दांगी ,और भी कई लोग कुशवाहा समाज के लोग उपस्थित थे ।

एआईएसएम जर्नलिस्ट एसोसिएशन के जिलाध्यक्ष बने रूपेश अग्रवाल, मुबारक को महासचिव की जिम्मेवारी

स्वतंत्र प्रभात

चंदवा - एआईएसएम जर्नलिस्ट वेलफेयर एसोसिएशन के झारखंड प्रदेश कमिटी के निर्देशानुसार शनिवार को सूचना जनसंपर्क कार्यालय में जिले के पत्रकारों की बैठक आयोजित की गई। बैठक में लातेहार जिला के संगठन प्रभारी उस्मान खान उर्फ राजू खान मुख्य रूप से मौजूद रहें। बैठक में सर्वसम्मति से लातेहार जिला कमिटी का पुनर्गठन किया गया है। जिसमें लातेहार के जिलाध्यक्ष के रूप में रूपेश कुमार अग्रवाल को चुना गया जबकि महासचिव के लिए मुबारक आलम को जिम्मेवारी सौंपी गयी है। पदभार ग्रहण करने के उपरांत रूपेश व मुबारक ने कहा कि राज्य कमिटी द्वारा जो जिम्मेवारी सौपी गयी है उसे पुरी ईमानदारी के साथ निर्वाहन करेंगे। उन्होंने आगे कहा कि पत्रकारों को संगठित करने के साथ साथ उनके अधिकारों को लेकर मुखर हो कर काम करने का कार्य किया जायेगा। पत्रकारों पर हो रहे हमले से लेकर उनकी विभिन्न समस्याओ को उठाने मे संगठन के कदम से कदम मिलाकर काम करेंगे। पत्रकार सुरक्षा कानून लागू कराने को लेकर आवाज बुलंद किया जायेगा। वंही संगठन प्रभारी उस्मान खान ने दोनों पदाधिकारियों को बधाई देते हुए कहा कि हम सब को मिलकर संगठन व पत्रकार हित के लिए कार्य करना है। उन्होंने दोनों पदाधिकारियों को जल्द से जल्द जिला कमिटी विस्तार कर सूची प्रदेश कमिटी को सौंपने की बात कही। अध्यक्ष और महासचिव बनने पर इन्हें राजेश प्रसाद,बबलू खान,रौशन गुप्ता,निहित कुमार,मो इरफान, संतोष कुमार,संजय कुमार यादव,डीएस यादव,मो मुमताज़,राजीव कुमार उरांव,मुकेश कुमार समेत कई पत्रकारों ने बधाई और शुभकामना दी है।

बरगढ़ के नर्स दुष्कर्म मामले में आरोपी को नहीं मिली जमानत

स्वतंत्र प्रभात

चित्रकूट -बरगढ़ क्षेत्र में नर्स के साथ हुए दुराचार के चर्चित मामले में जेल में बंद आरोपी का जमानत प्रार्थना पत्र सत्र न्यायाधीश राकेश कुमार त्रिपाठी ने निरस्त कर दिया है। जिला शासकीय अधिवक्ता फौजदारी श्यामसुंदर मिश्र ने बताया कि बीती 26 अक्टूबर 2024 को एक व्यक्ति ने बरगढ़ थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई थी। शिकायतकर्ता के अनुसार उसकी 23 वर्षीय बेटी एक अस्पताल में नर्स है। प्रतिदिन की भांति वह 26 अक्टूबर 2024 को घर से अस्पताल जाने के लिए निकली थी। इस दौरान उसे सूचना मिली की उसकी बेटी बदहवास हालत में हाथ बंधे हुए रेलवे ट्रैक के समीप मिली है। इसकी सूचना मिलने पर वह मौके पर पहुंचे तो बेटी ने बताया कि अस्पताल जाने के दौरान जंगल के रास्ते में एक व्यक्ति ने मोटरसाइकिल से उसका रास्ता रोक लिया और गिरा दिया और उसके हाथ दुपट्टे से बांधने के बाद दुष्कर्म किया। बेटी को लेकर वह बरगढ़ अस्पताल पहुंचा, जहां गंभीर हालत के चलते उसे प्राथमिक इलाज के बाद प्रयागराज के लिए रिफ़र कर दिया गया। इस मामले को लेकर पूरे जिले में हड़कंप मच गया था। पुलिस अधीक्षक ने तत्कालीन बरगढ़ थाना प्रभारी को निलम्बित कर दिया था। पीड़िता द्वारा बताए गए हुलिए के आधार पर पुलिस ने आरोपी का स्केच तैयार कराया। घटना के लगभग 11 दिन बाद पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार किया। जिसकी शिनाख्त पीड़िता द्वारा किए जाने के बाद पूरे मामले का खुलासा करते हुए आरोपी प्रयागराज जिले के शंकरगढ़ थाने के बिहरिया गांव के निवासी शुभम मिश्रा उर्फ सुग्गा को जेल भेज दिया गया था। जिसके बाद से आरोपी अब तक जेल में बंद है। अधिवक्ता के जरिए आरोपी ने सत्र न्यायाधीश न्यायालय में जमानत प्रार्थना पत्र प्रस्तुत किया था। बचाव और अभियोजन पक्ष के अधिवक्ताओं की दलीलें सुनने के बाद सत्र न्यायाधीश राकेश कुमार त्रिपाठी ने कहा कि यह एक गंभीर सामाजिक अपराध है। पुलिस की आख्या के अनुसार आरोपी पर पहले से भी दुराचार का एक मामला प्रयागराज के शंकरगढ़ थाने में दर्ज है। ऐसे में आरोपी का जमानत प्रार्थना पत्र निरस्त किए जाने योग्य है।

डीएम ने समाधान दिवस में सुनी फरियादियों की समस्याएं

स्वतंत्र प्रभात

चित्रकूट - जिलाधिकारी शिवशरणप्पा जीएन अध्यक्षता में शनिवार को तहसील सभागार कर्वी में संपूर्ण समाधान दिवस का आयोजन किया गया। जिसमें डीएम ने फरियादियों की समस्याओं को सुनकर सम्बन्धित अधिकारियों को निस्तारण के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। जिलाधिकारी ने समाधान दिवस में प्राप्त समस्याओं के निस्तारण रजिस्टर का परीक्षण करते हुए निस्तारण आख्या को देखा तथा सम्बन्धित अधिकारियों को निर्देश दिए कि जिन समस्याओं का निस्तारण किया जा रहा है, उसके बारे में समस्याग्रस्त व्यक्ति को अवगत भी कराया जाए ताकि सम्बन्धित को निस्तारण से संतुष्टि भी मिलनी चाहिए। उन्होंने समाधान दिवस में प्राप्त समस्याओं पर जिला स्तरीय अधिकारियों को शासन द्वारा निर्धारित समय सीमा के अंदर मौके पर जाकर गुणवत्तापूर्ण निस्तारण करने के निर्देश दिए। उपजिलाधिकारी तथा थाना प्रभारियों से कहा कि जो भूमि सम्बन्धी मामलों में राजस्व, चकबंदी तथा पुलिस की संयुक्त टीम गठित करते हुए मौके पर जाकर निस्तारण कराएं। पुलिस अधीक्षक अरुण कुमार सिंह ने थाना प्रभारियों को निर्देश दिए कि महिलाओं से सम्बन्धित प्रकरणों पर तत्काल निस्तारण कराए।

इस मौके पर उपजिलाधिकारी कर्वी पूजा साहू, क्षेत्राधिकारी राजकमल, प्रभागीय वनाधिकारी प्रत्यूष कटियार, मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ भूपेश द्विवेदी, परियोजना निदेशक सच्चिदानंद प्रसाद, डीसी एनआरएलएम ओपी मिश्रा, डीसी मनरेगा धर्मजीत सिंह, जिला पंचायत राज अधिकारी इंद्र नारायण सिंह, अधिशासी अभियंता विद्युत दीपक सिंह, अधिशासी अधिकारी कर्वी लालजी यादव, तहसीलदार कर्वी चन्द्रकान्त तिवारी, जिला प्रोबेशन अधिकारी पंकज कुमार मिश्रा, जिला पूर्ति अधिकारी आनन्द कुमार सिंह, अग्रणी जिला प्रबंधक इंडियन बैंक अनुराग शर्मा सहित सम्बन्धित अधिकारी व कर्मचारी मौजूद रहे। इसी प्रकार मऊ में अपर जिलाधिकारी उमेश चन्द्र निगम व अपर पुलिस अधीक्षक चक्रपाणि त्रिपाठी ने जन समस्याएं सुनी। इस मौके पर मऊ उपजिलाधिकारी सौरभ यादव सहित सम्बन्धित विभागीय अधिकारी मौजूद रहे। इसके अलावा राजापुर में उपजिलाधिकारी आलोक सिंह व क्षेत्राधिकारी जयकरण सिंह ने समस्याएं सुनी। यहां प्राप्त 34 में से छह मामलों का निस्तारण मौके पर कराया गया।

महाशिवरात्रि को लेकर पाकुड़िया सहित सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में, उत्साह का दिखा माहौल

स्वतंत्र प्रभात

पाकुड़िया/पाकुड़- महाशिवरात्रि को लेकर पाकुड़िया सहित प्रखण्ड के विभिन्न ग्रामीण इलाकों में, उल्लास का वातावरण दिखा जा रहा है। हालांकि, 26फरवरी को महाशिवरात्रि की पावन वेला में बड़ी संख्या में, श्रद्धालु पूरी भक्ति-भाव से महादेव-माता पार्वती व सभी देव-देवियों की आराधना की। तथापि महाशिवरात्रि की मंगलमयी वेला के शुभावसर में,प्रखण्ड के मोंगलाबांध ग्राम में आयोजित मेला में संध्या को महा शिव पुराण कथा वाचन,भगवत् भजन से सम्पूर्ण प्रखण्ड में, आध्यात्मिक सुगंध बिखर रही है वहीं मेला प्रांगण में बड़ी संख्या में लोगों का आवागमन से, चहल-पहल बढ़ी।इसके सिवाय सदियों से आयोजित, महाशिवरात्रि के शुभावसर पर काठीकुंड में बाबा दानीनाथ मंदिर में पूजा के निमित्त,भक्तों के आने-जाने से उल्लास का माहौल है।प्रखण्ड के विभिन्न ग्रामीण क्षेत्रों से भारी संख्या में लोग मेला देखने जाते-आते हैं।मोंगलाबांध पंचायत समिति के सदस्य एवम मेला समिति के अध्यक्ष,दीपक साह,सचिव कार्तिक पाल ने बताया मेला में प्रतिदिन भारी संख्या में, लोगों का आना-जाना जारी है।मेला को लेकर बच्चों में काफी उत्साह दिख रहा है। मोंगलाबांध ग्राम स्थित शिव मंदिर परिसर में आयोजित आठ दिवसीय, महाशिवरात्रि मेला का शुभ उद्घाटन विधिवत् फिता काट कर विगत दिनों विधायक प्रोफेसर, स्टेफन मरांडी की पुत्री झामुमो नेत्री उपासना(पिंकी)मरांडी ने किया।इस अवसर पर मेला समिति के दीपक साह, कार्तिक पाल ने बूके देकर उन्हें सम्मानित किया।इस अवसर पर नेत्री ने अपने सम्बोधन में कहा, देवों के देव महादेव कल्याणकारी हैं।इस अवसर पर झामुमो के विश्वजीत दास,मंजर आलम,छोटू भगत तथा बड़ी संख्या में लोग उपस्थित रहे।

अवैध विदेशियों के मामलों में भारत को अमेरिका से सीख लेनी चाहिए

भारत, एक विशाल और विविधतापूर्ण देश है। भौगोलिक संरचना की दृष्टि से इसका एक बहुत बड़ा भूभाग स्मार्ट फैंसिंग रहित है, विशाल खुला समुद्री क्षेत्र है तथा कुछ स्थानों पर नदी के खुले किनारे हैं। ये वो स्थान है जो अवैध रूप से भारत में घुसने वाले विदेशियों को अवसर प्रदान करते हैं। भारत की संस्कृति ही कुछ ऐसी है कि काम में रूचि रखने वाले गरीबों के लिए अर्थ उपार्जन के अवसर अन्य देशों की तुलना में यहां सहज रूप से मिल ही जाते हैं । क्योंकि भारतीय न सिर्फ सहिष्णु होते हैं अपितु उनमें गरीबों के प्रति सहायता, दया एवं करूणा कूट- कूट कर भरी हुई रहती है। भारत में शायद इसीलिए जगह-जगह पर आरामगाह/रात्रि विश्राम कक्ष, अन्नपूर्णा क्षेत्र, आश्रम खुले हुए हैं जहां बहुत कम टोकन राशि पर या निशुल्क भोजन और आवास की सुविधा उपलब्ध कराई जाती है वो भी जाति, धर्म, भाषा, लिंग के भेदभाव बिना। दान-पुण्य में विश्वास रखने वाले भारतीयों का एक वर्ग इन स्थानों के लिए खुले मन से सेवा और आर्थिक मदद करता है। किन्तु इसे भारत का दुर्भाग्य ही कहेंगे कि सरकारों के चाहने के बाबजूद भी भारत से भ्रष्टाचार खत्म होने का नाम ही नहीं ले रहा है। भ्रष्टाचारी कोई न कोई रास्ता भ्रष्टाचार के लिए इजात कर ही लेते हैं। इसी बुराई के कारण घुसपैठियों का अवैध रूप से न सिर्फ भारत मे घुसना आसान हो जाता है अपितु भारत में रहने के लिए आवश्यक दस्तावेज (आधार कार्ड, वोटर आई कार्ड, राशन कार्ड आदि) बनाना भी कोई मुश्किल काम नहीं होता है।कई विदेशियों को समय-समय पर इन नकली दस्तावेजों के साथ पकड़ा भी गया है।भारतीयों का इस तरह का व्यवहार ही दुनिया भर के घुसपैठियों को भारत में अवैध रूप से घुसने के लिए आकर्षित करता है। भारत में अवैध रूप से कितने विदेशी लोग रह रहे हैं, इसका सही-सही आंकड़ा कोई नहीं जानता। किन्तु अनुमान लगाया जा रहा है कि इनकी संख्या लाखों में है।इन अवैध रूप से रह रहे विदेशीयों में एक वर्ग ऐसा भी है जो भारत में मौका मिलते ही आतंक वादी गतिविधियों को अंजाम देता हैं या नारकोटिक्स ड्रग तथा हथियार आदि की तस्करी जैसे गैर कानूनी धंधे में संलग्न रहता है, नकली करेंसी प्रिंट कर चलन में लाता है तथा खुफिया रुप से भारत की सैन्य गतिविधियों की जानकारी भारत के दुश्मनों तक पहुंचाता है। ऐसी भी शंका व्यक्त की जा रही है कि इन्होंने मतदाता तथा आधारकार्ड जैसे पहचान पत्र ग़लत तरीके से प्राप्त कर लिये है जिसकी मदद से चुनाव परिणाम को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वोटर कार्ड की शक्ति इन्हें राजनीतिक पार्टियों की शरण प्राप्त करने में मदद करती है। हाल ही में सिने स्टार सैफ अली खान के साथ घटी चाकू बाजी की घटना के बाद अब तो अपराधिक गतिविधियों में भी इनका हाथ प्रमाणिक रूप से सामने आने लगा है। इस तथ्य से भी शायद ही कोई इंकार करे कि अवैध रूप से विदेशियों का भारत में रहना सिर्फ देश की सुरक्षा के लिहाज से खतरा मात्र नहीं है, अपितु आर्थिक, सामाजिक और प्रशासनिक दृष्टिकोण से भी भारत के लिए गंभीर चिंता का विषय हैं क्योंकि ये अवैध रूप से रह रहे विदेशी नागरिक न सिर्फ भारत के नागरिकों का हक मारते हैं, अपितु देश के संसाधनों पर अनावश्यक दबाव डालते हैं, जैसे कि शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाएं, रोजगार के अवसर, और सब्सिडी वाली सुविधाएं आदि। भारत में रह रहे अवैध विदेशी नागरिकों में मुख्य रूप से बांग्लादेश, म्यांमार, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, नेपाल, श्रीलंका और कुछ अफ्रीकी आदि देशों के लोग का शामिल होना सामने आया है। ऐसा देखा गया है कि इनमें से कई लोग वैध वीजा पर भारत आते हैं, लेकिन वीजा की अवधि समाप्त होने पर अपने देश वापिस जाने की वजह भारत में ही रुक जाते हैं। वहीं कुछ लोग बिना किसी वैध दस्तावेज के खुली सीमाओं के जरिए अवैध रूप से घुसपैठ कर भारत में प्रवेश करते हैं तथा विभिन्न असंवैधानिक गतिविधियों को अंजाम देते हैं। भारत में घुसपैठियों की समस्या पूर्वोत्तर सीमावर्ती राज्यों के साथ पश्चिम बंगाल, असम, दिल्ली, मुंबई, और केरल जैसे बड़े महानगरों में ज्यादा गंभीर है, किन्तु ऐसा नहीं है कि इन्होंने अन्य राज्यों में अपना ठिकाना न बनाया हो।हर राज्यों में ये अपने मददगार खोज ही लेते हैं।एनआरसी के तहत अवैध रूप से रह रहे विदेशी नागरिकों की पहचान कुछ राज्यों में आरंभ भी हुई है, किन्तु कुछ राजनीतिक कारणों के चलते पूरे देश में 'अवैध विदेशी खोजों अभियान 'प्राथमिकता के आधार पर आरंभ नहीं हो सका है। मेरी दृष्टि में यह स्थिति देश के लिए अच्छी नहीं है क्योंकि इनकी उपस्थिति भारत की आंतरिक सुरक्षा की दृष्टि से जायज़ नहीं ठहराई जा सकती। हम सब इस घटना से वाकिफ ही है कि भारत के प्रधानमंत्री के अमेरिकी राष्ट्रपति से अच्छे संबंध हैं, दोनों देशों के मध्य भी संबंध अच्छे ही है फिर भी अमेरिका ने अपने देश और देशवासियों के हितों को प्राथमिकता देते हुए भारत के नागरिक जो अमेरिका में गैरकानूनी तरीके से रह रहे थे एक अपराधी की तरह वापिस कर दिया। निश्चित रूप से इन भारतीयों ने गैरकानूनी रास्ता अपना कर भारत की छवि को नुक्सान पहुंचाया है। अतः भारत को भी अमेरिका की तरह अपने देश में अवैध रूप से रह रहे विदेशियों को चुन-चुनकर बाहर निकालने की कार्रवाई सुनिश्चित करना चाहिए। तथा राष्ट्र हित मे पार्टी पोलिटिक्स से उपर उठकर सभी राजनीतिक दलों को सरकार के इस अभियान में सहयोग देना चाहिए। मैं तो उस दिन का इंतजार कर रहा हूं जब विपक्षी पार्टियां सरकार पर विदेशी घुसपैठियों को देश से बाहर निकालने के लिए दबाव डालें। घुसपैठ रोकने के लिए यदि भारत को लगता है उसके कानून पर्याप्त नहीं हैं तो उसमें आवश्यक सुधार किये जाना चाहिए, साथ ही यदि सीमाओं को और अभेद्य बनाये जाने की जरूरत है,तो अविलंब इस पर काम शुरू होना चाहिए। घुसपैठ रोकने के लिए सार्वजनिक जागरूकता जैसे कदम उठाने की भी आवश्यकता है, ताकि कोई भारतीय विदेशियों की सहायता न करें और न ही पनाह देने पर विचार करे।मेरा ऐसा मानना है कि भारत को अपनी सुरक्षा और संप्रभुता बनाए रखने के लिए संतुलित और प्रभावी नीति अपनानी होगी, ताकि मानवीय मूल्यों और राष्ट्रीय हितों के बीच संतुलन बना रहे।

डॉ मनमोहन प्रकाश

चंडीगढ़ के रॉक गार्डन पर बुलडोजर से आक्रोश

चंडीगढ़ में विश्व प्रसिद्ध रॉक गार्डन पर में पंजाब और हरियाणा उच्च न्यायालय के पार्किंग स्थल तक दूसरी सड़क बनाने के लिए बुलडोजर चलाया गया था। शहर के उद्यान विरासत पर आधुनिक विकास की मांगों के कारण तोड़फोड़ से व्यथित निवासियों द्वारा सड़क पर विरोध प्रदर्शन के बीच इस विश्व प्रसिद्ध उद्यान की दीवार का एक हिस्सा ध्वस्त कर दिया गया था। रॉक गार्डन ने अंतर्राष्ट्रीय ध्यान आकर्षित किया है और पर्यावरण के अनुकूल और टिकाऊ कला के प्रदर्शन के लिए कई पुरस्कार जीते हैं। यह न केवल चंडीगढ़ आने वाले पर्यटकों के लिए बल्कि शहर के निवासियों के लिए भी एक प्रमुख आकर्षण है, जो सप्ताहांत में अपशिष्ट पदार्थों से बनी इसकी अद्भुत कलाकृति को देखने के लिए यहां आते हैं।

हालांकि चंडीगढ़ प्रशासन ने रॉक गार्डन के एक हिस्से से सड़क को गुजरने से रोकने की कोशिश की, लेकिन अदालत ने इसकी आपत्तियों को खारिज कर दिया, जिसने स्पष्ट रूप से पारिस्थितिकी संबंधी चिंताओं पर इसके पार्किंग स्थल को प्राथमिकता दी। रॉक गार्डन की दीवार के एक हिस्से को गिराए जाने पर सार्वजनिक विरोध ने निवासियों को पहले से कहीं अधिक एकजुट कर दिया है। अब वे शहरी नियोजन और उद्यानों के एक मॉडल के रूप में चंडीगढ़ के चरित्र की रक्षा के लिए एक आंदोलन शुरू करने पर विचार कर रहे हैं।

क्या राजनीति से ऊब गई हैं कंगना ?

अभिनेत्री से सांसद बनीं कंगना रनौत की अपने राजनीतिक कर्त्तव्यों से बिना किसी कारण के अनुपस्थित रहने पर भाजपा हलकों में चिंता व्याप्त है। वह हिमाचल प्रदेश के मंडी स्थित अपने निर्वाचन क्षेत्र से कई सप्ताह से गायब हैं। वह बजट सत्र के पहले आधे भाग में संसद से भी अनुपस्थित रहीं, उपस्थिति रजिस्टर में उनका नाम शून्य दर्ज किया गया। ऐसा लगता है कि वह अपनी फिल्म इमरजेंसी और मनाली में अपने नए खुले रेस्तरां माउंटेन स्टोरी के प्रचार में अधिक रुचि रखती हैं। जनवरी से, वह अपने सपनों के प्रोजेक्ट को पूरा करने के लिए मुंबई और मनाली के बीच आना-जाना कर रही हैं।

दुर्भाग्य से, फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर अच्छा प्रदर्शन नहीं किया है। इसे प्रतिकूल समीक्षा भी मिली है। उनके रेस्तरां की सफलता का आकलन करने में थोड़ा समय लगेगा, लेकिन मंडी में उनके लोग इस बात से परेशान हैं कि वह मनाली तो अक्सर आती रहती हैं, लेकिन पड़ोसी मंडी के लिए समय नहीं निकाल पातीं, जहां मतदाता उनसे मिलने के लिए बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। बजट सत्र के पहले भाग में संसद में उनकी अनुपस्थिति पिछले दो सत्रों में उनकी स्पष्ट उपस्थिति के बिल्कुल विपरीत है, जिसके दौरान उन्होंने टीवी कैमरों के सामने राहुल गांधी पर निशाना साधने में काफी समय बिताया।

क्या शिंदे से पीछा छुड़ाना चाहती है भाजपा?

ऐसा पहले कभी नहीं हुआ कि एक मुख्यमंत्री ने पिछली सरकार द्वारा लिए गए निर्णयों की जांच के आदेश दिए हों, जिसमें वे स्वयं उपमुख्यमंत्री थे। यह असाधारण घटनाक्रम महाराष्ट्र में महायुति गठबंधन सरकार को हिला रहा है, क्योंकि मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने अपने पूर्ववर्ती एकनाथ शिंदे पर निशाना साधा है। ऐसा लगता है कि फडणवीस दिखावे की परवाह नहीं करते हैं। वे पिछली सरकार में शिंदे के उपमुख्यमंत्री थे और इसलिए निर्णय लेने की प्रक्रिया का हिस्सा माने जाते थे, इस समय शिंदे वर्तमान सरकार में उनके उपमुख्यमंत्री हैं। यह दिलचस्प है कि फडणवीस शिंदे को प्रतिद्वंद्वी के रूप में देखते हैं और उन्हें कमजोर करने के लिए दृढ़ हैं। मुख्यमंत्री ने अपने पूर्ववर्ती द्वारा लिए गए कई निर्णयों की जांच के आदेश दिए हैं। इसमें किराए पर बसें, एंबुलेंस और चिकित्सा उपकरणों की खरीद, सरकारी संस्थानों के लिए स्कूल यूनिफॉर्म की खरीद, जालना में एक आवास परियोजना, एमएसपी पर फैसला और किसानों से फसल खरीदने के लिए नोडल एजेंसियों की नियुक्ति आदि भी शामिल हैं लेकिन शिंदे को सबसे ज्यादा परेशान करने वाली खबर यह है कि उनके करीबी कहे जाने वाले एक रियल एस्टेट डेवलपर पर भ्रष्टाचार विरोधी एजेंसियां ??जांच कर रही हैं। कोई आश्चर्य नहीं कि शिंदे धमकियां दे रहे हैं और चेतावनी दे रहे हैं कि उन्हें हल्के में न लिया जाए। जैसा कि उन्होंने भाजपा को याद दिलाया, यह वे ही थे जिन्होंने 2020 में उद्धव ठाकरे के खिलाफ विद्रोह का नेतृत्व करके और भाजपा के साथ एक वैकल्पिक सरकार बनाकर सरकार बदली थी।

झारखंड में विपक्ष के नेता को लेकर भाजपा असमंजस में

कई सालों में पहली बार सुप्रीम कोर्ट ने विपक्ष के नेता की नियुक्ति में देरी और विभिन्न संवैधानिक पदों को भरने के फैसले को रोकने के लिए किसी राजनीतिक दल को फटकार लगाई है। इससे भाजपा के लिये परेशानी की स्थिति पैदा हो गई क्योंकि उसने झारखंड विधानसभा में अपना नेता नियुक्त नहीं किया है, जबकि चुनाव तीन महीने से अधिक समय पहले संपन्न हो चुके हैं।

झारखंड में पार्टी में निर्णय लेने में असमर्थता दिख रही है, क्योंकि भाजपा लगातार दूसरी बार हार के बारे में सोच रही है। आरएसएस आदिवासी इलाकों में कड़ी मेहनत कर रहा है। ऐसा लगता है कि पार्टी विपक्ष के नेता के पद के लिए आदिवासी चेहरे को आगे बढ़ाने या अपने पारंपरिक वोट आधार उच्च जातियों और ओबीसी में से किसी को आगे रखने के बीच फैसला नहीं कर पा रही है। इस बीच, झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन अधीर हो रहे हैं और भाजपा के अनिर्णय का फायदा उठाने की कोशिश कर रहे हैं।

संसद और सर्वोच्च न्यायालय

1950 में जब भारत की अन्तरिम संसद द्वारा 26 जनवरी, 1950 को लागू स्वतन्त्र भारत के संविधान में पहला संशोधन किया गया तो हिन्दू महासभा व उसके वैचारिक साथियों के द्वारा इसे सर्वोच्च न्यायालय (सुप्रीम कोर्ट) में चुनौती दी गई। हालांकि चुनौती पीयूसीएल (पब्लिक यूनियन आप सिविल लिबर्टीज) जैसी नागरिक अधिकारों के लिए लड़ने वाली संस्था के माध्यम से दी गई थी। न्यायालय ने संशोधन को पूरी तरह संविधान सम्मत पाया और याचिका को खारिज कर दिया। यह संशोधन संविधान के अनुच्छेद 19 में किया गया था जिसमें अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता व आरक्षण को लेकर प्रावधान किये गये थे। यह संशोधन क्यों किया गया था, इसकी अपनी एक अलग कहानी है जिसे इस स्तम्भ में सीमित शब्दों में समेटना संभव नहीं है। यह संशोधन तत्कालीन प्रधानमन्त्री पं. जवाहर लाल नेहरू द्वारा लाया गया था और उससे तत्कालीन कानून मन्त्री बाबा साहेब अम्बेडकर पूरी तरह सहमत थे। नेहरू जी ने जो संशोधन किया था उसका मूल यह था कि कोई भी व्यक्ति या राजनैतिक दल अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता की आड़ में हिंसक विचारों का प्रचार-प्रसार नहीं कर सकता है। भारत का पूरा संविधान ही मानवतावाद के इर्द-गिर्द घूमता है। पं. नेहरू द्वारा पेश किये गये इस संशोधन पर उस समय की अन्तरिम संसद में बाबा साहेब अम्बेडकर बतौर कानून मन्त्री दो घंटे तक बोले थे और उन्होंने स्वीकार किया था कि अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता को अविरल स्वरूप देने के जोश में वह इस पक्ष की अनदेखी कर गये थे। क्योंकि वैचारिक हिंसा का खुला प्रचार- प्रसार भारत की अहिंसात्मक लोकतान्त्रिक प्रणाली की जड़ें खोखली कर सकता है। डॉ. अम्बेडकर ने अपने दो घंटे के वक्तव्य में साफ करने की कोशिश की थी की भारत में हिंसा को बढ़ावा देने लिए कोई स्थान नहीं है। तब स्वतन्त्र भारत के लोगों ने सीधे संसद व सर्वोच्च न्यायालय के बीच के आधिकारिक सन्तुलन को परखा था। मगर दबे स्वर में यह सवाल भी उठा था कि संसद और सर्वोच्च न्यायालय में कौन बड़ा है। इसके बाद श्रीमती इन्दिरा गांधी के शासन के दौर में यह बहस बहुत शोर के साथ शुरू हुई क्योंकि श्रीमती गांधी संसद की सर्वोच्चता की बहुत बड़ी पैरोकार थीं। इसकी वजह यह थी कि 1973 के केशवानन्द भारती केस में सर्वोच्च न्यायालय ने यह फैसला दिया था कि संसद संविधान के बुनियादी ढांचे में कोई बदलाव नहीं कर सकती। इसके बाद 1974 में श्रीमती गांधी ने सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश पद पर क्रम में बहुत कनिष्ठ न्यायमूर्ति श्री ए.एन. राय को पदोन्नत कर दिया था। इसके विरुद्ध सर्वोच्च न्यायालय के ही चार न्यायमूर्तियों ने इस्तीफा दे दिया था। इसी वर्ष भारत में शुरू हुए जेपी आन्दोलन में यह मसला भी एक मुद्दा बना था। जेपी आन्दोलन बेशक समग्र क्रान्ति का नारा लगा रहा था परन्तु यह इन्दिरा जी के शासन के खिलाफ ही था। हम यह सब भी जानते हैं कि 1975 जून महीने में इमरजेंसी लग जाने के बाद इन्दिरा गांधी ने ही संविधान की मूल प्रस्तावना में संशोधन किया था और समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष व देश की अखंडता के शब्द जोड़े थे। परन्तु यह संशोधन संविधान के मूल ढांचे के ही अनुरूप था। यह संशोधन न्यायिक तसदीक पर भी खरा उतरा। सर्वविदित है कि इमरजेंसी के बाद देश में पंचमेल जनता पार्टी की सरकार स्व. मोरारजी देसाई के नेतृत्व में जब बनी तो उसने इन्दिरा गांधी सरकार द्वारा किये गये कई संशोधनों को निरस्त कर दिया मगर प्रस्तावना के मामले में उसने कोई छेड़खानी नहीं की। जाहिर है कि कांग्रेस विरोधी जनता पार्टी भी कहीं न कहीं संसद की सर्वोच्चता के समर्थन में ही थी। उसने इन्दिरा सरकार द्वारा 1971 में सम्पत्ति के मौलिक अधिकार को समाप्त किये जाने के विरुद्ध इसे संवैधानिक अधिकारों का हिस्सा जरूर बनाया मगर इसे मौलिक या मूलभूत अधिकारों की श्रेणी से बाहर ही रखा। इन्दिरा जी ने इस अधिकार को बैंकों के राष्ट्रीयकरण करने के बाद मुल्तवी किया था। बैंकों के राष्ट्रीयकरण को भी सर्वोच्च न्यायालय में चुनौती दी गई थी और न्यायालय ने इसे सम्पत्ति के मूल अधिकार के तहत ही अवैधानिक घोषित किया था। इसके बाद 1971 में चुनाव जीत कर श्रीमती गांधी ने संविधान में संशोधन करके बैंकों के राष्ट्रीयकरण को जारी रखा। ऐसा करके इन्दिरा गांधी ने संसद की सर्वोच्चता ही स्थापित की। उस समय यह भी सरकारी संशोधन किया गया कि सर्वोच्च न्यायालय को हिन्दी में उच्चतम न्यायालय कहा जाये। तब यह साफ हुआ कि संसद कोई नया कानून बना कर अपनी सर्वोच्चता को स्थिर रख सकती है मगर 1973 में केशवानन्द भारती केस ने इसकी सीमाएं नियत कर दीं। मौजूदा दौर में यह सवाल फिर से एक बार उभरा है। यह मामला अदालत द्वारा दोषी पाये गये राजनैतिक नेताओं द्वारा पुनः चुनाव लड़ने का है। चुनावों के कानून जनप्रतिनिधित्व अधिनियम-1951 के अनुसार यदि किसी नेता को किसी मुकदमे में दो साल या उससे अधिक की सजा मिलती है तो उस पर जेल से छूटने पर छह साल तक की अवधि के लिए चुनाव लड़ने पर प्रतिबन्ध लग जाता है। जनप्रतिनिधित्व अधिनियम अनुच्छेद की धारा 8 व 9 में यह प्रावधान है। सर्वोच्च न्यायालय में इन्ही दो धाराओं को चुनौती दी गई थी और प्रार्थना की गई थी कि सजा प्राप्त नेताओं पर आजीवन चुनाव लड़ने पर प्रतिबन्ध हो। अपने जवाब में केन्द्र सरकार ने उच्चतम न्यायालय में शपथ देकर कहा कि किस अपराधी को किस जुर्म पर कितनी सजा मिलेगी इसे तय करने का अधिकार केवल संसद को ही है। सर्वोच्च न्यायालय कोई कानून बनाने के लिए संसद को बाध्य नहीं कर सकता है। यह अधिकार क्षेत्र केवल संसद का है। जाहिर है कि लोकतन्त्र में संसद को ही संविधान कोई भी कानून बनाने का अख्तियार देता है। इस मामले में देश की कोई भी अन्य संवैधानिक संस्था उसे निर्देश नहीं दे सकती। मगर इस मामले में डॉ. मनमोहन सिंह की पिछली यूपीए सरकार ने गलती की थी और अन्ना आन्दोलन के चलते जन लोकपाल विधेयक बनाने में आन्दोलनकारियों की शिरकत कराई थी। संसद के पवित्र अधिकार को लोकतन्त्र में कोई भी दूसरा छीन नहीं सकता है। बेशक सर्वोच्च न्यायालय उसके बनाये गये कानूनों को संविधान की कसौटी पर कस सकता है मगर उसके कानून बनाने के अधिकार को चुनौती नहीं दे सकता। अतः सवाल कार्यपालिका, न्याय पालिका व विधायिका के बीच संविधानगत अधिकार व शक्ति सन्तुलन का है।

संपादकीय

रमजान- क्या मस्जिदों पर भी फूल बरसायेंगे योगी ?

देश के 22 करोड़ मुसलमानों का पवित्र त्यौहार 'रमजान 'रविवार से शुरू हो रहा है। । प्रयागराज में समाप्त हुए महाकुम्भ के बाद का ये एक बड़ा त्यौहार है। अब सवाल ये है कि क्या उत्तर पदेश की सरकार सूबे की मस्जिदों में सरकारी हैलीकाप्टर से नमाजियों पर पुष्पवृष्टि करेगी ? पढ़ने वाले कहेंगे कि -क्या मूर्खतापूर्ण सवाल किया है ? मस्जिदों पर भी कोई फूल बरसता है। वहां तो केवल पुलिस की लाठियां बरसाई जाती हैं। रमजान का महीना महाकुम्भ की तरह हालाँकि पाप धोने का मौक़ा नहीं है लेकिन इस महीने में लोग पूरे एक महीने उपवास कर लोककल्याण के लिए दुआएं करते हैं। पवित्र कुरआन का परायण करते हैं, तरावीह की नमाज पढ़ते हैं और अपनी औकात के हिसाब से जकात [दान] भी देते हैं। एतेकाफ़ करते हैं और माह के अंत में मिलजुलकर ईद मनाते हैं। यानि ये आत्मशोधन और लोककल्याण की उपासना का महीना है, लेकिन दुर्भाग्य ये है कि किसी भी सरकार के पास इस त्यौहार को मनाने की न इच्छाशक्ति है और न खजाने में पैसा है ,न नमाजियों पर फूल बरसाने के लिए कोई हैलीकाप्टर।

आम धारणा है कि रमजान महीने की 23 वीं तारीख शबे कद्र है ,यानि इसी दिन कुरआन का अवतरण हुआ। इसलिए इस महीने में कुरान का पारायण किया जाता है ,जो अनपढ़ हैं वे कुरान सुनते हैं। रमजान के महीने में उपवास को अरबी में सौम और फ़ारसी में रोजा कहा जाता है जाता है। लोग फज्र की नमाज पढ़ते हैं, सेहरी करते हैं। सूर्यास्त के बाद रोजा खोला जाता है यानि इफ्तारी की जाती है। एक जमाना था जब प्रधानमंत्री से लेकर राष्ट्रपति के यहां भी रोजेदारों के लिए इफ्तार की दावतें होतीं थीं, लेकिन अब सरकार रोजा इफ्तार को पाप और तुष्टिअकरण मानती है इसलिए इस रिवायत को समाप्त कर दिया गया है। मौजूदा सरकार में तो एक भी मुसलमान मंत्री भी नहीं है जो बेचारे रोजदारों को इफ्तार की दावत दे दे।

महाकुम्भ में जैसे सनातनियों के पाप धुल जाते हैं वैसे ही माहे रमजान में रोजदारों के गुनाह माफ़ हो जाते हैं। रोजा इफ्तार के लिए पकवानों की जरूरत नहीं होती,ये श्रृद्धा का मामला है। अगर आपके पास कुछ नहीं है तो आप रोजेदार को एक खजूर और और एक गिलास पानी देकर भी इफ्तारी करा सकते हैं। ये महीना मुस्तहिक़ लोगों की इमदाद करने का है। इस इमदाद को आप जकात कहें या फ़ित्रा कहें या सदक़ा कहें कोई फर्क नहीं पड़ता। रोजा मुसलमानों को 'जब्ती नफ़्स ' यानि आत्म नियंत्रण करना सिखाता है।परहेजगारी सिखाता है यानि ये एक तरह की हठ साधना है।

रमजान का आगाज चंद्र दर्शन से होता है और समापन भी चंद्र दर्शन से होता है। ठीक उसी तरह मुसलमान चण्द्रमा की प्रतीक्षा करते हैं जैसे करवा चौथ पर सनातनी विवाहिताएं चन्द्रमा की प्रतीक्षा करती हैं। यानि चाँद सियासित नहीं करता । चाँद दोनों को क्या सभी को दर्शन देता है। चन्दा सबका है। चाँद मियां का भी और चंद्रशेखर का भी। सनातनियों का भी और गैर सनातनियों का भी । आप कह सकते हैं कि काफिरों का भी होता है चाँद। वैसे रमज़ान इस्?लाम कैलेंडर का नौवां महीना होता है।। माना जाता है कि सन् 610 में लेयलत उल-कद्र के मौके पर मुहम्?मद साहब को कुरान शरीफ के बारे में पता चला था। यूं रंजन का मतलब प्रखर होता है।

रोजा हिन्दुओं के अनेक कठिन व्रतों जैसा ही है। हमारे इशाक मियाँ के अब्बू बताया करते थे कि रोज़े का मतलब यह नहीं है कि आप खाएं तो कुछ न, लेकिन खाने के बारे में सोचते रहें. रोजे के दौरान खाने के बारे में सोचना भी नहीं चाहिए। इस्लाम के अनुसार पांच बातें करने पर रोज़ा टूटा हुआ माना जाता है. ये पांच बातें हैं- बदनामी करना, लालच करना, पीठ पीछे बुराई करना, झूठ बोलना और झूठी कसम खाना। अब्बू कि मुताबिक रोजे का मतलब बस उस अल्लाह के नाम पर भूखे-प्यासे रहना ही नहीं है। इस दौरान आंख, कान और जीभ का भी रोज़ा रखा जाता है। इस बात का मतलब यह है कि न ही तो इस दौरान कुछ बुरा देखें, न बुरा सुनें और न ही बुरा बोलें। रोजे का मुख्य नियम यह है कि रोजा रखने वाला मुसलमान सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त के दौरान कुछ भी न खाए। रोजा मन सा वाचा,कर्मणा आत्मनियंत्रण का अवसर है। काम,क्रोध,मोह और लोभ से मुक्ति का संकल्प लेकर रोजा रहा जाता है। मै अ-स्नानी सनातनी हूँ ,लेकिन जब -तब अपने मुस्लिम मित्रों को इफ्तार की छोटी-मोती दावत देकर थोड़ा-बहुत पुण्य हासिल करने की कोशिश करता हूँ। ऐसी कोशिशें ही सामाजिक सद्भाव कि लिए जरूरी हैं। ऐसी कोशिशें सरकारों को भी करना चाहिए, लेकिन सरकारें तो सनातनियों की हैं और उन्हीं के लिए काम करतीं हैं। उनका तुष्टिकरण में नहीं सन्तुष्टिकरण में यकीन बढ़ता जा रहा है। सभी रोजेदारों को बहुत-बहुत मुबारकवाद।

राकेश अचल

प्रगति के पैमानों की अलग-अलग अवधारणाएं

ग्रीन या डिजिटल इंडिया

किसी भी देश के विकास तथा प्रगति के अलग-अलग मापदंड एवं अवधारणाएं हैं द्य भारत 1947 को स्वतंत्रता के बाद से ही पंचवर्षीय योजनाओं के लागू होने के साथ-साथ विज्ञान टेक्नोलॉजी उद्योग और आर्थिक योजनाओं के विकास के साथ-साथ कृषि के विकास पर भी ज्यादा से ज्यादा ध्यान देता आया है। परिणामस्वरूप आज 76 वर्ष के बाद भारत एक विकसित राष्ट्र बनने की दौड़ में शामिल हो चुका है। अब भारत के सामने पर्यावरण बचाने, कृषि तथा उद्योगों को बचाने के लिए नई-नई समस्याएं सामने आ रही हैं. अब भारत के सामने विकास के लिए डिजिटल भारत चाहिए या पर्यावरण बचाने के लिए ग्रीन भारत, इस पर भारत में वैज्ञानिकों,चिंतकों और राजनीतिज्ञों के मध्य गहन विचार विमर्श चल रहा है पर भारत के उदारवादी दृष्टिकोण और निजीकरण के युग में विकास की अवधारणा के बारे में जब भी चर्चा होती है तब स्वाभाविक तौर पर विकास के विभिन्न आयामों पर भी विस्तृत परिचर्चा का पदार्पण होता है। विकास प्राप्ति है या साधन है और विकास की संपूर्ण अवधारणा क्या है इस पर एक स्वस्थ बहस की आवश्यकता हैद्य निसंदेह विकास परिवर्तन की सामाजिक आर्थिक सांस्कृतिक बदली हुई परिणति ही है, परिवर्तन अथवा विकास के सामने समतामूलक न्याय पूर्ण तथा संपूर्ण समावेशी प्रयासों को मजबूत करने की बात कही गई है और भारत सरकार ने इस पर अपनी आस्था व्यक्त की है , इसी विचार के साथ भारत ने पर्यावरण संरक्षण की मुहिम को मजबूती देने का प्रयास किया है भारत को हरित भारत के लक्ष्य को स्वीकार भी किया है। विभिन्न जीव जंतुओं को बचाना तथा वन के परीक्षेत्र को 33त्न लक्ष्य प्राप्त करने की दिशा में हर संभव प्रयास किए जाने के लिए योजनाएं बनाई जा रही है ।वही दूसरी तरफ मरुस्थल बनने से धरा को रोकने के प्रयास और जैव विविधता को सुरक्षित रखने का लक्ष्य की भारत में प्रगति कर रहा हैद्य जलवायु परिवर्तन से भारत को जितना नुकसान हो रहा है इतना किसी भी अन्य देश को नहीं हो रहा है। इसी कार्यक्रम में प्राकृतिक संसाधनों के वितरण प्रकार और गुणवत्ता को जलवायु परिवर्तन से बचाने का प्रयास भी शामिल है ।भारत में इसी संदर्भ में ग्रीन इंडिया जैसी अवधारणा को आत्मसात किया है ग्रीन इंडिया तथा परिस्थितिकी सुधार को संरक्षण दिया है उसमें केंद्र व राज्य सरकारों ने मिलकर एक दशक के लिए लगभग 40, हजार करोड़ रुपए के खर्च होने का अनुमान भी दर्शाया है। सरल शब्दों में ग्रीन इंडिया मिशन को जलवायु परिवर्तन की अनुकूलता को अंदर से देखा जाए उसमें कारबन में कटौती तथा परिस्थिति तंत्रों में मजबूती लाने का प्रयास किया जाएगा ,इसके अंतर्गत बंजर वाली भूमि पर 50 लाख हेक्टेयर पर पेड़ लगाना और 50 लाख हेक्टेयर जमीन पर बढ़ते हुए वनों का संरक्षण भी शामिल है। जिसके फलस्वरूप 30 लाख परिवारों को रोजगार मुहैया कराना साथ ही 50 से 60 लाख तन तक कार्बन डाइऑक्साइड में कमी लाने का लक्ष्य तय किया गया। इस तरह ग्रीन इंडिया में भारी भरकम बजट खर्च करने की परियोजना तैयार की गई है ।निश्चित तौर पर जलवायु परिवर्तन में होने वाले नुकसान को इस योजना से रोका जा सकता है। वहीं दूसरी ओर यदि डिजिटल इंडिया की बात करें तो ज्ञान के आधारित अर्थव्यवस्था मैं सुधार डिजिटल पद्धति से ही लाया जा सकता है। भारत देश जैसे विकासशील अर्थव्यवस्था के लिए डिजिटलीकरण अत्यंत आवश्यक भी दिखाई देता है। डिजिटल विकास के पास भारत देश में दीमक की तरह फैले हुए भ्रष्टाचार को भी रोका जा सकता है। बिचौलियों की उपस्थिति को भी चुनौती दी जा सकती है वैसे डिजिटल इंडिया प्रशासन सब प्रशासन को काफी मददगार साबित होने वाला है। सरकारी कार्यालयों में समस्त कार्य प्रणाली पेपर रहित हो गए है डिजिटल टेक्नोलॉजी के साथ कार्य किए जाए तो समय के साथ अर्थव्यवस्था में बेहतरी लाई जा सकती है। भारत सरकार ने अनेक विकास के पैमानों को ध्यान में रखते हुए और अनेक विसंगतियों को दूर करने के इरादे से डिजिटल मिशन के तहत ई गवर्नेंस ब्रॉडबैंड हाईवे, नेशनल स्कॉलरशिप पोर्टल, हॉस्पिटल एप स्वच्छ भारत मोबाइल ऐप, डिजिटल लॉकर जैसी सुविधाएं शुरू कर चुका है। आज सारी कार्य करा लिया मोबाइल ऐप तथा कंप्यूटर इंटरनेट से पूरी की जा रही है वहीं दूसरी तरफ उल्लेखनीय है कि अंतरराष्ट्रीय समुदाय अपनी कार्यसूची में पर्यावरण संरक्षण को सर्वोच्च प्राथमिकता दे रहा है और यह अंतरराष्ट्रीय पर्यावरण सम्मेलनों में भी साबित हो चुका है जिसमें विश्व के शीर्ष नेतृत्व करने वाले देश पर्यावरण की समस्याओं के समाधान के संदर्भ में सकारात्मक प्रयासों की तरफ अग्रसर हैं। स्वच्छ वातावरण और पर्यावरण मनुष्य की मूल आवश्यकता है क्योंकि मनुष्य बिना हवा, स्वच्छ पानी या स्वच्छ पर्यावरण के जिंदा नहीं रह सकता है। ऐसे में विकास के ग्रीन इंडिया तथा डिजिटल इंडिया के दोनों पैमानों पर सतत विकास कर भारत को आगे बढ़ना होगा।

संजीव ठाकुर

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक रवि कुमार अवस्थी द्वारा अनवर ऑफसेट एम्- 58, 59 बेसमेंट विकासदीप बिल्डिंग स्टेशन रोड लखनऊ से मुद्रित ई-4 सेक्टर-एम/29 अपोजिट उष्मान एन्क्लेव अलीगंज लखनऊ 226024 से प्रकाशित **संपादक-राजीव कुमार शुक्ल,** मो0- 7499472288
E-Mail: news@swatantraprabhat.com, RNI No: UPHIN/2019/79073 इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारो के चयन एवं संपादन हेतु पी आर बी एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा न्यायलय जनपद लखनऊ ही होगा।

संक्षिप्त ख़बरें

युवाओं में भटकाव पाश्चात्य सभ्यता की देन-मनोज

-रासेयो शिविर

रूद्रपुर, देवरिया। पाश्चात्य सभ्यता युवाओं में भटकाव का एक प्रमुख कारण बन रहा है। थ्री डी कल्चर के आगोश में फंसकर युवा अपने संस्कारों से दूर हो रहा है। कभी प्राचीन सभ्यता में जीवन जी कर भारतीय विश्व गुरु कहलाते थे। आज स्थितियां कुछ बदल गई हैं। विज्ञान और फैशन के तेजी से विकास के कारण आज का युवा अपने रिश्तों, संस्कारों, रीति रिवाज व मान्यताओं से काफी दूर हो रहा है। जिसके कारण उसका नैतिक पतन हो रहा है। समाज में बढ़ रही अश्लीलता ,लड़कियों व महिलाओं के प्रति छिछोरापन व आवेश में छोटी सी घटना को बड़ा बना देना आज के युवाओं का शगल बन गया हैं। वहीं प्राचीन भारत का युवा संस्कार और सभ्यताओं को संजोता था। उक्त बातें रक्षा राव राजनाथ राव महाविद्यालय में चल रहे राष्ट्रीय सेवा योजना के सात दिवसीय विशेष शिविर के पांचवें दिन मुख्य वक्ता के रूप में स्वयंसेवकों को संबोधित करते हुए पत्रकार मनोज शुक्ला ने कहा। उन्होंने कहा कि युवाओं को संस्कारवान होना चाहिए। इस अवसर पर डॉक्टर विपुल सिंह, अश्वनी द्विवेदी, के एम उपाध्याय, नितिन कुमार, शालिनी पांडे, सुशील सिंह, अमित चंद सहित शिविरार्थी मौजूद रहे।

कृषि यंत्र अनुदान के लिए दस्तावेज जमा करने की अंतिम तिथि 5 मार्च

देवरिया 1 मार्च। उप निदेशक कृषि, सुभाष मौर्य ने जनपद के सभी कृषकों को अवगत कराया है कि जिन किसानों ने वित्तीय वर्ष 2024-25 में कृषि यंत्र पर अनुदान प्राप्त करने हेतु टोकन जनरेट किया है, लेकिन अब तक आवश्यक दस्तावेज जमा नहीं किए हैं, वे 5 मार्च तक अपनी पत्रावली कार्यालय उप कृषि निदेशक, देवरिया में जमा कर दें। अनुदान प्राप्त करने के लिए किसानों को यंत्र की मूल प्रति, ई-वे बिल, बैंक ट्रांजेक्शन की प्रति, 100 के स्टाम्प पेपर पर शपथ-पत्र, टोकन की प्रति, आधार कार्ड और खतौनी की प्रति जमा करनी होगी। वित्तीय वर्ष 2024-25 की समाप्ति निकट है। यदि निर्धारित तिथि तक पत्रावली जमा नहीं की जाती है, तो कृषि यंत्र पर अनुदान के लिए किया गया आवेदन निरस्त कर दिया जाएगा। इस स्थिति में विभाग किसी भी प्रकार से उत्तरदायी नहीं होगा।

अपर पुलिस महानिदेशक के आदेश पर तीन के खिलाफ धोखाधड़ी का मुकदमा दर्ज

जौनपुर शाहगंज। जमीन की खरीद-बिक्री के नाम पर धोखाधड़ी का मामला सामने आया है। बड़ौना गांव निवासी पीड़ित पप्पू ने अपर पुलिस महानिदेशक वाराणसी को शिकायती पत्र सौंपा है। पप्पू का आरोप है कि उसकी मुलाकात रविंद्र कुमार बिंद निवासी नरवारी, थाना पवई, आजमगढ़ से हुई। रविंद्र ने पप्पू की मुलाकात विजयभान बिंद से करवाई। कुछ दिनों की आवाजाही के बाद रविंद्र ने जमीन का बैनामा करवाने के नाम पर पैसों की मांग की। पीड़ित ने रविंद्र के भरोसे पर हरिमोहन बिंद के नाम से पांच लाख रुपये ऑनलाइन ट्रांजेक्शन कर दिया। कुछ दिन बाद जब पीड़ित ने पैसे वापस मांगे या जमीन के बैनामे की बात की, तो आरोपी टालमटोल करने लगा। जब पप्पू ने रविंद्र और विजयभान से मिलकर अपने पैसों की मांग की, तो दोनों ने न केवल पैसे देने से इनकार कर दिया बल्कि उसे गालियां दीं और जान से मारने की धमकी भी दी। अपर पुलिस महानिदेशक के आदेश पर शाहगंज थाने में मामला दर्ज कर लिया गया है। पुलिस आरोपियों के खिलाफ कार्रवाई में जुट गई है।

सम्पूर्ण समाधान दिवस संपन्न

केराकत । केराकत के खंड विकास मुख्यालय के सभागार में तहसील सम्पूर्ण समाधान दिवस उपजिलाधिकारी सुनील भारती के अध्यक्षता में किया गया जिसमे कुल 128 प्रार्थना पत्र पड़ें जिनमे 16 का त्वरित निस्तारण किया गया शेष 112 को अधीनस्थ कर्मचारियों को सौपा गया ।मौके पर खंड विकास अधिकारी केराकत,तहसीलदार केराकत महेंद्र प्रताप, क्षेत्राधिकारी केराकत, एडीओ पंचायत,एसियो चकबंदी जौनपुर रामनरायण, लेखपाल व कर्मचारी गण मौजूद रहें ।

चिल्लूपार के चौतरफा विकास के लिए मुख्यमंत्री से मिले राजेश त्रिपाठी

स्वतंत्र प्रभात

गोलाबाज़ार गोरखपुर । सूबे के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से उनके लखनऊ आवास पर आज सुबह चिल्लूपार विधायक राजेश त्रिपाठी ने मुलाकात कर प्रयागराज महाकुंभ के सफल विश्वस्तरीय आयोजन और चिल्लूपार क्षेत्र के गोला बाजार और आजमगढ के हाजीपुर दियारा क्षेत्र को जोड़ने वाले अवशेष पुल के लिए चिरप्रतीक्षित धन के लिए बार-बार किये गये अनुरोध को स्वीकार कर उसकी स्वीकृति देने के लिए आभार व्यक्त किया है । उक्त आशय की जानकारी स्वयं एक विज्ञप्ति के माध्यम से देते हुए पूर्व मंत्री और वर्तमान चिल्लूपार विधायक ने बताया कि उन्होंने मुख्य मंत्री से कछारांचल के चिर-पुरातन स्वप्न आछीडीह-सरया तटबंध और रेगुलेटर का निर्माण शीघ्र शुरू कराने की मांग के साथ चिल्लूपार में हर साल तबाही मचाने वाले तरैना सहित सभी बरसाती नालों की विधिवत गहरी खुदाई कराने तथा चिल्लूपार क्षेत्र में अवशेष मगर बहुत जरूरी अनेक सड़कों और पुलों की एक लिस्ट सौंप कर उनका निर्माण किसी न किसी योजना से कराने की अपील की ।

चिल्लूपार विधायक राजेश त्रिपाठी ने यह भी बताया कि उन्होंने मुख्य मंत्री से गोला, बड़हलगंज, उरुवा बाजार में रामजानकी हाइवे पर आधुनिक बस स्टेशन बनाने के साथ-साथ गोला और उरुवा ब्लाक में एक-एक मिनी ग्रामीण स्टेडियम बनाने की मांग की तथा नगर पंचायत गोला, उरुवा, बड़हलगंज के सुंदरीकरण और जल निकासी के लिए और अतिरिक्त धन देने का भी अनुरोध किया । श्री त्रिपाठी ने मुख्यमंत्री से गोला तहसील मुख्यालय के साथ उरुवा और बड़हलगंज तक इलेक्ट्रिक बस संचालन और सुदूर ग्रामीण इलाकों तक रोडवेज की बस चलाने की मांग की । चिल्लूपार विधायक ने बताया कि उन्होंनें मुख्य मंत्री से अनुरोध किया कि वे सभी विकास कार्यों के लोकार्पण और शिलान्यास के लिए चिल्लूपार में अवश्य पधारें, जिस पर मुख्य मंत्री ने सभी विकास कार्यों को कराने के साथ साथ चिल्लूपार आने का भी आश्वासन दिया ।

गोरखपुर में दुष्कर्म के दोषी को 7 साल की सजा

स्वतंत्र प्रभात

गोरखपुर- गोरखपुर की एक अदालत ने 2016 में शाहपुर थाने में दर्ज दुष्कर्म के मामले में राजू सैनी को दोषी ठहराया है। अदालत ने राजू सैनी को 7 साल की कठोर कारावास और 17,000 रुपये के जुर्माने की सजा सुनाई है। पुलिस महानिदेशक के "ऑपरेशन कनविक्शन" के तहत कार्रवाई यह फैसला उत्तर प्रदेश के पुलिस महानिदेशक द्वारा चलाए जा रहे "ऑपरेशन कनविक्शन" अभियान के तहत आया है। इस अभियान का उद्देश्य अपराधियों को तेजी से न्याय दिलाना है।

गोरखपुर पुलिस की प्रभावी पैरवी- गोरखपुर के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक के निर्देशन में शाहपुर थाने के प्रभारी निरीक्षक नीरज कुमार राय, थाने के पैरोकार और मॉनिटरिंग सेल ने मामले की प्रभावी पैरवी की।

विशेष पॉक्सो-1 अदालत का फैसला- विशेष पॉक्सो-1 अदालत ने राजू सैनी को धारा 363, 366, 376 आईपीसी और 3/4 पॉक्सो एक्ट के तहत दोषी पाया।

दोष सिद्धि में योगदान- इस मामले में ,छ्ठ्ष्ट श्री राघवेन्द्र राम त्रिपाठी,छ्ठ्ष्ट श्री उमेश मिश्रा और स्स्क्र श्री अरविन्द श्रीवास्तव का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

बैतालपुर चीनी मिल चलाने कि मांग को लेकर किसान 114 वें धरने पर

देवरिया। बैतालपुर चीनी मिल चलाने हेतु चीनी मिल चलाओ संघर्ष समिति के तत्वाधान में चलाया जा रहा धरना 114 वें दिन जारी रहा । जहां पर जिले के कोने-कोने से आए किसानों ने भाग लिया यहां आए किसानों ने एक स्वर से कहा कि बैतालपुर चीनी मिल को चलाना नहीं था तो 2017 से 2024 तक मुख्यमंत्री ने चार बार घोषणा क्यों किया । इस बैतालपुर चीनी मिल को चीनी कंपलेक्स बनाकर चालू करेंगे लेकिन आज तक चीनी मिल नहीं चल सकी। जब तक बैतालपुर चीनी मिल चालू नहीं होगा तब तक धरना अनवरत धरना जारी रहेगा। इस अवसर पर बृजेंद्र मणि त्रिपाठी, विकास दुबे, राम प्रकाश सिंह ,रामलाल गुप्ता, बजरंगी दास, नरसिंह यादव, बकरीदन उर्फ बरकत अली, राम प्रसाद ,विजय कुमार सिंह, वरुण सिंह बघेल, प्रेमचंद ,राम? अधार गुप्ता ,जनार्दन कुशवाहा, विवेक कुमार गुप्ता ,राम इकबाल चौहान, रत्नेश मिश्रा इत्यादि मौजूद रहे ।

गोला तहसील में सम्पूर्ण समाधान दिवस का हुआ आयोजन, कुल आये 82 मामलों में मात्र छह का हुआ निस्तारण

स्वतंत्र प्रभात

गोलाबाजार गोरखपुर – गोला तहसील सभागार में शनिवार को सम्पूर्ण समाधान दिवस का आयोजन उप जिलाधिकारी गोला प्रशांत कुमार वर्मा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। समाधान दिवस पर सी ओ गोला मनोजकुमार पांडेय तहसीलदार कृष्ण गोपाल त्रिपाठी नायब तहसीलदार प्रकाश सिंह विजयकुमार यादव बी डी ओ दिवाकर सिंह ने बखूबी समाधान दिवस पर आए फरियादियों की पीड़ा को सुना ।और निस्तारण करने का भरपूर प्रयास किया।समाधान दिवस पर आए कुछ मामलों को निस्तारण हुआ लेकिन शेष मामलों को प्रकरण से सम्बंधित अधिकारियों को गुणवत्ता पूर्वक समयावधि में निस्तारण के लिए आदेश के साथ दे दिया गया। इस समाधान दिवस पर राजस्व पुलिस बिकास पेंशन बिजली आदि से सम्बंधित मामले आये। समाधान दिवस पर गाजे गड़हा निवासी दिव्यांग दम्पति अनिता देवी व उसके पति राशन कार्ड के लिए समाधान दिवस पर पहुच कर आवेदन दिया।आपूर्ति बाबू कृष्णकुमार ने दिव्यांग दम्पति का आवेदन लेकर समाधान कराने का आश्वासन दिया। ग्राम बेलपार पाठक निवासी उदयभान पुत्र स्व रामप्यारे ने एक आवेदन एस डी एम गोला को देते हुए कहा कि आराजी नम्बर76 पोखरी राजस्व अभिलेख में दर्ज है। पोखरी के दक्षिण व पश्चिम पूर्वजो के समय से रास्ता चलता आ रहा है।लेकिन गांव के ही लोगों द्वारा पोखरी पर अतिक्रमण हो रहा है। जिससे रास्ता अवरुद्ध हो रहा है। इस सम्बंध में कई बार समाधान दिवस पर आवेदन दिया लेकिन कोई कारीवाहि नही हुई।जिसपर एस डी एम ने राजस्व निरीक्षक को प्रकरण का समाधान कराने के लिए आदेशित किया। इस अवसर पर राजस्व निरीक्षक लालजी शर्मा राममूर्ति वर्मा रमेश पांडेय अशोक गुप्ता राजेश सिंह टी एन सिंह कृष्णकुमार यादव लल्लन प्रसाद सुशील सोनी सहित अन्य लोग उपस्थित रहे।

खजनी तहसील- वरासत में लापरवाही और अनुपस्थिति, चार लेखपालों पर गिरी गाज

स्वतंत्र प्रभात

गोरखपुर- जनपद के खजनी तहसील प्रशासन ने वरासत के मामलों में लापरवाही और लगातार अनुपस्थिति के आरोपों में चार लेखपालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की है। तहसीलदार खजनी ने दो लेखपालों को लापरवाही के लिए कारण बताओ नोटिस जारी किया है, जबकि दो अन्य लेखपालों का अनुपस्थिति के कारण एक दिन का वेतन काट दिया गया है। इस प्रशासनिक कार्रवाई से लेखपालों में हड़कंप मच गया है। तहसीलदार खजनी नरेंद्र कुमार द्वारा उपजिलाधिकारी खजनी को भेजी गई रिपोर्ट के अनुसार, लेखपाल गौरव राज और अपर्णा गांगुली लंबे समय से ड्यूटी से अनुपस्थित चल रहे हैं। वहीं, लेखपाल अश्वनी सिंह और दुष्यंत यादव पर वरासत के मामलों में लापरवाही बरतने का आरोप है। तहसीलदार ने अपनी रिपोर्ट में चारों लेखपालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग की है।

उपजिलाधिकारी राजेश प्रताप सिंह ने बताया कि गौरव राज और अपर्णा गांगुली का अनुपस्थिति के कारण एक दिन का वेतन काट दिया गया है, जबकि अश्वनी सिंह और दुष्यंत यादव के खिलाफ वरासत में लापरवाही की रिपोर्ट प्राप्त हुई है, जिस पर जल्द ही कार्रवाई की जाएगी। वरासत के मामलों में लापरवाही के कारण लोगों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। अब देखना यह है कि उपजिलाधिकारी खजनी इस रिपोर्ट पर क्या कार्रवाई करते हैं।

ज्वेलर की दुकान से सेंध काटकर नगदी समेत लाखों के आभूषण की चोरी

सरपतहां, जौनपुर। स्थानीय थाना क्षेत्र के हमजापुर (ऊसरगांव) बाजार में शुक्रवार रात एक जेवर की दुकान में सेंध काटकर चोरों ने नकदी समेत लाखो रुपए मूल्य के आभूषण पर हाथ साफ कर दिया। दुकानदार को घटना की जानकारी हुई तो उसने पुलिस को प्रार्थना पत्र दिया। जिसके बाद पुलिस घटना की जांच-पड़ताल में जुटी है। खुटहन थाना क्षेत्र के पटैला निवासी शिवकुमार सोनी उर्फ गोलू क्षेत्र के हमजापुर में शिवकुमार ज्वेलर्स नाम से जेवर की दुकान चलाता है। रोजाना की भांति शुक्रवार को भी शाम 6 बजे वह दुकान बंद के घर चला गया था। शनिवार सुबह मकान मालिक बृज मोहन गौड़ द्वारा उसे सूचना मिली कि उसके दुकान में सेंध काटी गई है। जिसके बाद वह भागते हुए दुकान पर पहुंचा। पीड़ित के अनुसार दुकान से 3.5 किलोग्राम चांदी, 72 ग्राम सोना के अलावा चार हजार रुपए नकद गायब है उधर इस बारे में पूछे जाने पर चौकी प्रभारी सरायमोहिउद्दीनपुर अरविंद यादव ने बताया कि सुबह चोरी की सूचना मिली है जिसके बाद तत्काल घटनास्थल पर पहुंचकर जांच-पड़ताल की जा रही है।

गोरखपुर- जन समस्याओं के प्रति संवेदनशील रहें अधिकारी- ज्वाइंट मजिस्ट्रेट

स्वतंत्र प्रभात

गोरखपुर- सदर तहसील सभागार में आयोजित तहसील समाधान दिवस में ज्वाइंट मजिस्ट्रेट/एसडीएम सदर मृणाली अविनाश जोशी ने अधिकारियों को जन समस्याओं के प्रति संवेदनशील रहने और उनका जमीनी स्तर पर समाधान सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि संपूर्ण समाधान दिवस का आयोजन जन समस्याओं के त्वरित निस्तारण के लिए किया जाता है और जन समस्याओं का गुणवत्तापूर्ण और समयबद्ध निस्तारण शासन की प्राथमिकता है। उन्होंने चेतावनी दी कि मामलों के निस्तारण में किसी भी स्तर पर लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी और दोषी अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी।

ज्वाइंट मजिस्ट्रेट ने अधिकारियों को सदर तहसील में प्राप्त मामलों का एक सप्ताह के भीतर निस्तारण करने के निर्देश दिए। उन्होंने पिछले संपूर्ण समाधान दिवस में प्राप्त आवेदनों के निस्तारण का सत्यापन भी कराया और अधिकारियों को स्वयं मौके पर जाकर शिकायतों का समाधान कराने और सदर तहसील को रिपोर्ट प्रस्तुत करने के लिए कहा। उन्होंने कहा कि जन शिकायतों का निस्तारण गुणवत्तापूर्ण होना चाहिए और गुणवत्ताहीन निस्तारण पर कठोर कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने सभी अधिकारियों को नियमित रूप से क्षेत्र का दौरा करने और जनता की शिकायतों का स्वयं समाधान करने के लिए कहा। इस अवसर पर विभिन्न विभागों के संबंधित अधिकारी, अपर एसडीएम सदर कुंवर सचिन सिंह, तहसीलदार सदर ध्रुवेश कुमार सिंह, नायब तहसीलदार अरविंद नाथ पांडे, नायब तहसीलदार देवेंद्र यादव, तहसीलदार हिमांशु सिंह, नायब तहसीलदार जाकिर हुसैन, कानूनगो, लेखपाल और अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

गोरखपुर में हत्या के दोषी को आजीवन कारावास

गोरखपुर- वर्ष 2018 में पिपराइच थाना क्षेत्र में दर्ज हत्या के एक मामले में अदालत ने अभियुक्त संदीप कुमार को आजीवन कारावास की सजा सुनाई है। अपर सत्र न्यायाधीश/पीसी-02 की अदालत ने अभियुक्त पर 10,000 रुपये का जुर्माना भी लगाया है। यह मामला 2018 में पिपराइच थाने में दर्ज किया गया था। पुलिस ने मामले की जांच के बाद संदीप कुमार को गिरफ्तार किया था। अदालत में सुनवाई के दौरान अभियोजन पक्ष ने संदीप कुमार के खिलाफ पर्याप्त सबूत पेश किए। अदालत ने सबूतों के आधार पर संदीप कुमार को दोषी पाया। पुलिस महानिदेशक उत्तर प्रदेश द्वारा चलाए जा रहे ÷ऑपरेशन कन्विक्शन÷ अभियान में वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक गोरखपुर के निर्देशन में विवेचक अरुण कुमार शुक्ला, थाने के पैरोकार और मॉनिटरिंग सेल की प्रभावी पैरवी के फलस्वरूप अदालत ने अभियुक्त को सजा सुनाई। इस मामले में एडीसीजी श्री नितिन मिश्रा का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा।

गोरखपुर- जीडीए नोटिस के बाद मस्जिद कमेटी ने स्वेच्छा से अवैध निर्माण गिराया

स्वतंत्र प्रभात

गोरखपुर – गोरखपुर की अबू हुरैरा मस्जिद, जिसका निर्माण बिना गोरखपुर विकास प्राधिकरण (जीडीए) की मंजूरी के किया गया था, ने जीडीए द्वारा जारी नोटिस के बाद स्वेच्छा से अपने दो मंजिलों को गिराना शुरू कर दिया है। जीडीए ने मस्जिद कमेटी को 15 दिनों का समय दिया था, जिसकी समय सीमा कल समाप्त हो रही है। यदि मस्जिद कमेटी ने अवैध निर्माण को नहीं तोड़ा होता, तो जीडीए ने बुलडोजर से कार्रवाई करने की चेतावनी दी थी। आज शनिवार को मस्जिद कमेटी ने खुद ही अवैध निर्माण को गिराने का काम शुरू कर दिया है। मस्जिद कमेटी के इस कदम से जीडीए के साथ किसी भी टकराव से बचा जा सका है।

पृष्ठभूमि

जीडीए ने पाया था कि मस्जिद का निर्माण बिना नक्शा पास कराए किया गया था। यह उत्तर प्रदेश शहरी नियोजन और विकास अधिनियम, 1973 का उल्लंघन है। जीडीए ने मस्जिद कमेटी को नोटिस जारी कर अवैध निर्माण को हटाने का आदेश दिया था।

मस्जिद कमेटी का बयान

मस्जिद कमेटी के एक सदस्य ने कहा कि वे कानून का पालन करना चाहते हैं और इसलिए उन्होंने अवैध निर्माण को गिराने का फैसला किया है। उन्होंने यह भी कहा कि वे भविष्य में जीडीए के नियमों का पालन करेंगे।

जीडीए का बयान

जीडीए के एक अधिकारी ने कहा कि वे मस्जिद कमेटी के इस कदम से खुश हैं। उन्होंने यह भी कहा कि जीडीए अवैध निर्माण के खिलाफ कार्रवाई करना जारी रखेगा।

वन माफियाओं का आतंक, जलालपुर में धड़ल्ले से हरे पेड़ों की कटाई जारी

स्वतंत्र प्रभात

जौनपुर जलालपुर। थाना क्षेत्र के नहोरा जयाकोट गांव में वन माफियाओं द्वारा हरे पेड़ों की अवैध कटाई जोरों पर है। यहां शीशम, आम, सागवान सहित तीन दर्जन से अधिक पेड़ों को काट दिया गया है। ग्रामीणों के अनुसार, इस अवैध कटाई में हल्का एसआई और वन विभाग के अधिकारियों की मिलीभगत होने की आशंका जताई जा रही है। स्थानीय लोगों ने बताया कि पिछले कई दिनों से क्षेत्र में जगह-जगह बड़े पैमाने पर पेड़ों की कटाई चल रही है, लेकिन प्रशासन इस पर कोई सख्त कार्रवाई नहीं कर रहा है। वन विभाग की उदासीनता के चलते माफियाओं के हौसले बुलंद हैं, और वे दिनदहाड़े कीमती लकड़ियों को ट्रेक्टर, पिकअप में भरकर ले जा रहे हैं। जंगलों की इस अंधाधुंध कटाई से पर्यावरण को भारी नुकसान पहुंच रहा है। हरे-भरे पेड़ों के काटे जाने से न केवल हरियाली खत्म हो रही है, बल्कि यह स्थानीय पारिस्थितिकी तंत्र को भी नुकसान पहुंचा रहा है। विशेषज्ञों का कहना है कि यदि इसी तरह पेड़ों की कटाई होती रही तो आने वाले समय में इसका बुरा असर जलवायु पर भी पड़ेगा। ग्रामीणों का आरोप है कि हल्का एसआई और वन विभाग के कुछ अधिकारी इस अवैध कटाई में शामिल हैं। वे जानबूझकर कार्रवाई नहीं कर रहे, जिससे माफियाओं के हौसले बुलंद हो रहे हैं। कई बार शिकायत के बावजूद भी पुलिस और प्रशासन ने अब तक कोई ठोस कदम नहीं उठाया है।

राष्ट्रीय आय एवं योग्यता आधारित परीक्षा में चार बच्चों के चयन पर विद्यालय में खुशी की लहर

जौनपुर। राष्ट्रीय आय एवं योग्यता आधारित परीक्षा 2025 में मड़ियाहू ब्लॉक में स्थित पूर्व माध्यमिक विद्यालय कुढ़ा रामपुर में कुल चार बच्चों का चयन हुआ है जिसमें पुनीत यादव, आयुष यादव, आशुतोष यादव एवं अदिति यादव हैं। खण्ड शिक्षा अधिकारी मड़ियाहूं श्री उदय भान कुशवाहा ने इन बच्चों को बधाई एवं इनके उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं दी हैं। नोडल शिक्षक आनन्द यादव एवं शिक्षक राजकुमार , रामआसरे तथा सुरेन्द्र कुमार ने बच्चों का विद्यालय स्तर पर माल्यार्पण कर बधाई दी । उक्त जानकारी विद्यालय के सहायक अध्यापक एवं वरिष्ठ उपाध्यक्ष पू मा शि संघ मड़ियाहूं यादवेन्द्र नाथ यादव ने दी है।

यह सम्मान उत्तर प्रदेश के लिए है गर्व की बात - कुलपति प्रो. वंदना सिंह

● नई दिल्ली में आयोजित राष्ट्रीय विज्ञान दिवस समारोह में विश्वविद्यालय को मिला प्रतिष्ठित सम्मान

स्वतंत्र प्रभात

जौनपुर- नई दिल्ली स्थित विज्ञान भवन में आयोजित राष्ट्रीय विज्ञान दिवस समारोह 2025 के अवसर पर वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय की कुलपति समेत डीएसटी पर्स टीम को विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने सम्मानित किया. कुलपति प्रो. वंदना सिंह को मिले सम्मान को विश्वविद्यालय के आंतरिक गुणवत्ता प्रकोष्ठ के निदेशक प्रो. गिरिधर ने प्रतिनिधि के तौर पर प्राप्त किया. विश्वविद्यालय के कुलपति सभागार में शनिवार को आयोजित कार्यक्रम में नई दिल्ली में आयोजित सम्मान समारोह में प्राप्त अवार्ड को प्रो. गिरिधर मिश्र एवं पर्स टीम ने कुलपति प्रो. वंदना सिंह को सौंपा. विश्वविद्यालय से पर्स की टीम के प्रो. गिरिधर मिश्र, डॉ. धीरेन्द्र चौधरी एवं डॉ. काजल डे ने कार्यक्रम में प्रतिभाग किया।

सम्मान समारोह में भारत सरकार के मुख्य वैज्ञानिक सलाहकार प्रो. ए. के. सूद, राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी के अध्यक्ष प्रो. आशुतोष शर्मा, सचिव-आयुष श्री वैद्य राजेश कोटेचा, सचिव-डी.बी.टी. डॉ. राजेश एस. गोखले, सीएसआईआर की महानिदेशक डॉ. एन. कालासेलवी, तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के सचिव प्रो. अभय कारंडीकर सहित देशभर के विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुलपति व आचार्य उपस्थित रहे. उल्लेखनीय है कि उत्तर प्रदेश से वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय ही एकमात्र ऐसा विश्वविद्यालय है जिसे इस वर्ष यह प्रतिष्ठित अनुदान और सम्मान प्राप्त हुआ है। भारत सरकार के विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने विश्वविद्यालय को ÷प्रमोशन ऑफ यूनिवर्सिटी रिसर्च एंड साइंटिफिक एक्सीलेंस÷ अनुदान प्रदान किया है। इस महत्वपूर्ण उपलब्धि पर कुलपति प्रो. वंदना सिंह ने पर्स टीम सहित पूरे विश्वविद्यालय परिवार को बधाई दी. उन्होंने कहा कि यह अनुदान विश्वविद्यालय की शैक्षणिक उत्कृष्टता एवं शोध में उत्कृष्ट योगदान का प्रमाण है, जो न केवल संस्थान बल्कि पूरे राज्य के लिए गर्व की बात है. इस परियोजना के अंतर्गत सौर ऊर्जा, हाइड्रोजन ऊर्जा, और उन्नत बैटरी प्रौद्योगिकी जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में शोध को नई ऊर्जा मिलेगी. इस अवसर पर योग गुरु जय सिंह ने शिक्षकों एवं अधिकारियों को मन केन्द्रित करने के लिए ध्यान का अभ्यास कराया. इस अवसर पर कुलसचिव महेंद्र कुमार, परीक्षा नियंत्रक डॉ. विनोद कुमार सिंह, प्रो. मानस पाण्डेय, प्रो. अजय प्रताप सिंह, प्रो. मनोज मिश्र, प्रोफेसर अविनाश पाथर्डीकर प्रो. राजेश शर्मा, प्रो. सौरभ पाल, प्रो. रजनीश भास्कर, प्रो. रवि प्रकाश, प्रो. ए. के. श्रीवास्तव, प्रो. प्रमोद यादव, डॉ. राज बहादुर यादव, डॉ. जान्हवी श्रीवास्तव, डॉ. श्याम कन्हैया सिंह, डॉ. सुनील कुमार डॉ. दिग्विजय सिंह राठौर, डॉ. शशिकांत, उपकुलसचिव अजीत प्रताप सिंह, अमृत लाल, बबिता सिंह समेत लोग उपस्थित रहे।

संक्षिप्त ख़बरें

विधायक श्याम प्रकाश ने चौपाल लगाकर जनता की समस्याएं , मडिया घाट पुल का निरीक्षण किया

पिहानी/हरदोई। विधायक श्याम प्रकाश ने गोमती नदी पर निर्माणाधीन पुल का निरीक्षण कर रसूलपुर में एक जनसभा को संबोधित कर जनसमस्याओं को सुना और जनता की समस्याओं का निस्तारण कराने का आस्वाशन दिया। बताते चलें विधायक श्याम प्रकाश के अथक प्रयास,परिश्रम और मेहनत से गोमती नदी पर पुल का निर्माण कार्य चल रहा है।गोमती नदी पर पुल बनने से सैकड़ों गांवों रसूलपुर, सहादत नगर, चठिया,पंडरबा किला, दंमगढा राभा, दहेलिया आदि गांव के लोगों को आवागमन में अब कठिनाइयों का सामना करना नहीं पड़ेगा।लखीमपुर जिले की सीमा में स्थित प्राचीन बाबा पारस नाथ मंदिर के दर्शन व मैगलगंज कस्बे को जाने वाले सैकड़ों लोगों को जहानीखेड़ा से होकर 20 किमी से भी ज्यादा लम्बा रास्ता तय करना पड़ रहा था।साथ में भारी भरकम 200 रुपये का टोलटैक्स भी अदा करना पड़ रहा था।जिससे क्षेत्र की जनता काफी परेशान थी। पुल बन जाने से लोगों को कुछ समय बाद काफी लम्बा चक्कर काटकर मैगलगंज, पारस नाथ मंदिर को पहुँचने में निजात मिल सकेगी।जनसभा में विधायक श्याम प्रकाश ने कहा हमारा यही प्रयास रहता है।कि मेरी विधानसभा में अधिक से अधिक विकास कार्य हों।और इस क्षेत्र की जनता से हमारा घर जैसा नाता है।जनता ने भी इस पुल निर्माण का श्रेय विधायक श्याम प्रकाश को दिया।और विधायक का धन्यवाद ज्ञापित कर आभार प्रकट किया।निरीक्षण के दौरान पीडब्लूडी ,और सेतु निगम के अधिकारी, विधायक प्रतिनिधि धर्मेश मिश्रा, गोपामऊ चेयरमैन बली मोहम्मद, पूर्व जिलापंचायत सदस्य दिलीप मिश्रा, अमित त्रिवेदी, विपुल शुक्ला, राहुल मिश्र,गोपाल मिश्रा,सिल्हु शुक्ला, सोनू सिंह बखरिया, ओमवीर यादव,प्रधान रसुलपुर रामसरन सिंह, आदि लोग मौजूद रहे।

अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक ने वृक्षारोपण व नगर वन कामीपुर का किया औचक निरीक्षण

कछौना, हरदोई। वन रेंज कछौना के अंतर्गत शुक्रवार को नगर वन कामीपुर व हथौड़ा, ऊगपुर, नगवा में कराए गए वृक्षारोपण की जमीनी हकीकत को जानने हेतु अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक रेणु सिंह ने औचक निरीक्षण किया गया। इस दौरान जिले के प्रभागीय वन अधिकारी (डी0 एफ0 ओ0/डिविजनल फॉरेस्ट ऑफिसर) सहित वन क्षेत्राधिकारी पूरी टीम के साथ मौजूद रहे। अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक ने वन विभाग को सख्त दिशा निर्देश दिए। बतातें चलें हमारी जीवनशैली पूरी तरह से प्रकृति पर आधारित है। ग्रामीण क्षेत्रों में तो जंगल हैं, लेकिन शहरी बस्तियों में जनसंख्या के अनुपात में वृक्षो/जंगलों उतनी ही कमी हैं। जिसके कारण प्रकृति ने ऐसे संकेत भेजे हैं जिनकी अनदेखी नहीं की जा सकती। इसी लिये भारत सरकार ने योजना के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में वन वाटिका व शहरों में नगर वनों का निर्माण युद्ध स्तर पर किया गया। नगर वन शहरी वन विकसित करने की महत्वपूर्ण योजना है। जिससे शहर वासियों को शहरी वानिकी के कई लाभ हैं, वाणिज्यिक से लेकर पारिस्थितिक लाभों में शहरी क्षेत्रों में तापमान वृद्धि को कम करना, प्रकाश संश्लेषण के माध्यम से कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन को कम करना व अन्य वायु प्रदूषकों को हटाना, मिट्टी के कटाव को रोकना, भूजल पुनर्भरण और मिट्टी को स्थिर करना शामिल है। शहरों में हरियाली बढ़ाने से समुदाय के स्वस्थ रहने हेतु हवा से प्रदूषक और ग्रीनहाउस गैसों को कम करके, अस्थमा और फेफड़ों के कैंसर के खतरे को कम करते हैं। पर्यावरण को बेहतर बनाने में मदद करते हैं। ये मनोरंजन के लिए जगह मुहैया कराते हैं, यह मनुष्य व सभी जीवों के लिए फ़ायदेमंद होते। वहीं वन आश्रय, आजीविका, जल, भोजन और ईंधन की सुरक्षा प्रदान करने के साथ सभी गतिविधियों में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से वन शामिल हैं। दवाओं, सौंदर्य प्रसाधनों और डिटर्जेंट जैसे रोजमर्रा के उत्पादों में इस्तेमाल होने से बड़ी संख्या में उप-उत्पाद भी जंगलों से प्राप्त होते हैं। इसी क्रम में कुछ वर्ष पहले नगर वन कामीपुर का निर्माण किया गया, परंतु कई वर्ष बीत जाने के बाद भी अभी तक कार्य पूर्ण नहीं हो सका है। जिससे नगर वासियों सहित ग्रामीण भी इसके लाभ से वंचित है। इसी के चलते शुक्रवार को वन रेंज कछौना क्षेत्र के अंतर्गत नगर वन कामीपुर व हथौड़ा, ऊगपुर, नगवा में किए गए वृक्षारोपण की जमीनी हकीकत जानने हेतु अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक रेणु सिंह ने औचक निरीक्षण किया। इस निरीक्षण के दौरान जिले के प्रभागीय वन अधिकारी (डी0एफ0ओ0/डिविजनल फॉरेस्ट ऑफिसर) सहित वन क्षेत्राधिकारी पूरी टीम के साथ मौजूद रहे। अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक ने वन बारीकी से निरीक्षण किया। इसी बीच प्रभागीय वन अधिकारी हरदोई को दिशा निर्देश देते हुए कहा कि पौधारोपण करने के साथ-साथ उनका संरक्षण करना अनिवार्य है।

शिवनगर शिव मन्दिर में आम सभा सम्पन्न , नाथ योगी छात्र संघ के शिवनगर आंचलिक समिति गठन

स्वतंत्र प्रभात

धेमाजी असम। आज सिलापथार थाने अंतर्गत शिवनगर शिव मन्दिर आंगन में एक सभा का आयोजन किया गया। सामाजिक कार्यकर्ता धीरेंद्र नाथ की अध्यक्षता में हुई बैठक में नाथ योगी समुधाय के राजनीतिक स्थिति पर नाथ योगी विकास परिषद के धेमाजी जिला सदस्य संजय नाथ ने चर्चा के बाद भीमू एवं असम समझते की 6 नंबर अनुच्छेद के बारे में नाथ योगी छात्र संघ के केन्द्रीय चसीव दीपक नाथ ने चर्चा किया। सभा में रंजन नाथ को अध्यक्ष, बिस्वजीत नाथ, पंकज नाथ को उपाधक्य, जयंत नाथ को सचिव, नंदलाल नाथ चौधारी, पंकज नाथ को सह सचिव, बिक्रम नाथ को शिक्षा सचिव, सुब्रत नाथ को संघठन सचिव, सुजीत नाथ को प्रचार सचिव, शोषांग्खा नाथ को वित्त सचिव, सुमंत नाथ को सांस्कृतिक सचिव के रुप में लेकर 31 सदस्य वाले शिवनगर आंचालिक समिति सभा में नाथ योगी छात्र संघ के धेमाजी जिला के चसीव सजल देव नाथ ने संघठन के संविधान के बारे में नई समिति को अवगत कराया एवं जिला उपाधक्या योगी सुबेश नाथ ने संविधान के शपत पाठ कराया। एवं कोई कार्यकारी प्रस्ताव ग्रहण किया। सभा में नाथ योगी धेमाजी जिला समिति के मनोज नाथ, जितेन नाथ कार्यकर्ताओ सहीत इलाके की भारी संख्या में सभा में उपस्थित थे।

*संपूर्ण समाधान दिवस में डीएम - एसपी ने सुनी फरियादियों की समस्याएं , 55 मामलों में से चार का हुआ निस्तारण

स्वतंत्र प्रभात

सिद्धार्थनगर। सम्पूर्ण तहसील समाधान दिवस पर शनिवार को तहसील इटवा में जिलाधिकारी डा0 राजागणपति आर0 की अध्यक्षता एवं पुलिस अधीक्षक डा0 अभिषेक महाजन की उपस्थिति में तहसील समाधान दिवस का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। तहसील इटवा में आयोजित सम्पूर्ण तहसील समाधान दिवस के आयोजन के अवसर पर राजस्व, विकास, शिक्षा, पूर्ति एवं अन्य विभागों के शिकायतों की सुनवाई जिलाधिकारी डा0 राजागणपति आर0, उपजिलाधिकारी इटवा कुणाल तथा पुलिस विभाग से सम्बंधित शिकायतों की सुनवाई पुलिस अधीक्षक डा0 अभिषेक महाजन द्वारा किया गया। जिलाधिकारी डा0 राजागणपति आर0 द्वारा तहसील समाधान दिवस में पिछले समाधान दिवस में प्राप्त शिकायतों के आख्या का अवलोकन किया गया। अवलोकन के पश्चात जिलाधिकारी द्वारा तत्काल जिला स्तरीय टीम बनाकर मौके का जांच कराने का निर्देश दिया। जिलाधिकारी ने निर्देश दिया कि भूमि से संबधित विवाद मौके पर जाकर निरीक्षण कर निस्तारण कराये। जिलाधिकारी ने सम्पूर्ण तहसील समाधान दिवस इटवा में उपस्थित सभी जिला स्तरीय अधिकारियों को निर्देश दिया कि तहसील समाधान दिवस में प्राप्त हो रही शिकायतों एवं आईजीआरएस पर प्राप्त शिकायतों का समय से एवं गुणवत्तापूर्ण निस्तारण सुनिश्चित किया जाये। इसके साथ ही शिकायतकर्ता एवं विपक्षी दोनों के समक्ष जांच कर कार्यवाही किया जाये। जिलाधिकारी ने कानूनगो एवं लेखपालों को निर्देश दिया कि भूमि संपत्ति रजिस्टर एवं भूमि विवाद रजिस्टर अवश्य बना ले। किसी भी विभाग का तहसील दिवस का कोई भी प्रकरण लम्बित नही होना चाहिए यदि किसी भी विभाग का प्रकरण लम्बित पाया जायेगा तो सम्बन्धित के विरूद्ध कड़ी कार्यवाही की जायेगी। लेखपाल एवं कानूनगो मौके पर जाकर शिकायत के निस्तारण से पूर्व निरीक्षण कर उसके बाद की आख्या लगायेगे इसमें किसी भी प्रकार की लापरवाही नही होनी चाहिए। जिलाधिकरी ने निर्देश देते हुए कहा कि तहसील दिवस में जो भी शिकायते प्राप्त हो रही उन शिकायतों का गम्भीरतापूर्वक पर मौके पर जाकर निस्तारण कराये। इसमें किसी भी प्रकार की शिकायत नही मिलना चाहिए। सम्पूर्ण तहसील समाधान दिवस के आयोजन के अवसर पर कुल 55 प्रार्थना पत्र प्रस्तुत हुए जिसमें राजस्व-22, पुलिस विभाग से सम्बन्धित-09, विकास-06, विद्युत-08, अन्य-10 प्रार्थना-पत्र प्रस्तुत हुए। जिलाधिकारी डा0 राजागणपति आर0 द्वारा राजस्व-04, प्रार्थना-पत्र का मौके पर ही निस्तारण करा दिया गया। तहसील दिवस में प्राप्त शेष शिकायती प्रार्थना पत्रों को तीन दिवस के अन्दर शत-प्रतिशत निस्तारण की कार्यवाही सम्बन्धित विभाग के अधिकारी को सुनिश्चित करने के लिए निर्देशित किया गया। इस अवसर पर डी.एफ.ओ. पुष्प कुमार के, मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा0 रजत कुमार चौरसिया, पीडी नागेन्द्र मोहन राम त्रिपाठी, अधिशासी अभियन्ता लोक निर्माण विभाग इटवा आशीष भारद्वाज, जिला पंचायत राज अधिकारी पवन कुमार, जिला पूर्ति अधिकारी देवेन्द्र प्रताप सिंह, मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी जीवन लाल, उप कृषि निदेशक अरविन्द कुमार विश्वकर्मा, जिला कृषि अधिकारी मो0मुजम्मिल, जिला प्रोबेशन अधिकारी विनय कुमार सिंह, तहसीलदार इटवा, तहसील इटवा क्षेत्र के अन्तर्गत समस्त थानाध्यक्ष एवं खण्ड विकास अधिकारी, सीडीपीओ तथा अन्य जनपद स्तरीय अधिकारी उपस्थित रहे।

प्रशासन की नाकामी पर भड़की किसान यूनियन चेतावनी के बाद भी समस्याओं का समाधान नहीं

स्वतंत्र प्रभात

पीलीभीत। भारतीय किसान यूनियन (भानु) ने जिला प्रशासन की निष्क्रियता पर तीखा हमला बोला है। संगठन ने कहा है कि पहले भी कई ज्ञापन दिए गए, लेकिन प्रशासन कानों में तेल डालकर बैठा है। किसानों की समस्याओं पर कोई सुनवाई नहीं हो रही, जिससे उनमें आक्रोश बढ़ता जा रहा है। यदि प्रशासन ने जल्द ही समाधान नहीं किया, तो यूनियन सड़क पर उतरकर आर-पार की लड़ाई लड़ेगी।पीलीभीत में नकली और मिलावटी खाद्य सामग्री की बिक्री धड़ल्ले से जारी है। फूड इंस्पेक्टरों और दुकानदारों की मिलीभगत से ज़हरीले खाद्य पदार्थ बाजार में खुलेआम बेचे जा रहे हैं। कई बार शिकायतें दर्ज कराई गईं, लेकिन हर बार फाइलों को ठंडे बस्ते में डाल दिया गया। प्रशासन की इस लापरवाही का खामियाजा आम जनता को भुगतना पड़ रहा है। क्या प्रशासन किसी बड़ी दुर्घटना का इंतजार कर रहा है? जिले में अवैध मिट्टी खनन अपने चरम पर है। खनन माफिया प्रशासन की नाक के नीचे अपना कारोबार चला रहे हैं, और अधिकारी आंखें मूंदे बैठे हैं। कई क्षेत्रों में ज़मीन का सीना छलनी कर खनन किया जा रहा है, जिससे पर्यावरण को गंभीर नुकसान हो रहा है। जब भी शिकायत की जाती है, तो अधिकारियों की ओर से महज दिखावे की कार्रवाई कर दी जाती है। सवाल उठता है कि आखिर इस अवैध कारोबार को संरक्षण कौन दे रहा है? जिला आपूर्ति विभाग में भ्रष्टाचार इस कदर हावी हो चुका है कि कोटेदार बेखौफ होकर गरीबों के हिस्से का राशन हड़प रहे हैं। राशन वितरण में धांधली की शिकायतें लगातार मिल रही हैं, लेकिन जिम्मेदार अधिकारी कार्रवाई के बजाय चुप्पी साधे बैठे हैं। कोटेदारों की मनमानी और घटतौली से गरीब जनता त्रस्त है। सरकार की योजनाएं फाइलों में चल रही हैं, लेकिन ज़मीन पर उनका कोई असर नहीं दिखता।ग्राम बकैनिया दीक्षित का मजरा मनपुरा आज भी मूलभूत सुविधाओं से महरूम है। न वहां श्मशान घाट है, न अस्पताल, न राशन की दुकान और न ही स्कूल। सरकार 'सबका विकास' का नारा देती है, लेकिन इस गांव के लोगों के लिए यह नारा सिर्फ एक धोखा साबित हुआ है। गरीब किसान-मजदूर रोजमर्रा की जिंदगी में भारी दिक्कतों का सामना कर रहे हैं, लेकिन उनकी सुध लेने वाला कोई नहीं।

पीलीभीत के थानों में भ्रष्टाचार इस कदर हावी हो चुका है कि अब पीड़ितों को न्याय मिलना सपना बन चुका है। पुलिस रिपोर्ट दर्ज करने में हीलाहवाली करती है, जबकि फर्जी मुकदमे दर्ज कर निर्दोषों को फंसाने का खेल बेरोकटोक जारी है। जिनकी जेबें भरी जाती हैं, उनकी सुनवाई होती है और बाकी लोगों को टरका दिया जाता है। अपराधियों के खिलाफ कार्रवाई नहीं होने से कानून-व्यवस्था सवालों के घेरे में है। मनरेगा योजना गरीबों को रोज़गार देने के लिए बनाई गई थी, लेकिन यहां भी भ्रष्टाचार ने अपने पैर पसार लिए हैं। प्रधान, रोजगार सेवक और सचिव फर्जी हाजिरी लगाकर सरकारी धन का गबन कर रहे हैं। गरीबों को उनके हिस्से की मजदूरी नहीं मिल रही, लेकिन प्रशासन के कानों तक यह आवाज नहीं पहुंच रही। गरीबों का हक लूटने वालों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई कब होगी? आवारा पशुओं और जंगली जानवरों की समस्या से किसान पहले ही परेशान हैं, लेकिन अब उनकी शिकायतें सुनने वाला कोई नहीं है। खेतों में घुसकर ये जानवर फसलें उजाड़ रहे हैं, लेकिन न तो प्रशासन इन्हें गौशालाओं में भेज रहा है और न ही किसानों को मुआवजा मिल रहा है। जब किसान अपनी फसल बचाने के लिए कदम उठाते हैं, तो उन्हीं पर मुकदमे ठोक दिए जाते हैं। आखिर किसानों के साथ यह अन्याय कब तक चलेगा? पीलीभीत की कई चीनी मिलों पर किसानों का बकाया भुगतान अटका हुआ है। किसान दिन-रात मेहनत कर गन्ना उगाते हैं, लेकिन जब भुगतान की बारी आती है, तो चीनी मिलें बहानेबाजी शुरू कर देती हैं। किसानों का गुस्सा अब फूटने लगा है। भारतीय किसान यूनियन ने मांग की है कि मिलों को ब्याज सहित भुगतान करने के आदेश दिए जाएं। बीसलपुर रोड पर बनी मोदी फैक्ट्री से निकलने वाला धुआं और राख किसानों की फसलों को बर्बाद कर रहा है। जहरीले धुएं से आसपास के गांवों में लोगों की सेहत पर बुरा असर पड़ रहा है। प्रशासन को बार-बार इसकी शिकायत दी गई, लेकिन अब तक कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया। फैक्ट्री में घटिया सामग्री से रिफाइंड बनाया जा रहा है, जिससे लोगों की सेहत खतरे में पड़ रही है। आखिर प्रशासन इस जहरीले कारोबार पर कब लगाम लगाएगा? गन्ना लदी ट्रॉलियों और डग्गामार वाहनों की ओवरलोडिंग का खेल बदस्तूर जारी है। एआरटीओ की मिलीभगत से ये वाहन सड़कों पर मौत बनकर दौड़ रहे हैं। कई हादसे हो चुके हैं, लेकिन प्रशासन आंखें मूंदे बैठा है। क्या प्रशासन किसी बड़े हादसे का इंतजार कर रहा है? भारतीय किसान यूनियन (भानु) के ज़िला अध्यक्ष भजनलाल क्रोधी और प्रदेश संगठन मंत्री रमेश चंद्र दद्दा ने प्रशासन को दो टूक शब्दों में चेतावनी दी है कि अगर जल्द ही इन समस्याओं का समाधान नहीं हुआ, तो संगठन सड़कों पर उतरकर उग्र आंदोलन करेगा। जिला अध्यक्ष भजन लाल क्रोधी ने कहा, ÷अब किसानों को गुमराह नहीं किया जा सकता। प्रशासन अगर कान में रुई डालकर बैठा है, तो हम उसे झकझोरने के लिए तैयार हैं। अब या तो समस्याओं का समाधान होगा, या फिर सड़कों पर जोरदार आंदोलन देखने को मिलेगा। क्या प्रशासन जागेगा या फिर किसान अपने हक की लड़ाई खुद लड़ने पर मजबूर होंगे? अब यह देखना बाकी है।

असम श्रीभूमि जिले के सोनबिल में सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ पतंग महोत्सव आयोजित किया जाएगा

कार्यक्रम को लेकर तैयारियाँ जोर-शोर पर क्षेत्र में आनंद उल्लास का माहौल।

स्वतंत्र प्रभात

असम श्रीभूमि (करीमगंज)। वर्तमान आधुनिकता के युग में बच्चों और युवाओं को-उन्मुख बनाने के लिए, 2 मार्च (रविवार) को आनंदपुर चौदह मादल मेला मैदान में सोनबिल के सांस्कृतिक कार्यकर्ताओं के प्रबंधन में पतंग महोत्सव आयोजित किया जाएगा। हर बार की तरह इस बार भी सोनबिल क्षेत्र में पतंग महोत्सव किया जाएगा इस कार्यक्रम में ढेर सारे बच्चे शामिल होंगे और नीले आसमान में पतंग का नजारा यह अलग होगा. इस पतंग बनाने में अहम भूमिका नेत्रहीन नगेंद्र दास और श्रमिक ननी गोपाल दास की कड़ी मेहनत से उनके हाथों से बनाए गए सैकड़ों रंग-बिरंगी पतंगें क्षेत्र के बच्चे अपने हाथों से उड़ाएंगे. युवाओं में बहुत उत्साह है। पतंग महोत्सव का कार्यक्रम सोनबिल के सांस्कृति क कार्यकर्ताओं द्वारा किया जा रहा है, असम श्रीभूमि जिले के रामकृष्णनगर विधानसभा क्षेत्र के सोनबिल में तैयारियाँ जोर-शोर से चल रही हैं। क्षेत्र के लोगों ने कहा है कि हाल ही में, यह देखा गया है कि बच्चे और युवा मोबाइल फोन में व्यस्त रहते हैं और शारीरिक व्यायाम करते नहीं देखा जा रहा है। यह उनके शारीरिक व्यायाम, प्रतिभा और विकास और कई मामलों में अच्छे स्वास्थ्य में बाधा डाल रहा है। सोनबिल के सांस्कृतिक कार्यकर्ता हर साल क्षेत्र के विभिन्न हिस्सों में पतंग महोत्सव का आयोजन करते हैं, पिछले वर्ष उनके प्रबंधन के तहत, सैकड़ों रंग-बिरंगी पतंगें सोनबिल महोत्सव में नीले आसमान में उड़ती हुई देखी गईं। पहले, सोनबिल के कल्याणपुर गांव में पंच हाल टीला में कई बार पतंग महोत्सव होता था। इस वर्ष, सोनबिल के सांस्कृतिक कार्यकर्ताओं ने आनंदपुर चौदह मादल मेला मैदान में पतंग महोत्सव का आयोजन किया है, सांस्कृतिक सदस्यों बिश्यज्योति भट्टाचार्य, कंदर्प मालाकार, उज्जल दास, राहुल दास और अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने कहा पारंपरिक सोनबिल आनंदपुर चौदह मादल मेला मैदान में पतंग महोत्सव के उत्साह की कोई सीमा नहीं है। सोनबिल का नीला आसमान फिर से रंगीन और रंग-बिरंगी पतंगों से भर जाएगा। हर साल, सोनबिल के सांस्कृतिक कार्यकर्ताओं की इस असाधारण पहल से घाटी में विभिन्न हिस्सों से सांस्कृतिक व्यक्तित्व आते हैं और उनकी निस्वार्थ और प्रशंसनीय पहल का स्वागत करते हैं, इस पतंग महोत्सव के दौरान, सभी रंग-बिरंगी पतंगों को आसमान में उड़ते हुए देखकर आनंद लेते हैं और इस बार भी, वे इस कार्यक्रम को और अधिक सुंदर बनाने की योजना बनाने में व्यस्त हैं।

ब्लाक स्तरीय हमारा आंगन हमारे बच्चे उत्सव कार्यक्रम आयोजित

स्वतंत्र प्रभात

महराजगंज। नौतनवा ब्लाक के रतनपुर सभागार कक्ष में शनिवार को बीईओ हेमन्त कुमार मिश्र के नेतृत्व में ब्लाक स्तरीय हमारा आंगन हमारे बच्चे उत्सव कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि बीडीओ अमित कुमार मिश्र ने द्वीप प्रज्वलित कर व मां सरस्वती की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। बीईओ ने मुख्य अतिथि बीडीओ को मोमेन्टो देकर सम्मानित किया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं निपुण भारत मिशन के अंतर्गत स्कूल रेडिनस कार्यक्रम का सफल क्रियान्वयन करने वाले नोडल शिक्षकों और बेहतर कार्य करने वाली आंगनबाडी कार्यकत्रियों व उनके नोडल बच्चों की एक दिवसीय कार्यशाला हमारा आंगन हमारे बच्चे उत्सव का आयोजन किया गया। ब्लाक स्तर पर कुल 9 न्याय पंचायत से 45 बच्चों को बीईओ के द्वारा पुरस्कृत किया गया। इस दौरान एआरपी विनय सिंह, मिथिलेश पाण्डेय, संयुक्ता सिंह, संदीप वर्मा, संचालक कमलानन शुक्ल, शिक्षक राकेश तिवारी, शशांक शेखर तिवारी, हरी त्रिपाठी, कृष्णपाल चौधरी, महेन्द्र यादव, आंगनबाडी सुपरवाईजर अर्चना शर्मा, कुसुमकांती त्रिपाठी, गुणवत्ता समन्वयक संतोष कुमार, परिचारक नरिंद्र चौधरी, अलोक कुमार सहित सैकडों शिक्षक व आंगनबाडी कार्यकत्री मौजूद रहीं।

नुक्कड नाटक के मध्यम से दहेज प्रथा को लेकर किया गया जागरूक

स्वतंत्र प्रभात

पिहानी हरदोई। राजकीय महाविद्यालय द्वारा संचालित राष्ट्रीय सेवा योजना द्वारा गोद लिए गए गांव संतरहा में कार्यक्रम अधिकारी डॉ लक्ष्मी नारायण के निर्देशन में चल रहे राष्ट्रीय सेवा योजना के दिन रात्रि के विशेष शिविर के छठे दिन दिनांक 01/03/2025 में आज प्रातः 6.00 बजे पुनः योग एवं ध्यान सत्र का आयोजन हुआ जिसमें स्वयंसेवकों को अनुराग आर्य द्वारा योगाभ्यास और ध्यान करने का अभ्यास कराया गया। इस अवसर पर स्वयंसेवकों ने विभिन्न प्रकार के योगासन तथा साधना के तरीके सीखे । तत्पश्चात स्वयं सेवकों ने दहेज प्रथा और उसके दुष्प्रभाव के बारे में ग्रामीण लोगों को जागरूक करने के लिए एक नुक्कड़ नाटक खेला और दहेज के विरोध में नारे लगाए उसकी उपयोगिता के लिए लोगों को जागरूक किया । जिस के लिए हजारों की संख्या में ग्रामीण लोगों ने दहेज न लेने और न देने की शपथ ली उसके बाद सभी स्वयंसेवक वापस सामुदायिक भवन पर उपस्थित होकर भोजन किए शिविर के द्वितीय सत्र मेंमुख्य वक्ता डॉ कौशलेंद्र विक्रम सिंह ने युवाओं में स्मार्टफोन एडिक्शन की समस्या विषयक व्याख्यान दिया। उन्होंने बताया कि स्मार्टफोन हमारा एक मित्र है लेकीन उसका ज्यादा इस्तमाल हमें स्मार्टफोन एडिक्शन की ओर ले जाता है, जो हमारी सेहत के लिए हानिकारक हो सकता है। कुछ लोगों को इसकी लत लग जाती है, जिसका असर मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ता है। स्मार्टफोन के ज्यादा इस्तेमाल से कई व्यावहारिक और मनोवैज्ञानिक समस्याएं हो सकती हैं। इसके लक्षणों को पहचानना और इस लत पर काबू पाना बेहद जरूरी है। बच्चे, युवा और बुजुर्ग कोई भी इसके शिकार हो सकते है द्य

स्मार्टफोन एडिक्शन से लोग अपने व्यवहार पर से नियंत्रण खो बैठते हैं और सहनशीलता की भावना भी खो देते हैं। सरल शब्दों में कहें तो इससे हिंसा की प्रवृत्ति को बढ़ जाती है। मानसिक समस्याओं की बात करें तो फोन के ज्यादा इस्तेमाल से चिंता, अवसाद, अनिद्रा, रिश्तों में तनाव, पढ़ाई में व्यवधान और काम पर प्रदर्शन में कमी आ सकती है। स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी की स्टडी के मुताबिक इस वक्त दुनिया में 44 फीसदी लोग सोशल मीडिया एडिक्शन के शिकार हैं. सोशल मीडिया की बढ़ती लत का सीधा रिश्ता वास्तविक जिंदगी में बढ़ रहे अकेलेपन और आइसोलेशन से है. इंसानों के बीच रिअल कनेक्ट नहीं है और सोशल मीडिया कनेक्शन का एक भ्रम पैदा कर रहा है।